कोटा खुला विश्वविद्यालय
कोटा (राजस्थान)

LS-1A

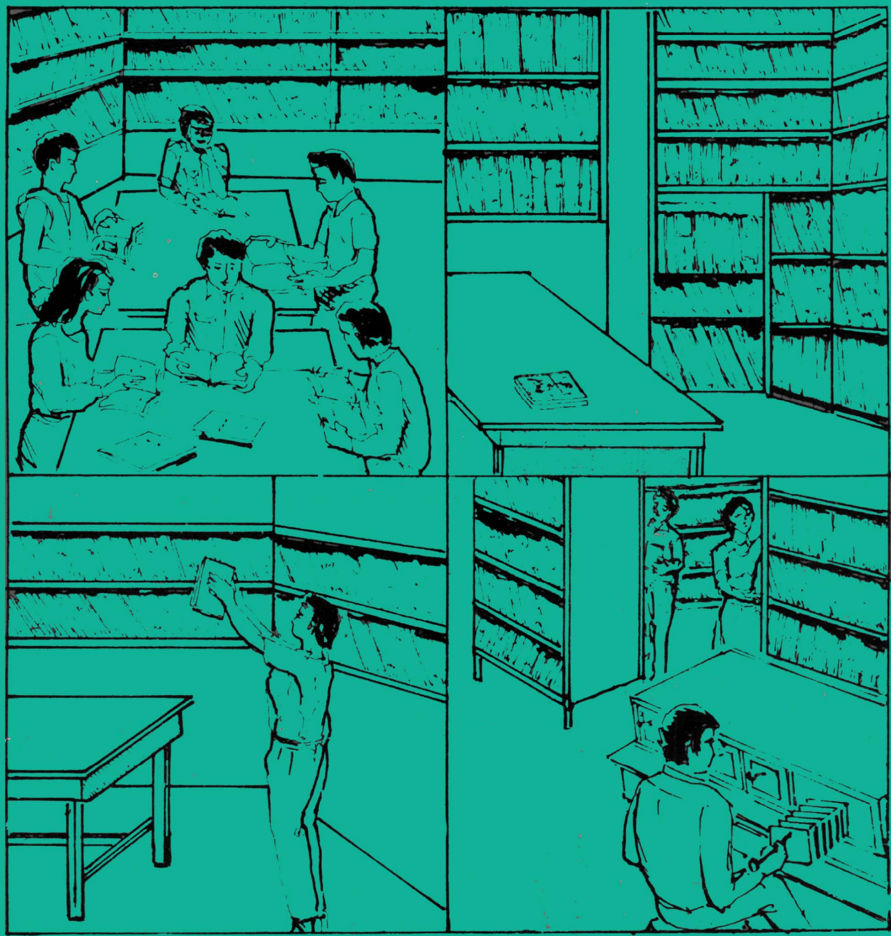

पुस्तकालय वर्गीकरण–सिद्धान्त

LS - 1A

कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा राजस्थान

इकाई 1. वर्गीकरण, अर्थ, आवश्यकता, उद्देश्य एवं कार्य	5
इकाई 2. अंकन; अर्थ, आवश्यकता, उद्देश्य, प्रकार, कार्य तथा अच्छे अंकन के गुण	17
इकाई 3.(a) द्विबिन्दु वर्गीकरण (संस्करण 6 पुनर्मुद्रित 1963) की प्रमुख विशेषतायें	30
इकाई 3.(b) दशमलव वर्गीकरण(संस्करण 19) की प्रमुख विशेषतायें	53
इकाई 4 सहायक अनुक्रम ; आवश्यकता, उद्देश्य एवं सिद्धान्त	73
इकाई 5 पाँच मूलभूत श्रेणियाँ - सामान्य परिचय	85
इकाई 6 द्विबिन्दु एवं दशमलव वर्गीकरण मे प्रयुक्त विधियाँ : विषय विधि, कालक्रम विधि, भौगोलिक विधि, वर्णक्रम विधि	97
इकाई 7 प्रयोगिक वर्गीकरण के सोपान	109

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

प्रो. बी. एस. शर्मा (अध्यक्ष)
कुलपति
कोटा खुला विश्वविद्यालय कोटा

श्री वी.बी. नन्दा , विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	डॉ. सी.डी. शर्मा, निदेशक राजस्थान विश्वविद्यालय पुस्तकालय, जयपुर
प्रो. एस.एस. अग्रवाल, विभागाध्यक्ष पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन	श्री सी.एल. शर्मा, संयोजक पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान पाठ्यक्रम कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ्यक्रम निर्माण दल

श्री सी.एल. शर्मा पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान पाठ्यक्रम कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा	श्री जी.एस. चंपावत, एसिस्टेंट प्रोफेसर पुस्तकालय विज्ञान एवं प्रलेखन विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
श्री एस.एम.एस. भार्गव, उप-पुस्तकालयाध्यक्ष सुखड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर	

सम्पादक

डॉ. पाण्डे एस.के. शर्मा, विभागाध्यक्ष
पुस्तकालय विज्ञान विभाग
आगरा विश्वविद्यालय, आगरा

सामग्री निर्माण

डॉ. अनाम जैतली
निदेशक
पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण निदेशालय
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सर्वाधिकार सुरक्षितः
इस सामाग्री के किसी भी अंश की कोटा खुला विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में "मिमियोग्राफी" (चक्रमुद्रण) के द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

कोर्स - 1 A : पुस्तकालय वर्गीकरण - सिद्धान्त

इकाई - 1

“वर्गीकरण - अर्थ, परिभाषा, आवश्यकता एवं कार्य”

(Classification: Meaning, need and functions)

उद्देश्य :

1. वर्गीकरण के अर्थ व उसकी परिभाषा से परिचित होना ।
2. पुस्तकालय वर्गीकरण की आवश्यकता के बारे में जानना ।
3. पुस्तकालय वर्गीकरण के कार्यो से परिचित होना ।

संरचना / विषय वस्तु

1. विषय प्रवेश
2. अर्थ
   2.1 परिभाषा
   2.2 विकास
3. आवश्यकता व उद्देश्य
4. कार्य
5. सारांश
6. प्रश्न
7. विस्तृत अध्ययन के लिये ग्रंथ सूची

1. विषय-प्रवेश

आधुनिक काल में, अध्ययन सामग्री का संग्रह करना तथा समाज के हित में उसके उपयोग को अधिक से अधिक बढ़ाना ही पुस्तकालय का मुख्य उद्देश्य माना जाता है । इसके लिये पुस्तकालय अनेक प्रक्रियायें अपनाते हैं । वर्गीकरण भी एक ऐसी प्रक्रिया है जो अध्ययन सामग्री के उपयोग को सरल व प्रभावकारी बनाती है । अत : वर्गीकरण के महत्व तथा उससे सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी देने के लिये प्रस्तुत पाठ की रचना की गई है । आप इस पाठ में वर्गीकरण से सम्बन्धित विभिन्न प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करेंगे; जैसे, वर्गीकरण की उत्पत्ति किस प्रकार से हुई? वर्गीकरण का वास्तविक अर्थ व स्वरूप क्या हैं? प्राकृतिक व कृत्रिम विशेषता में क्या अन्तर है? सामान्य वर्गीकरण तथा पुस्तकालय वर्गीकरण में क्या अन्तर है ?, इत्यादि ।

2. अर्थ

'वर्गीकरण' शब्द अंग्रेजी के classification शब्द का हिन्दी अनुवाद है । Classification शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा शब्द Classis से हुई । इसका अर्थ है वस्तुओं या व्यक्तियों का वर्ग । इस शब्द का प्रयोग सबसे पहले प्राचीन रोम राज्य में किया गया था । उस समय सम्पत्ति महत्व या वंश

की दृष्टि से समाज को मोटे तौर पर छः श्रेणियों या वर्गों (class) में विभाजित किया जाता था । इन श्रेणियों व वर्गों के भेद को स्पष्ट करने के लिये ही इस शब्द का प्रयोग किया जाता था । समान्यतः वर्ग (class) शब्द का अर्थ वस्तुओं या पदार्थों के ऐसे समूह से है, जो समान विशेषताओं या गुणों के आधार पर परस्पर मिलते-जुलते प्रतीत होते हैं, अर्थात् वे गुण वर्ग के प्रत्येक सदस्य में विद्यमान होते हैं । वर्गीकरण शब्द का अर्थ समझने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना आव श्यक है :

(i) अनेक वस्तुओं या पदार्थों को समान गुणों के आधार पर विभिन्न वर्गों में विभाजित करने की प्रक्रिया को वर्गीकरण कहते हैं । इस प्रक्रिया में समान वस्तुओं को एक साथ एकत्र कर दिया जाता है तथा असमान वस्तुओं को उनसे अलग कर दिया जाता है । अनेक वस्तुओं को किसी एक वर्ग में रखते समय सर्वप्रथम हम उनकी पहचान करते हैं । यह पहचान हम उनमें अन्तर्निहित गुणों के सादृश्य के आधार पर करते हैं । वस्तुओं के सादृश्य की जानकारी उनकी विशेषताओं से प्राप्त होती है । एक जैसी या समान विशेषताओं वाली वस्तुओं को एक वर्ग में सम्मिलित कर लिया जाता है तथा असमान वस्तुओं को अलग कर दिया जाता है ।

(ii) वर्गीकरण से हमारा अभिप्राय केवल समान वस्तुओं को एक वर्ग में रखना, अर्थात् केवल वर्ग बनाना, तथा असमान वस्तुओं को अलग करना मात्र ही नहीं है । इसका उद्देश्य समान वस्तुओं के विभिन्न वर्गों को किसी निश्चित क्रम में रखना भी है । अर्थात् वर्गीकरण में सभी वर्गों को क्रमशः प्रथम स्थान, दूसरे स्थान व तीसरे स्थान पर रखने की प्रक्रिया भी अपनाई जाती है । विभिन्न वर्गों में क्रम-निर्धारण किसी उद्देश्य, अभिरुचि, सिद्धान्तों तथा नियमों के अन्तर्गत किया जाता है । उदाहरणार्थ, मान लीजिये किसी कक्षा के छात्रों को उनके कद के अनुसार विभिन्न वर्गों में विभाजित करना है। उनका कद 50 से 65 इंच कद वालों का, दूसरा वर्ग 51 इंच कद वालों का, तीसरा वर्ग 52 इंच कद वालों का - इस प्रकार 50 से 65 इंच कद वलि छात्रों के 16 वर्ग बन सकते हैं । वर्गीकरण की प्रक्रिया में इन वर्गों को किसी क्रम में भी रखना आवशयक है । इन्हें उद्देश्य या अभिरुचि के अनुसार या तो कद के बढ़ते हुए क्रम में रखा जा सकता है । या कद के घटते हुये क्रम में । इस प्रकार कोई भी तरीका, नियम या सिद्धान्त अपना कर ही इन्हें क्रमबद्ध करना आवशयक है ।

(iii) जैसा कि सेयर्स (डबल्यू .सी बी.) ने लिखा है “वर्गीकरण एक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम वस्तुओं की समानता व भिन्नता की पहचान करते हैं, उनके सम्बन्धों का पता लगाते हैं, तथा उन सम्बन्धों के आधार पर उनके वर्ग बनाते हैं ” अर्थात्, वर्गीकरण करते समय हम विभिन्न वस्तुओं को उनकी समानता की मात्रा के अनुसार व्यवस्थित करते हैं तथा उनकी भिन्नता की मात्रा के अनुसार ही उनको अलग करते हैं । समानता से हमारा अभिप्राय उस गुण व लक्षण से है जो वस्तुओं में निहित होता तथा उन्हें एक साथ जोड़ता है ।

इस प्रकार समानता वर्गीकरण को निर्धारित करती है । इस समानता को हम वर्गीकरण के क्षेत्र में विशेषता के नाम से जानते हैं । किन्तु यहाँ यह भी जानना आवश्यक है कि जब हम यह कहते हैं कि वस्तुओं में समानता है, तो इसका अभिप्राय यह भी नहीं है कि वे हर प्रकार से समान हैं । दो या अधिक वस्तुओं में पूर्ण समानता या समरूपता नहीं पाई जाती है । वर्ग केवल ऐसी वस्तुओं

का समूह होता है जो कुछ अंश तक समान हैं या जो कुछ सामान्य गुणों से युक्त हैं, जैसे,' रीढ़ की हड्डी वाले पशुओं में रीढ़ की हड्डी का होना सामान्य विशेषता है ।

(iv) वस्तुओं में दो प्रकार की विशेषतायें हो सकती है- (1) प्राकृतिक तथा (2) कृत्रिम। प्राकृतिक विशेषता उस लक्षण को कहते हैं जो वस्तुओं की बनावट व क्रिया में निहित है । कृत्रिम विशेषता बाहरी लक्षणों पर आधारित होती है ।प्राकृतिक विशेषता एक जन्म-जात गुण को व्यक्त करती है । मन माने ढंग पर चयन की गई विशेषता या उपलक्षण को जो उनके जन्मजात गुण से सीधा सम्बन्ध नहीं रखती है, कृत्रिम विशेषता कहते हैं । यदि वस्त्रों के बण्डलों का विभाजन उनके निर्माण मे प्रयोग में लाये गये पदार्थों के आधार पर जैसे, रेशमी, सूती व ऊनी कपड़ा किया जाता है तो यह वर्गीकरण प्राकृतिक विशेषता के आधार पर किया गया है । यदि इन्हीं बण्डलों का रंग, आकार अथवा बारीकी के आधार पर वर्गीकरण किया जाता है तो यह कृत्रिम विशेषता के आधार पर किया गया है ।

(v) वर्गीकरण के लिये जिस विशेषता का प्रयोग किया जाये वह वर्गीकरण के उद्देश्य की पूर्ति के अनुरूप होनी चाहिये। उदाहरणस्वरूप यदि पुस्तकों का वर्गीकरण करने का उद्देश्य उन्हें सजावट के लिए रखना है तो उन्हें उनके आकार या रंग के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है । इसी प्रकार यदि वर्गीकरण का उद्देश्य उन पुस्तकों को जिल्दसाजी के लिए भेजना है तो उन्हें चमड़े की जिल्द, कपड़े की जिल्द आदि के द्वार वर्गीकृत किया जा सकता है । परन्तु यदि वर्गीकरण करने का उद्देश्य उन्हें उपयोग के पुस्तकालय में रखना हो तो उन्हें उनकी विषय वस्तु के अनुसार व्यवस्थित या वर्गीकृत किया जाता है । इसके साथ ही विशेषताओं का प्रयोग सुसंगत ढंग से होना चाहिये । अर्थात् एक बार में एक ही विशेषता का प्रयोग होना चाहिये । किसी एक विशेषता के अनुसार वर्गों का निर्माण समाप्त करने के बाद ही किसी दूसरी विशेषता के अनुसार वर्गों का निर्माण करना चाहिये । अर्थात् किसी एक विशेषता का प्रयोग करने के बाद जो वर्ग बनते हैं उनका उप - विभाजन किसी अन्य विशेषता के आधार पर किया जा सकता है । जैसे, सर्वप्रथम हम वस्त्रों के, उनमें प्रयोग लाये गये पदार्थ की विशेषता के आधार पर, वर्ग बना सकते हैं - सूती कपड़ा, रेशमी कपड़ा । इसके बाद प्रत्येक वर्ग को रंग की विशेषता के आधार पर पुन: विभाजित किया जा सकता है - हरा सूती कपड़ा, लाल सूती कपड़ा आदि ।

(vi) वर्गीकरण की प्रक्रिया में अधिक विस्तार (greater extension) तथा कम गहनता (Lesser intension) वाले वर्ग से प्रारम्भ कर हम अधिक गहनता (greater intension) तथा कम विस्तार (lesser extension) वाले उप वर्गों की ओर बढ़ते हैं । अत : वर्गीकरण का तात्पर्य केवल विभाजन ही नहीं बल्कि उपविभाजन भी है । उपविभाजन का अर्थ है. एक बड़े वर्ग को आवश्यकता अनुसार उपवर्गों में बाँटना । इस प्रक्रिया में वर्गों की एक ऐसी शृंखला (chain) बनती है जिसमें ऊपर वाला वर्ग अपने नीचे वाले वर्ग से विस्तार अधिक तथा अर्थ की गहनता में कम होता है, अथवा नीचे वाला वर्ग अपने ऊपर वाले वर्ग से विस्तार में कम तथा गहनता में अधिक होता है । इसकी चित्रात्मक प्रस्तुति नीचे दी गई है ।

2.1 परिभाषा

वर्गीकरण शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जा सकता है - (1) सामान्य वर्गीकरण के अर्थ में, तथा (2) पुस्तकालय वर्गीकरण के अर्थ में ।

सामान्य वर्गीकरण में हम विचारों व वस्तुओं को केवल किसी सुव्यवस्थित क्रम में क्रमबद्ध करते हैं । सामान्य वर्गीकरण की परिभाषायें विभिन्न विद्वानों ने निम्न प्रकार से प्रस्तुत की हैं : डब्ल्यू. सी. बी. सेयर्स के अनुसार " वर्गीकरण वस्तुओं को उनकी विशेषताओं के आधार पर पहचानने, उनके वर्ग बनाने तथा इन वर्गों को किसी क्रम में व्यवस्थित करने की मानसिक प्रक्रिया है।" मारगरेट मान के अनुसार " समान वस्तुओं को एक साथ रखना, अर्थात् वस्तुओं को उनकी समानता व भिन्नता के अनुसार व्यवस्थित करना ही वर्गीकरण है । ए. ब्रोडफील्ड के अनुसार किसी सिद्धान्त या अवधारणा या उद्देश्य या अभिरुचि या इनके किसी संयोजन के अनुसार किसी क्रम में व्यवस्थित वर्गों की व्यवस्था या श्रेणी को वर्गीकरण कहते हैं ।"

पुस्तकालय वर्गीकरण का सम्बन्ध पुस्तकों व प्रलेखों से होता है । तथा उनको अत्यधिक सहायक व स्थायी क्रम में व्यवस्थित करना ही इसका उद्देश्य है ।

पुस्तकालय वर्गीकरण की कुछ प्रचलित परिभाषायें निम्नलिखित है :

(i) "पुस्तकों का वर्गीकरण वस्तुत : ज्ञान का वर्गीकरण है जिसमें पुस्तकों के भौतिक स्वरूप के आधार पर आवश्यक समायोजन कर दिया जाता है । "

- मारगरेट मान

(ii) "पुस्तक के विशिष्ट विषय के नाम को क्रम सूचक अंकों की अधिमान्य कृत्रिम भाषा में अनुवाद करना, तथा उसी विशिष्ट विषय से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों को एक अन्य क्रम सूचक अंकों के समूह के द्वारा जो पुस्तक की विषय वस्तु के अलावा पुस्तक की अन्य विशेषताओं को प्रस्तुत करते हैं विशिष्टता प्रदान करना पुस्तकालय वर्गीकरण कहलाता है ।"

- एस.आर. रंगनाथन

(iii) " The systematic arrangement by subject of books and other material on shelves or of catalogue and index entries in the manner which is most useful to those who read or who seek a definite piece of information.

- W.C.B. Sayers

"निधानियों पर पुस्तकों एवं अन्य (अध्ययन) सामग्री को अथवा सूची एवं अनुक्रमणिका की प्रविष्टियों को विषय के अनुसार ऐसे ढंग से, जो अध्ययन करने वालों अथवा किसी निश्चित ज्ञान का पता लगाने वालों के लिये अत्यधिक उपयोगी हो, वर्गीकृत क्रम में व्यवस्थित करना (पुस्तकालय वर्गीकरण) कहलाता है ।

- डब्ल्यू सी. बी. सेयर्स

इन परिभाषाओं के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि पुस्तकालय वर्गीकरण में हम पहले पुस्तकों में निहित विषयवस्तु का वर्गीकरण करते हैं । इसके बाद एक ही विषयवस्तु वाली अनेक पुस्तकों को वैयक्तिकता प्रदान करने के लिये उनकी अन्य विशेषताओं, जैसे प्रकाशन वर्ष, विवरण की भाषा विवरण का स्वरूप आदि के आधार पर एक अन्य क्रमसूचक संख्या प्रदान करते हैं । तदनुसार पुस्तक के विषय का प्रतिनिधित्व करने वाले क्रम सूचक अंकों का वर्गांक (Class Number) तथा पुस्तकों की वैयक्तिकता प्रदान करने वाले क्रमसूचक अंको ग्रंथांक (Book Number) कहते हैं । वर्गांक तथा ग्रंथांक को मिलाने से आवह्वानांक (Call Number) बनता है । इसे अवह्वानांक इस लिये कहा जाता है क्योंकि इसकी सहायता से पुस्तकों को फलकों पर से बुलाया या प्राप्त किया जाता है । जैसे, X72, (वर्गांक), 152 N72 (ग्रंथांक) तथा दोनों को मिलाकर 'अवह्वानांक' ।

2.2 विकास

पुस्तकालय वर्गीकरण की उत्पत्ति उस समय से हुई जबकि मनुष्य ने पुस्तकों का संग्रह करना प्रारम्भ किया । प्रत्येक पुस्तक संग्रह करने वाला पुस्तकों को किसी सुव्यवस्थित क्रम में रखता था । वह अपनी रुचि व सुविधा के अनुसार उनको व्यवस्थित करता था तथा उनका उपयोग करता था । किन्तु पुस्तकालय वर्गीकरण का वास्तविक प्रादुर्भाव पुस्तकालयों की स्थापना के साथ ही हुआ है । प्रत्येक पाठक समय नष्ट किये बिना अपनी पुस्तक प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त करने लगा । प्रारंभ में तो पुस्तकों की संख्या अधिक नहीं थी इसलिये उन्हें किसी भी क्रम में रख दिया जाता था और पुस्तक आसानी से मिल जाती थी । किन्तु मुद्रण के आविष्कार के बाद पुस्तकों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हो गई तथा पाठक अपने अभीष्ट विषय से संबंधित सभी पुस्तकों को एक स्थान पर व्यवस्थित क्रम में चाहने लगे । इस प्रकार पुस्तकालयों में विषयानुसार वर्गीकरण को महत्व दिया जाने लगा ।

प्रारंभ में तो परम्परा के अनुसार वर्गीकरण की आवश्यकता का अनुभव ग्रंथालयों में फलकों पर पुस्तकों की क्रमबद्ध व्यवस्था कायम रखने के लिये तथा फलकों (Shelves) पर उनके निश्चित स्थान का पता लगाने के लिये किया गया था । इस व्यवस्था में पुस्तकों को विषयों के लगभग पारस्परिक संबंधों के आधार पर व्यवस्थित कर दिया जाता था । उस समय वर्गीकरण की सूचना - पुन : प्राप्ति के साधन के रूप में प्रयोग में लाये जाने पर बल नहीं दिया जाता था । इसे केवल एक प्रशासनिक उपकरण के रूप में माना जाता था । किन्तु आधुनिक काल में पुस्तकालय वर्गीकरण को केवल पुस्तकों को क्रमबद्ध करने की यांत्रिक व्यवस्था ही नहीं 'माना जाता, अपितु उसे सूचना - पुन : प्राप्ति व प्रलेखन के क्षेत्र का एक आधारभूत अंग माना जाता है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(क) आंग्ल भाषा के शब्द CLASSIFICATION की उत्पत्ति -

1. ग्रीक भाषा के शब्द CLASSIC से हुई है,
2. लैटिन भाषा के शब्द CLASSIS से हुई है,
3. यह आंग्ल भाषा का मूल शब्द है ।

(ख) वर्गीकरण का अर्थ -

1. केवल वस्तुओं के वर्ग बनाना है
2. वस्तुओं के वर्ग बनाना तथा उनकों निश्चित क्रम में रखना है ।

(ग) निम्नलिखित वर्ग प्राकृतिक विशेषतायें व्यक्त करते हैं- ।

1. लकड़ी की मेजें
2. स्टील की मेजें
3. काली मेजें ।

(घ) वर्गीकरण समान वस्तुओं को एक साथ रखता है ।

(ङ) वर्गीकरण असमान वस्तुओं को एक साथ रखता है ।

(च) पुस्तकालय वर्गीकरण में-

1. गणना सूचक अंकों का प्रयोग होता है
2. क्रम सूचक अंकों का प्रयोग होता है ।

(छ) पुस्तकालय वर्गीकरण का संबंध-

1. केवल विचारों के वर्गीकरण से है
2. केवल पुस्तकों में निहित विचारों के वर्गीकरण से है ।

(ज) वस्तुओं की समानता वर्गीकरण को निर्धारित करती है ।

(झ) वस्तुओं की असमानता वर्गीकरण को निर्धारित करती है ।

(ञ) वर्गीकरण करते समय-

1. एक बार में केवल एक विशेषता का प्रयोग होना चाहिये
2. एक बार में एक से अधिक विशेषता का प्रयोग होना चाहिये ।

(ट) वर्गीकरण -

1. केवल एक प्रशासनिक उपकरण है
2. सूचना-पुन: प्राप्ति का साधन है ।

(ठ) वर्गांक -

1. पुस्तक की विषय वस्तु को व्यक्त करता है
2. पुस्तक की भौतिक विशेषताओं को व्यक्त करता है ।

(ड) ग्रंथांक-

1. पुस्तक की विषय वस्तु को व्यक्त करता है
2. पुस्तक की भाषा. प्रकाशन वर्ष आदि को व्यक्त करता है ।

(ढ) पाठक अपनी अध्ययन सामग्री की खोज-

1. अध्ययन सामग्री के आकार से करता है
2. अध्ययन सामग्री के रंग से करता है
3. अध्ययन सामग्री के प्रकाशक से करता है
4. अध्ययन सामग्री के विषय से करता है ।

3. आवश्यकता व उद्देश्य

ग्रंथालय का प्रमुख कार्य पाठकों की रुचि तथा आवश्यकता के अनुरूप अध्ययन सामग्री का संग्रह करना और उसको सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करना है, तथा आवश्यकता पड़ने पर उसको तुरन्त पाठकों को उपलब्ध कराना है । अत : पुस्तकालय वर्गीकरण पुस्तकों व प्रलेखों को व्यवस्थित क्रम में रखने के लिये नितान्त आवश्यक है ताकि पाठक अपनी अध्ययन सामग्री तुरन्त प्राप्त कर सकें ।

डॉ .एस.आर. रंगनाथन के अनुसार निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिये भी पुस्तकालय में वर्गीकरण आवश्यक है:

(क) पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तक की पाठक द्वारा मांग की जाने पर उसका स्थान तुरन्त निर्धारित किया जा सके

(ख) जब पुस्तक पुस्तकालय को वापस लौटाई जाये तो, उसको निधानियों पर उसके निर्धारित स्थान पर तुरन्त पुन: व्यवस्थित किया जा सके ।

(ग) जब कोई नवीन पुस्तक पुस्तकालय में प्राप्त हो तो, उसे उसी विषय की अन्य पुस्तकों के बीच उचित स्थान प्राप्त हो सकें ।

(घ) जब किसी नवीन विषय पर कोई पुस्तक पहली बार पुस्तकालय में प्राप्त हो तो उस निधानियों पर विद्यमान उससे संबंधित अन्य विषयों के साथ उन विषयों से उसके संबंधों की मात्रा के अनुसार स्थान मिला सकें ।

इस प्रकार निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए वर्गीकरण अत्यन्त आवश्यक है : (1) पुस्तकों को सहायक अनुक्रम में रखने की प्रक्रिया को यन्त्रवत् बनाने के लिये (2) उपयोग के बाद लौटाई गई पुस्तकों को ठीक स्थान पर वापस रखने के कार्य को यन्त्रवत् बनाने में सहायता प्रदान करने के लिए एवं (3) पुस्तकालय में नवीन पुस्तक आने पर अन्य पुस्तकों के साथ उसका अत्यन्त सहायक स्थान निश्चित करने के लिये वर्गीकरण बहु त आवश्यक है ।

इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय विज्ञान के प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ सूत्र की मागं को पूरा करने के लिये पुस्तकालय वर्गीकरण आवश्यक है । अर्थात्, यदि पुस्तकालय में पुस्तकें वर्गीकृत व्यवस्था में क्रमबद्ध होगी तो उनका. अधिक से अधिक उपयोग बढ़ेगा और प्रथम सत्र का लक्ष्य पूरा होगा । पुस्तकें वर्गीकृत क्रम में व्यवस्थित होंगी तो प्रत्येक पाठक को अपने अभीष्ट विषय की पुस्तकें सह संबंधित क्रम में एक साथ प्राप्त हो जायेंगी और द्वितीय सूत्र का लक्ष्य पुरा हो जायेगा। तथा यदि पुस्तकें विभिन्न विषयों के पारस्परिक संबंधों के अनुसार व्यवस्थित होगी तो पाठक के समक्ष सभी सह संबंधित विषय एक साथ प्रस्तुत हो जायेंगे और इस प्रकार तृतीय सूत्र की मांग के अनुसार प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिलने की संभावनायें बढ़ जायेगी । इसके साथ ही यदि पुस्तक संग्रह वर्गीकृत क्रम में व्यवस्थित है और उपयुक्त मार्गदर्शक उपकरणो की व्यवस्था है तो पाठक एवं पुस्तकालय कर्मचारी अपना समय व्यर्थ बरबाद किये बिना ही अभीष्ट पुस्तक प्राप्त कर लेगा और इस प्रकार चतुर्थ सूत्र की मांग पूरी हो जायेगी ।

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिये भी पुस्तकालयों में वर्गीकरण की आवश्यकता है.

(क) अध्ययन सामग्री को पाठकों व पुस्तकालय कर्मचारियों के लिये अत्यधिक सुविधाजनक क्रम में व्यवस्थित करने के लिये

(ख) प्रभावकारी संदर्भ सेवा प्रदान करने के लिये;

(ग) पुस्तकों में निहित सूचना के स्थान का पता लगाने में अधिकतम सहायता पहुंचाने के लिये

(घ) अव्यवस्था में व्यवस्था प्रदान करने के लिये तथा किसी विषय पर उपलब्ध पुस्तकों का व्यापक दृश्य पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने के लिये;

(ङ) बहु- आयामी (अनेक दिशाओं में फैले हुये) ज्ञान को एक सीधी पंक्ति में पुस्तकों के माध्यम से प्रस्तुत करने के लिये।

इ.सी. रिचर्डसन के मतानुसार " पुस्तकों का संग्रह उपयोगार्थ किया जाता है और उपयोगार्थ ही उनकी व्यवस्था की जाती है, तथा पुस्तकालय वर्गीकरण का उद्देश्य भी इस उपयोग को गतिशील बनाना है । "

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(क) वर्गीकरण पुस्तकों को-

1. सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करता है ।
2. असहायक-क्रम में व्यवस्थित करता है ।

(ख) वर्गीकरण का उद्देश्य पुस्तकों के उपयोग को-

1. गतिशील बनाना है ।
2. स्थिर बनाना है ।

(ग) वर्गीकरण पाठकों के समय का-

1. अपव्यय करता है ।
2. अपव्यय नहीं करता है ।

(घ) वर्गीकरण का उपयोग-

1. केवल पाठक करते हैं ।
2. केवल पुस्तकालय कर्मचारी करते हैं ।
3. पाठक व पुस्तकालय कर्मचारी करते हैं ।

(ङ) वर्गीकरण-

1. एक लेखक से संबंधित सभी पुस्तकों को एक साथ रखता है।
2. एक आकार की पुस्तकों को एक साथ रखता है।
3. एक रंग की पुस्तकों को एक साथ रखता है।
4. एक प्रकाशक की सभी पुस्तकों को एक साथ रखता है।
5. एक विषय की पुस्तकों को एक साथ रखता है।

4. कार्य

सामान्य रूप से पुस्तकालयों में वर्गीकरण के निम्नलिखित कार्य हैं

(क) अध्ययन सामग्री को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करना - अर्थात् वर्गीकरण निधानियों पर पुस्तकों को इस प्रकार से व्यवस्थित करता है की पाठक के विषय से प्रत्यक्ष रूप संबंधित तथा उस विषय से संबंधित सभी पुस्तक के एक साथ सहायक अनुक्रम में प्राप्त हो जाती हैं तथा वह अनुक्रम ही उसे अपने अभीष्ट विषय तक पहुंचाने में सहायक होता है।

(ख) पुस्तक संग्रह में विभिन्न वर्गों की सबलता (अर्थात् उस वर्ग के ऊपर पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की संख्या) तथा निर्बलता या कमी को स्पष्टतया दर्शाना । वर्गीकृत व्यवस्था में पुस्तकालयाध्यक्ष को यह आसानी से पता लग जाता है कि किस विषय या वर्ग की पुस्तकें पुस्तकालय मे पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हैं तथा किस विषय या वर्ग की पुस्तकों की संख्या अपर्याप्त है । इस स्थिति का ज्ञान होने पर पुस्तकालयाध्यक्ष को सभी विषयों की पुस्तकों का संतुलित प्रतिनिधि संकलन करने में सहायता मिलती है । अर्थात् इससे पुस्तकालयाध्यक्ष को अपने पुस्तक संग्रह के लिये योजनाबद्ध तरीके से पुस्तक चयन करने में सहायता मिलती है । इनके साथ ही वर्गीकरण उसे अपने पुस्तक -संग्रह से ऐसी पुस्तकों को बाहर निकालने में भी सहायता देता है जो या तो अप्रचलित हो गई हैं या जिनके नवीन संस्करण पुस्तकालय में प्राप्त हो चुके हैं । अर्थात् उसे पुस्तक संग्रह की छंटनी करने में भी वर्गीकरण से सहायता मिलती है ।

(ग) पुस्तक संग्रह का प्रभावकारी व स्पष्ट मार्ग दर्शन करना - वर्गीकरण की सहायता मे विभिन्न विषयों या वर्गों से संबंधित पुस्तकों के स्थान तथा उनकी स्थिति का पता लगाने में सहायता मिलती है । वर्गीकरण की सहायता से अनेक प्रकार के मार्गदर्शक बनाकर पाठकों का मार्गदर्शन किया जा सकता है ताकि वे इन मार्गदर्शकों की सहायता से पुस्तक संग्रह का उपयोग कर सकें ।

(घ) पुस्तक प्रदर्शन में सहायता देना-

पुस्तकालय में समय-समय पर, जैसे राष्ट्रीय पर्वों के अवसर पर, महापुरुषों की जयन्ती के अवसर पर, देश-विदेश की महत्त्वपूर्ण समस्याओं व घटना चक्रों से संबंधित विषयों पर, पुस्तक प्रदर्शनियाँ आयोजित करना आवश्यक होता है । यह पुस्तकालय विस्तृत सेवा एक अंग है । कभी-कभी किसी विषय में अस्थायी रूप से सार्वजनिक रुचि उत्पन्न हो जाती है और इस रुचि के अनुरूप अच्छी पुस्तकों का प्रदर्शन करना पड़ता है । कभी-कभी पाठकों में अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिये पुस्तकाध्यक्ष किमी प्रकरण से संबंधित पुस्तकों के प्रति पाठकों को आकर्षित करना चाहता है और उन्हें निधानियों से बाहर निकाल कर प्रदर्शित करता है । कभी -कभी वह उपेक्षित पुस्तकों का उपयोग बढ़ाने के लिये भी पुस्तकों का प्रदर्शन करता है । यदि पुस्तकालय का पुस्तक संग्रह वर्गीकृत क्रम में व्यवस्थित है तो वह इन सभी प्रकार के पुस्तक प्रदर्शनों को प्रभावशाली ढंग से व मितव्यता से आयोजित कर सकता है, क्योंकि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये पुस्तकें विशाल पुस्तक संग्रह से आसानी से निकाली जा सकती है और प्रदर्शन -फलकों पर उन्हें तुरन्त प्रदर्शित किया जा सकता है । यदि पुस्तक संग्रह वर्गीकृत नहीं है तो इस कार्य को पूरा करने में बहुत अधिक समय नष्ट करना पड़ेगा ।

(ङ) विषयानुसार आंकड़े एकत्र करने में सहायक-

पुस्तकाध्क्ष को समय-समय पर अपने उच्च अधिकारियों की जानकारी के लिये और उन्हें पुस्तक-संग्रह की प्रगति से अवगत कराने के लिये या पुस्तक-संग्रह के निर्माण के लिये आर्थिक अनुदान प्राप्त करने के लिये पुस्तकों के आंकड़े विषयानुसार एकत्र करने पड़ते हैं । यदि पुस्तक संग्रह वर्गीकृत है तो वह पुस्तकालय सूची में वर्गीकृत अनुक्रम में व्यवस्थित सूची पत्रकों की सहायता से इस प्रकार के आंकड़े तुरन्त एकत्र कर सकता है ।

(च) विषयानुसार तदर्थ ग्रन्थ सूचियाँ बनाने में सहायक-

कभी-कभी पाठक या -शोध छात्र या प्रशासनिक अधिकारी या अन्यविशिष्ट व्यक्ति किसी विशिष्ट विषय या प्रकरण से संबंधित पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की सूचियाँ बनाने का पुस्तकाध्यक्ष से आग्रह करते हैं । यदि पुस्तकालय का पुस्तक संग्रह वर्गीकृत क्रम में है तो वह इन प्रकार की तदर्थ ग्रंथ सूचियाँ बनाकर संबंधित व्यक्ति को तुरन्त प्रदान कर सकता है । अर्थात्, पुस्तकालय सूची के वर्गीकृत भाग की सहायता से इस प्रकार की ग्रन्थ सूचियों का आसानी से निर्माण किया जा सकता है ।

(छ) संदर्भ सेवा व सूचना पुन: प्राप्ति में सहायता प्रदान करना-

संदर्भ सेवा प्रदान करते समय अथवा सूचना की पुर्नप्राप्ति करते समय पुस्तकाध्यक्ष या सूचना अधिकारी को पाठकों के प्रश्नों का विश्लेषण करना पड़ता है । कभी-कभी पाठक अपनी माँग को स्पष्ट रूप से व्यक्त भी नहीं कर पाते । वर्गीकरण की सहायता से वह पाठकों के प्रश्नों का विश्लेषण करता है और पाठकों के स्पष्ट विषय के विभिन्न पक्षों की जानकारी प्राप्त कर लेता है ।

(ज) ज्ञान के समस्त क्षेत्रों को उनके पारस्परिक संबंधों के अनुरूप प्रदर्शित करना -

ज्ञान का क्षेत्र अनन्त है । ज्ञान के क्षेत्र के विभिन्न विचार या विषय एक दूसरे से अनेक प्रकार से संबंधित हैं । कुछ विषय एक दूसरे से निकटतया संबंधित है । कुछ विषय आपस में कुछ दूर का संबंध रखते हैं । कुछ विषय आपस में किसी भी प्रकार से संबंधित नहीं होते । वर्गीकरण ज्ञान के समस्त क्षेत्र को इस प्रकार से व्यवस्थित करता है कि एक दूसरे से संबंधित विषय एक साथ व्यवस्थित हो जाते हैं तथा दर का संबंध रखने वाले विषय कुछ दूरी पर व्यवस्थित हो जाते हैं । इस प्रकार वर्गीकरण वर्गीकृत वस्तुओं में मौलिक संबंध स्थापित करता है । और पाठकों को सुविधा प्रदान करता ।

(झ) पाठकों के समय व उनकी शक्ति को सुरक्षित रखना-

यदि पुस्तकालय में पुस्तकें अस्त -व्यस्त ढंग, से रखी हुई हैं तो पाठक को अपनी अभीष्ट अध्ययन सामग्री प्राप्त करने में अपने समय व अपनी शक्ति को व्यर्थ में बरबाद करना पड़ेगा और वह अपने कार्य में पूरी सफलता भी प्राप्त नहीं कर सकेगा । किन्तु यदि पुस्तकालय में पुस्तकें वर्गीकृत क्रम में व्यवस्थित हैं तो वह अपनी अध्ययन सामग्री तुरन्त प्राप्त कर लेगा और इस प्रकार उसके समय व उसकी शक्ति की बचत हो जायेगी ।

(ञ) पुस्तकालय सहयोग में सहायक-

यदि सभी पुस्तकालय एक ही वर्गीकरण प्रणाली को अपना कर पुस्तकों का वर्गीकरण करते हैं तो स्थानीय, क्षेत्रीय, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालय सहयोग में सफलता मिल जाती है । किसी पुस्तकालय द्वारा बनाई गई अध्ययन सामग्री सूचियाँ दूसरे पुस्तकालयों के पाठकों के लिये सहायक सिद्ध हो सकती हैं । इस प्रकार पुस्तकों के उपयोग के क्षेत्र में सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

5. सारांश

अध्ययन सामग्री का अधिक से अधिक उपयोग बढ़ाना पुस्तकालय का मुख्य लक्ष्य है । वर्गीकरण अध्ययन सामग्री के उपयोग को सरल व प्रभावशाली बनाता है । वर्गीकरण -शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'शब्द (CLASSIS) (क्लासिस) से हुई है ।

वस्तुओं को विभिन्न वर्गों में विभाजित करने की प्रक्रिया को वर्गीकरण कहते है । इस प्रक्रिया में समान वस्तुओं को एक साथ एक वर्ग में रख दिया जाता है तथा असमान वस्तुओं को अलग कर दिया जाता है । समानता व असमानता की जानकारी वस्तुओं में निहित विशेषताओं के द्वारा प्राप्त होती है । विशेषताऐं दो प्रकार की होती है- प्राकृतिक व कृत्रिम। जिस भी विशेषता का प्रयोग किया जावे वह वर्गीकरण के उद्देश्य की पूर्ति के लिये परमावश्यक होनी चाहिये । किन्तु वस्तुओं को वर्गों में विभाजित करते समय एक बार में केवल एक ही विशेषता का प्रयोग करना चाहिये ।

वर्गीकरण का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है- सामान्य वर्गीकरण पुस्तकालय वर्गीकरण के अर्थ में । सामान्य वर्गीकरण में हम विचारों व वस्तुओं को केवल सुव्यवस्थित क्रम में क्रमबद्ध करते हैं किन्तु पुस्तकालय वर्गीकरण का संबंध पुस्तकों व प्रलेखों से होता है । पुस्तकालय वर्गीकरण में पुस्तक की विषय-वस्तु के अलावा उसकी अन्य विशेषताओं, जैसे भाषा व प्रकाशन वर्ष, को भी क्रम सूचक संख्या प्रदान की जाती है । इस प्रकार वर्ग संख्या + ग्रंथांक = पुस्तकालय वर्गीकरण होता है ।

पुस्तकालय वर्गीकरण केवल निधानियों पर पुस्तकों की क्रमबद्ध व्यवस्था कायम रखने के लिये ही प्रयोग में नहीं लाया जाता अपितु आजकल उसका सूचना पुन: प्राप्ति के साधन के रूप में भी प्रयोग किया जाता है ।

पुस्तकालय विज्ञान के प्रथम, द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ सूत्रों की मांग को पूरा करने के लिये भी वर्गीकरण आवश्यक है। निधानियों पर पुस्तकों की व्यवस्था को यन्त्रवत् बनाने के लिये भी वर्गीकरण आवश्यक है । पुस्तकों को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित रखने के लिये, पुस्तक-संग्रह की सबलता व निर्बलता की जानकारी देने के लिये, संतुलित पुस्तक संग्रह के निर्माण में सहायता देने के लिये, पुस्तक-प्रदर्शन को सफल बनाने के लिये, विषयानुसार आंकड़े एकत्र करने में सहायता पहुँचने के लिये, तदर्थ ग्रन्थ सूचियाँ बनाने के कार्य को सरल बनाने के लिये, पाठकों के समय व उनकी शक्ति के अपव्यय को रोकने के लिये, पुस्तकालय सहयोग को सफल बनाने के लिये वर्गीकरण परम आवश्यक है ।

इसीलिये डब्ल्यू. सी. बरविक सेयर्स ने ठीक ही कहा है कि ' 'पुस्तकालय की आधारशिला पुस्तकें है तथा पुस्तकालयाध्यक्ष (LIBRARIANSHIP) की आधारशिला वर्गीकरण है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-सही या गलत बताइये

(क) वर्गीकरण पुस्तक प्रदर्शन को-

1. सफल बनाता है ।
2. असफल बनाता है ।

(ख) वर्गीकरण तदर्थ-ग्रन्थ सूचियों के निर्माण में-

1. सहायक है ।
2. बाधक है ।

(ग) वर्गीकरण पुस्तकालय सहयोग को-

1. सफल बनाता है ।
2. असफल बनाता है ।

(घ) पुस्तकालय की आधारशिला पुस्तकें हैं ” यह कथन किसका है-

1. रंगनाथन
2. कटर
3. सेयर्स

6. प्रश्न

(क) वर्गीकरण का अर्थ स्पष्ट कीजिये?

(ख) सामान्य वर्गीकरण तथा पुस्तकालय वर्गीकरण का अन्तर बताइये?

(ग) प्राकृतिक विशेषताओं व कृत्रिम विशेषताओं का अन्तर बताइये?

(घ) वर्गीकरण की आवश्यकता व उद्देश्य को स्पष्ट कीजिये?

(ङ) वर्गीकरण के मुख्य कार्यों का वर्णन 'कीजिये?

7. विस्तृत अध्ययन के लिये ग्रन्थ सूची-

a) Krishna Kumar: Theory of classification .Rev. ed. 2 New Delhi, Vikas Publishing House , Pvt . Ltd 1981 . P. 1-12

b) भार्गव, जी.डी : ग्रन्थालय वर्गीकरण, भोपाल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1971.

c) Mills, J. :Modern out line of classification Bombay, Asia 1962.P.1-29

d) Ranganathan S.R. : Elements of Library classification. Bombay Asia Publishing House Ed.3.1962.P.9-29

e) Sayers W.C. Berwick : Introduction to library classification.Ed.9.London,Grafton &Co.1958. P.1-41

f) त्रिपाठी, एस.एम.: आधुनिक ग्रन्थालय वर्गीकरण, सैद्धान्तिक विवेचन. आगरा, श्री राम मेहरा एण्ड कं० 1976, प्र. 1 -37.

कोर्स - 1A : पुस्तकालय वर्गीकरण - सिद्धान्त

इकाई- 2

अंकन : आवश्यकता, उद्देश्य, प्रकार, कार्य एवं गुण

(Notation: need, Purpose, Types, Functions and Qualities)

उद्देश्य :

1. अंकन के अर्थ व उसकी परिभाषा से परिचित होना ।
2. अंकन के आधार व उसके प्रकार की जानकारी देना ।
3. अंकन की आवश्यकता व उसके उद्देश्य के संबंध में जानना ।
4. अंकन के प्रमुख कार्यों, उसके गुणों तथा महत्व से परिचित होना ।

संरचना / विषयवस्तु

1. विषय प्रवेश
2. अंकन का अर्थ व परिभाषा
3. अंकन का आधार
4. अंकन के प्रकार
5. अंकन के उद्देश्य व उसकी आवश्यकता
6. अंकन के कार्य
7. अच्छे अंकन के गुण
8. वर्गीकरण में अंकन का महत्व
9. सारांश
10. प्रश्न
11. संकेत - शब्द
12. विस्तृत अध्ययन के लिये ग्रंथ सूची

1. विषय प्रवेश

पिछली इकाई में आप पुस्तकालय वर्गीकरण के उद्देश्यों, कार्यों तथा उसकी उपयोगिता के संबंध में पूरी जानकारी प्राप्त कर चुके हैं । प्रस्तुत इकाई की रचना आपको वर्गीकरण में अंकन की भूमिका, उसके महत्व व अर्थ, उसकी परिभाषा, उसके कार्यों व अच्छे अंकन के गुणों के बारे में स्पष्ट जानकारी प्राप्त करने में सहायता देने के लिये की गई है । इस इकाई में हम अंकन से संबंधित विभिन्न प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करेंगे ।

2. अंकन का अर्थ

प्राय : हम, अपनी सुविधा के लिये, दैनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तथा प्रत्येक कला व विज्ञान के क्षेत्र में कुछ प्रतीकों (symbols) व चिन्हों का प्रयोग करते हैं । इनका प्रयोग हम विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों को पूरा करने के लिये करते हैं । जैसे, अंग्रेजी भाषा के माध्यम से अपने विचारों को लिखते समय हम कॉमा (,) का प्रयोग अल्पविराम के लिये, सेमीकोलन (;) का प्रयोग अर्धविराम के लिये तथा बिन्दु (.) का प्रयोग पूर्ण विराम के लिये करते हैं । इसी प्रकार, गणित के क्षेत्र में भी प्रतीकों तथा आकृतियों का प्रयोग विभिन्न पदों व शब्दों को सूचित करने के लिये करते हैं । जैसे = का प्रयोग बराबर या (is equel to) के लिए, % का प्रयोग प्रतिशत के लिये ÷ का प्रयोग भाग के लिए या × का प्रयोग गुणा के लिए किया जाता है । इसी प्रकार रसायनो शास्त्र में विभिन्न रसायनों को सूचित करने के लिये प्रतीकों के रूप में फार्मूला प्रयोग में लाये जाते हैं ।

इसी प्रकार वर्गीकरण के क्षेत्र में भी हम विभिन्न विषयों वस्तुओं, पदार्थों या वर्गों को प्रतीकों व अंकों के द्वारा प्रदर्शित करते हैं । इन्हीं प्रतीकों को अंकन कहा जाता है । किसी विषय का शाब्दिक धरातल पर वर्गीकरण करते समय हम उसके वर्ग तथा उपवर्गों को प्राकृतिक भाषा में एक नाम देते हैं तथा आंकिक धरातल में उस नाम या विषय या वर्ग को प्रतीकों के माध्यम से प्रतिनिधित्व करते हैं । ये प्रतीक बनावटी या कृत्रिम होते हैं । इस प्रकार प्राकृतिक भाषा के पदों व शब्दों को कृत्रिम प्रतीकों व अंकों की भाषा की भाषा में व्यक्त करने या बताने की प्रक्रिया को अंकन कहते हैं । पुस्तकालय वर्गीकरण में भी हम पुस्तक के विषय का वर्गीकरण करते है । वर्गीकरण की प्रक्रियाओं में हम किसी विषय या वर्ग या उपवर्ग या उपवर्गों के भी खण्डों को सूचित करने के लिये प्रतीकों व संकेत संख्याओं का प्रयोग करते हैं । जैसे अर्थशास्त्र के लिए दशमलव वर्गीकरण में 330 प्रतीक संख्या का तथा द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में X प्रतीक संख्या का प्रयोग दिया गया है ।

2.1 परिभाषा

सामान्य अर्थ में, कुछ संकेतों, चिन्हों व प्रतीकों के समूह या इनकी प्रणाली को, जिसे किसी विशिष्ट उद्देश्य के लिये अपनाया जाता है, अंकन कहते हैं । अंकन का अर्थ स्पष्ट करने के लिये विभिन्न विद्वानों ने परिभाषायें प्रस्तुत की हैं ।

" किसी वर्गीकरण पद्धति में विभिन्न वर्गों को सूचित करने के लिये प्रयोग में लाई गई क्रम सूचक अंकों की व्यवस्था को (उस पद्धति का) अंकन कहते हैं ।"

-एस.आर. रंगनाथन

" वर्गों तथा उनके उपविभागों के लिये प्रयोग में लाये गये प्रतीकों को उस पद्धति का अंकन कहते हैं ।"

-मारगरेट मान

" अंकन प्रतीकों व चिन्हों की एक पद्धति है, जो किसी क्रम को सूचित करते हैं तथा जिनका प्रयोग पदों या किसी 'शृंखला की इकाईयों या किन्हीं वस्तुओं के समूह को सूचित करने के लिये किया जाता है ।"

-एच.ई. ब्लिस

“ किसी भी वर्गीकरण में पदों को सूचित करने के प्रयोग में लाई गई प्रतीकों या सांकेतिक चिन्हों की शृंखला को अंकन कहते हैं, जो अपनी क्रम व्यवस्था के द्वारा वर्गीकरण की व्यवस्था को प्रदर्शित करती है ।”

- सेयर्स

इन सभी परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि अंकन प्रतीकों का समूह है । इन प्रतीकों का प्रयोग प्राकृतिक भाषा के पदों व शब्दों को अथवा वस्तुओं व पदार्थों के वर्गों व उपवर्गों को सूचित करने के लिये किया जाता है । ये प्रतीक किसी एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित किये जाते हैं तथा ये वर्गीकरण पद्धति की क्रमव्यवस्था को प्रदर्शित करते हैं । जैसे, A से Z तक रोमन बड़े अक्षरों का प्रतीकों के रूप में प्रयोग किया जा सकता है । इनका क्रम निश्चित है । इस क्रम को सभी जानते हैं ।

इसके साथ यह भी जानना आवश्यक है कि पुस्तकालय वर्गीकरण में प्राय: अंकन क्रमसूचक (ordinal) अंकों की कृत्रिम भाषा होती है । क्रमसूचक अंक वे अंक कहलाते हैं जो वर्गों व विषयों को क्रमबद्ध करने के लिये प्रयोग में लाये जाते हैं, अर्थात् जो किसी क्रम को सूचित करते हैं । इसके विपरीत, इनके अनुरूप गणना सूचक (cardinal) अंकों का प्रयोग नहीं किया जाता; क्योंकि ये अंक गणना करने या माप करने के लिये प्रयोग में लाये जाते हैं ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये ।

1. अंकन प्राकृतिक भाषा के पदों की व्यवस्था है ।
2. अंकन प्रतीकों व चिन्हों की कृत्रिम भाषा है ।
3. अंकन में क्रम सूचक अंकों का प्रयोग किया जाता है ।
4. अंकन में गणना सूचक अंकों का प्रयोग किया जाता है ।
5. अंकन वर्गीकरण को क्रम- व्यवस्था को व्यक्त करता है ।
6. अंकन वर्गीकरण की क्रम- व्यवस्था को व्यक्त नहीं करता ।

3. अंकन का आधार

अंकने के लिये कोई आधार चुनना पड़ता है । अंकन के आधार के लिये मुख्यतया निम्न प्रकार के प्रतीकों व चिन्हों का प्रयोग किया जा सकता है ।

1. हिन्द - अरबी अंक (Indo - Arabic Numerals): _ 1 से 9 तथा 0
2. रोमन बड़े अक्षर (Roman Capital letters) : A से Z
3. रोमन छोटे अक्षर (Roman Small letters) : a से z
4. ग्रीक अक्षर (Greek letters) जैसे,Δ
5. विराम चिन्ह (Punctuation marks) जैसे, कॉमा (,) सेमीकोलन (;), बिन्दु (.), कोलन (:) आदि ।
6. गणितीय चिन्ह (Mathematical symbols) जैसे + (प्लस), (माइनस) आदि ।
7. अन्य, जैसे → तीर () चक्राकार कोष्टक

4. अंकन के प्रकार

वर्गीकरण पद्धति में एक ही जाति के अंकों या प्रतीकों का प्रयोग किया जा सकता है या एक से अधिक जाति के प्रतीक चिन्हों व अंकों का भी प्रयोग किया जा सकता है । जब एक ही जाति के (जैसे, केवल 1 से 9 व 0 अथवा A से Z) प्रतीकों व अंकों का प्रयोग किया जाता है तो उसे शुद्ध अंकन कहते है । परन्तु जब एक से अधिक जाति के (जैसे,1 से 9 व 0, A से Z, a से z आदि) प्रतीकों व अंकों का प्रयोग किया जाता है तो उसे मिश्रित अंकन कहते हैं । दशमलव वर्गीकरण पद्धति में मुख्य रूप से एक ही जाति के, जैसे 1 से 9 व 0 (हिन्द - अरबी अंकों) का प्रयोग किया गया है। अत : इसका अंकन शुद्ध अंकन कहलाता है । हालांकि कुछ स्थानों पर रोमन बड़े अक्षरों का प्रयोग करने का भी प्रावधान है । किन्तु इसकी कुछ विशेष स्थितियों में ही अनुमति दी गई है । दशमलव बिन्दु का भी प्रयोग केवल आँखों को आराम देने के लिये किया गया है । द्विबिन्दु वर्गीकरण में एक से अधिक जाति के अंकों (जैसे, रोमन बड़े अक्षर, रोमन छोटे अक्षर, हिन्द - अरबी अंक, ग्रीक अक्षर तथा विराम चिन्ह आदि) का प्रयोग किया गया है । अत : इसका अंकन मिश्रित अंकन कहलाता है । अधिकतर वर्गीकरण प्रणालियों में मिश्रित अंकन का ही उपयोग किया गया है । ब्लिस ने मिश्रित अंकन की बहुत प्रशंसा की है । शुद्ध अंकन की. भी अपनी विशेषताएं हैं: यह सरल होता है. इसमें प्रयुक्त विभिन्न प्रतीकों का क्रम प्रत्येक पाठक को ज्ञात होता है । (जैसे, B के बाद C आयेगा या 8 के बाद 9 आएगा); यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य होता है । शुद्ध अंकन के गुणों के कारण ही दशमलव वर्गीकरण प्रणाली बहु त अधिक प्रचलित हुई । परन्तु शुद्ध अंकन की अपनी सीमाएं भी हैं । इसका आधार छोटा तथा पूर्व निर्धारित होता है । उदाहरण स्वरूप दशमलव वर्गीकरण में संख्या 0 से लेकर 9 के बीच अर्थात् दस वर्गों (9 मुख्य वर्ग तथा 1 सामान्य वर्ग) में ज्ञान जगत को, बांटा गया है । फर्मण्ट राईडर (Rider) की ' इन्टरनेशनल ' क्लासीफिकेशन प्रणाली में भी शुद्ध अंकन का प्रयोग किया गया है। इसमें वर्गीकरण के अंकन के आधार को बढ़ाने के लिये अंकों के बदले अंग्रेजी भाषा के अक्षरों (A -Z) का प्रयोग किया गया है । इससे इस प्रणाली को 26 आधार मिले हैं । परन्तु इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि ज्ञान-जगत् में नये-नये विषय प्रस्फुटित होते रहते हैं अत : शुद्ध अंकन जिसका आधार सीमित होता है । ज्ञान-जगत् के सारे विषयों का तार्किक प्रतिनिधित्व कर सकता ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

1. अंकन के आधार के लिये केवल एक जाति के प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है ।
2. अंकन के आधार के लिये सभी जाति के प्रतीकों का प्रयोग होता है ।
3. मिश्रित अंकन में एक से अधिक जाति के प्रतीकों का प्रयोग होता है ।
4. रोमन बड़े अक्षर शुद्ध अंकन के प्रतीक हैं ।
5. द्विबिन्दु वर्गीकरण का अंकन शुद्ध है ।
6. द्विबिन्दु वर्गीकरण का अंकन मिश्रित है ।

5. अंकन के उद्देश्य व उसकी आवश्यकता

पुस्तकालय वर्गीकरण में हमें विषयों के क्रम को निर्धारित करना पड़ता। है, तथा इसके साथ ही यह भी देखना पड़ता है कि वह क्रम ऐसा हो जो कि पुस्तकालय का उपयोग करने वालों को अधिक से अधिक सहायक सिद्ध हो । ऐसा करते समय हमें दो महत्वपूर्ण बिन्दुओं का ध्यान रखना पड़ता है । सबसे पहले

तो हमें यह निश्चित करना होता है कि किसी विषय का,चाहे वह कितना भी जटिल क्यों न हों,किसी अनुक्रम में (जिसमें हजारों पद हो सकते हैं) कौन सा निश्चित स्थान होगा । दूसरे, अधिक से अधिक निकट संबंध रखने वाले विषयों को एक साथ किस विधि से रखा जाये, ताकि जब भी किसी विषय को तलाश किया जाये तो वह निकटतया संबंधित विषय सामग्री मे घिरा हुआ प्राप्त हो । इन दोनों ही बिन्दुओं को व्यावहारिक रूप प्रदान करने के 'उद्देश्य से हमें किसी संकेत पद्धति (Code) को, जिसे हम अंकन कहते हैं, अपनाना पड़ता है ।

अत: किसी भी वर्गीकरण पद्धति को व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिये अंकन नितान्त आवश्यक है । इसका मुख्य उद्देश्य वर्गीकरण पद्धति को गति प्रदान करना है । अंकन के अभाव में हम भी वर्गीकरण पद्धति की व्यवस्था को कायम नहीं रख सकते और न ही उसका पाठकों की सहायता के लिये उपयोग कर सकते ।

पुस्तकों में निहित ज्ञान का, जिसके अनेक पक्ष होते हैं, वर्गीकरण करके, हम उसे निधानियों पर एक सीधी पंक्ति में व्यवस्थित करते हैं । पुस्तकों को एक सीधी पंक्ति में प्राय : दो प्रकार से रखा जा सकता है । एक तो, वर्णानुक्रम में- अर्थात् पुस्तकों के विषयों को प्राकृतिक भाषा के पदों व शब्दों द्वारा व्यक्त करके, पुस्तकों को इन पदों वे शब्दों द्वारा वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित किया जा सकता है । जैसे, 'भौतिक शास्त्र' विषय को "भ" वर्ण के अन्तर्गत, 'ऊष्मा' विषय को 'ऊ' वर्ण के अन्तर्गत, प्रकाश को 'प' वर्ण के अन्तर्गत किन्तु इस प्रकार से पुस्तकों को व्यवस्थित करने से एक ही विषय से संबंधित विभिन्न वर्गों की पुस्तकें अनेक वर्णों (अक्षरों) के अन्तर्गत बिखर जाती हैं तथा पाठक को एक ही मुख्य विषय से संबंधित अनेक वर्गों की पुस्तकों को ढूंढने में अपने समय का अपव्यय करना पड़ता है । तथा वह सभी सह संबंधित विषयों व वर्गों को निधानियों पर एक साथ नहीं प्राप्त कर पाता है । अत : यह व्यवस्था पाठक के लिये असहायक होती है ।

इसके अलावा वर्णानुक्रम में पुस्तकों को रखने से एक दूसरी कठिनाई यह सामने आती है कि कभी-कभी कुछ समय बाद विषयों के नाम बदल जाते हैं । और पाठक अपनी अध्ययन सामग्री प्राप्त करने में कठिनाई का सामना करता है । प्राकृतिक भाषा में शब्दों के पर्यायवाची शब्द भी पाठक के लिये कठिनाई पैदा करते हैं । जैसे, सूर्य के पर्यायवाची शब्द भास्कर, रवि, दिनकर आदि । प्राकृतिक भाषा के कुछ शब्दों के एक से अधिक अर्थ हो सकते हैं । जैसे, अंग्रेजी भाषा में Mercury शब्द का अर्थ 'पारा' भी है और यह 'ग्रह' का भी नाम है । इस प्रकार वर्णानुक्रम व्यवस्था में दो ऐसे विषयों की पुस्तकें, जिनका एक दूसरे से कोई संबंध नहीं होता है एक ही साथ एक ही पद (शब्द) के अन्तर्गत व्यवस्थित करनी पड़ती हैं ।

वर्णानुक्रम की इन सभी कठिनाईयों से बचने के लिये हमे विषयों व वर्गों के नामों को प्रतीकों द्वारा सूचित करना पड़ता है । इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर अंकन वर्गीकरण का एक अभिन्न अंग माना जाता है । अत : यह कहा जा सकता है कि किसी भी अनुक्रम में किसी भी विषय का निश्चित स्थान जानने के लिए अंकन आवश्यक है । किसी भी वर्गीकरण की व्यवस्था में विभिन्न विषयों के यह संबंधित स्थान को कायम रखने के उद्देश्य से भी अंकन आवश्यक है । इसके अलावा किसी भी चुनी हुई व्यवस्था के अनुक्रम को जानने के उद्देश्य से तथा उस व्यवस्था के रख -रखाव को सरल बनाने के लिये भी अंकन का प्रयोग आवश्यक है । इसके साथ ही, इस व्यवस्था को वैज्ञानिक व यांत्रिक बनाने के लिये भी अंकन आवश्यक है ।

अंकन का प्रयोग इस लक्ष्य को भी ध्यान में रखकर किया जाता है कि किसी भी वर्गीकरण पद्धति की अनुसूचियों में उल्लिखित प्रत्येक पद (शब्द) को एक स्थिर व नियत अंक प्रदान किया जा सके तथा जब कभी उस पद का प्रयोग किया जाये उसे उसी प्रतीक द्वारा प्रस्तुत किया जा सके ।

वर्गीकरण पद्धति को अनुसूचियों में पदों की क्रम परम्परा (Hierarchy) या उनके श्रेणीबद्ध संगठन में किसी भी पद को निश्चित स्थान प्रदान करना भी अंकन का लक्ष्य है ।

क्रम परम्परा में वर्गों तथा उपवर्गों के अनुक्रम को प्रदर्शित करना भी अंकन का उद्देश्य है । नवीन विषयों व वर्गों को वर्तमान व्यवस्था में (इस व्यवस्था को भंग किये बिना) उपयुक्त स्थान देने के लिये तथा पहले से ही विद्यमान वर्गों का उपविभाजन सरल बनाने के उद्देश्य से भी अंकन का प्रयोग आवश्यक होता है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

1. अंकन का प्रयोग पाठकों को सहायता प्रदान करने के लिये किया जाता है ।
2. अंकन का प्रयोग केवल पुस्तकालय कर्मचारियों को सहायता प्रदान करने के लिये किया जाता है ।
3. अंकन वर्गीकरण पद्धति को स्थिर बना देता है ।
4. अंकन वर्गीकरण पद्धति को गति प्रदान करता हैं ।
5. वर्णानुक्रम व्यवस्था एक से संबंधित सभी पक्षों की पुस्तकों को एक ही स्थान पर व्यवस्थित करती है ।
6. वर्णानुक्रम व्यवस्था सह संबंधित विषयों की पुस्तकों को अनेक स्थानों पर बिखेर देती है ।
7. विभिन्न विषयों के सह संबंधित स्थान को कायम रखने के लिये अंकन का प्रयोग आवश्यक है ।
8. अंकन कम-परम्परा के अनुक्रम को प्रदर्शित नहीं करता ।

6. अंकन के कार्य

अंकन के प्रमुख कार्य निम्नानुसार है

(क) **वर्णानुक्रम का व्यवस्थित अनुक्रम से संबंध स्थापित करना :** पुस्तकालय सूची यार किसी भी ग्रंथ सूची में सभी अध्ययन सामग्री प्राय: वर्गीकरण के क्रम में व्यवस्थित होती है । पाठकों की सहातार्थ विषयों के सभी पदों को वर्णानुक्रम में भी व्यवस्थित किया जाता है । इस प्रकार पाठक पहले वर्णानुक्रम में अपने विषय की खोज करता है और उससे संबंधित प्रतीक संख्या (वर्ग संख्या) को नोट करके वर्गानुसार व्यवस्थित पुस्तकों के क्रम में अपने विषय से संबंधित पुस्तक या पुस्तकों को एक ही स्थान पर एक साथ प्राप्त कर लेता है । इस प्रकार अंकन वर्णानुक्रम को व्यवस्थित अनुक्रम के साथ जोड़ने का कार्य करता है ।

(ख) **निधानियों पर व्यवस्थित सामग्री का स्थान यन्त्रवत् निर्धारण करना:** प्रतीक संख्या (वर्ग संख्या) की सहायता से पाठक निधानियों पर व्यवस्थित अपनी अध्ययन सामग्री का शीघ्रता से पता लगा लेता है । जैसे, भारत की शिक्षा का वर्गांक T.44 है । वह इस प्रतीक संख्या की सहायता से इस विषय से संबंधित सभी पुस्तकों को निधानियों पर तुरन्त प्राप्त कर लेता है ।

(ग) **समकक्ष व अधीनस्थ वर्गों के क्रम को प्रदर्शित करना :** ज्ञान के क्षेत्र में कुछ वर्ग एक दूसरे के समकक्ष दरजे के होते हैं तथा कुछ वर्ग किसी एक प्रधान वर्ग के उपविभाजन या उपवर्ग होते हैं । ये सभी उपवर्ग प्रधान वर्ग के अधीन होते हैं । जैसे, हिन्दू धर्म (वैदिक), जैन धर्म, बौद्ध धर्म अपनी पंक्तियों में समकक्ष दरजे के वर्ग हैं ।Q^1, Q^3, Q^4 .प्रतीक संख्याओं द्वारा यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि ये सभी समकक्ष वर्ग हैं । अधीनस्थ वर्गों में प्रधान वर्ग की विशेषता को बताने वाला अंक विद्यामान रहता है । जैसे, X722 (संपत्ति कर), X723 (भूमि कर) X724 (आय कर) इन सभी वर्ग संख्याओं में X72 (टैक्स) प्रधान वर्ग का अंकन विद्यमान है । और इस प्रकार अंकन (प्रतीकों) के माध्यम से ये सभी X72 (टैक्स) प्रधान वर्ग के अधीनस्थ वर्ग प्रतीत होते हैं।

(घ) **वर्गीकृत व्यवस्था व उसके अनुक्रम को यन्त्रवत् बनाना :** वर्गीकरण में प्रत्येक पद को क्रम सूचक प्रतीक संख्या प्रदान कर दी जाती है । इस प्रतीक संख्या (वर्ग संख्या) के द्वारा वर्गीकृत व्यवस्था व उसके अनुक्रम को यन्त्रवत् बना दिया जाता है । अर्थात् वर्ग संख्या की सहायता से किसी भी पुस्तक के स्थान का तुरन्त पता लगाया जा सकता है । साथ ही इसकी सहायता से पुस्तक को अपने निर्धारित स्थान पर भी तुरन्त वापस रखा जा सकता है । पुस्तकालय में जब नवीन पुस्तक आती है तो उसे भी सह संबंधित विषय की पुस्तकों के साथ, वर्तमान व्यवस्था को भंग किये बिना, तुरन्त रखा जा सकता है ।

(ङ) **पुस्तक संग्रह कक्षों व मार्ग दर्शन करने में सहायता करना :** बड़े पुस्तकालयों में पुस्तकें अनेक संग्रह कक्षों में व्यवस्थित होती हैं । इनकी जानकारी प्रदान करने के लिये मार्गदर्शक चार्ट बनाकर विभिन्न स्थानों पर लगा दिये जाते हैं । इस कार्य को अंकन बहुत आसान बना देता है ।

(च) **वर्गीकरण पद्धति की अनुसूचियों के निर्माण तथा उनके भौतिक स्वरूप में अत्यधिक मितव्ययता प्रदान करना:** पक्षात्मक वर्गीकरण में विभिन्न पक्षों से संबंधित विचारों की पृथक् - पृथक् मानक अनुसूचियां बना दी जाती हैं । इसके साथ ही बहुत से सामान्य विचार, जो अनेक विषयों के साथ समान रूप से जोड़ जा सकते हैं, पृथक् सामान्य अनुसूचियों में प्रस्तुत कर दिये जाते है । आवश्यकतानुसार एक से अधिक अनुसूचियों से विभिन्न पदों से संबंधित प्रतीकों को लेकर एक साथ जोड़ा जा सकता है । इस प्रकार दोनों ही क्षेत्रों में अंकन द्वारा मितव्ययता प्रदान की जा सकती है ।

(छ) **स्मृति सहायक विशेषता द्वारा पुस्तकाध्यक्ष को सहायता देना :** वर्गीकरण के क्षेत्र में विभिन्न विषयों के उपवर्गों में एक ही प्रकार के विचार को या उससे मिलते - जुलते विचार को व्यक्त करने के लिये एक ही अंक का प्रयोग किया जाता है । यह स्मृति सहायक अंकन विधि पुस्तकालयाध्यक्ष को प्रत्येक विषय के वर्गों के अनुक्रम को याद रखने में सहायता प्रदान करती हे । जैसे, G:2, I:2, K:2, L:2 तथा V:2 इस सभी वर्ग संख्याओं में अंक 2 का स्मृति सहायक अंक के रूप में प्रयोग किया है तथा इन सभी विषयों में अंक 2 का 'संरचना, गठन, बनावट' अर्थ में प्रयोग किया गया है ।

(ज) **पुस्तकों की निर्गम- आगम प्रक्रियाओं में सहायता देना :** पाठकों को पुस्तकें उधार देते समय अंकन निर्गम - प्रतीक के रूप में कार्य करता है । अर्थात् पुस्तकों की वर्ग - संख्या को निर्गम

- प्रतीक के रूप में प्रयोग किया जाता है । यह प्रतीक निर्गम व्यवस्था को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित रखता है । तथा इसकी सहायता से निर्गम की गई पुस्तकों के विषयानुसार आंकड़े आसानी से तैयार किये जा सकते हैं ।

अंकन के कार्यों के बारे में कुछ विद्वानों के विचार निम्नानुसार है

जे. मिल्स के अनुसार " अंकन का प्रधान कार्य विभिन्न विषयों के पदों (शब्दों) को कोई सर्व - सम्मत क्रमदर्शक मूल्य वाला चिन्ह प्रदान करके उन विषयों के क्रम को यन्त्रवत् बनाये रखना है । "

बी. सी. विकरी के मतानुसार " अंकन, जिसके द्वारा वर्ग - संख्या का निर्माण होता है, तथा जिस वर्ग संख्या के प्रतीकों को क्रमसूचक मूल्य के आधार पर व्यवस्थित किया जाता है, विभिन्न विषयों को एक अधिमान्य क्रम में रखने का कार्य करता है । इसी के साथ उसने यह भी कहा है कि " अंकन ही वर्गीकृत विषयों की संरचनात्मक विशेषताओं को आसानी से प्रदर्शित करता है । अर्थात्, उसके द्वारा यह व्यक्त हो जाता है कि मिश्रित या संयुक्त विषय -शीर्षकों की वर्ग संख्या की संरचना किस प्रकार से हुई है तथा विभिन्न पदों के प्रतीकों को किस -किस स्थान पर किस प्रकार से जोड़ा गया है।"

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

1. अंकन केवल अधीनस्थ वर्गों के क्रम को व्यक्त करता है ।
2. अंकन अधीनस्थ तथा समकक्ष दोनों ही प्रकार के वर्गों के कम को व्यक्त करता है ।
3. अंकन का प्रयोग अनुसूचियों के आकार को बड़ा बनाता है ।
4. अंकन का प्रयोग अनुसूचियों के आकार को छोटा बनाता है ।
5. अंकन निर्गम - व्यवस्था को सहायक अनुक्रम में रखता है ।
6. अंकन निर्गम - व्यवस्था को नष्ट कर देता है ।

7. अच्छे अंकन के गुण

(क) उत्तम अंकन के मुख्य गुण निम्नलिखित है

(ख) संक्षिप्तता (Brevity)

(ग) सरलता (Simpliaty)

(घ) वर्द्धनशीलता तथा अनुक्रमिकता (Expansibility and Hierarchical)

(ङ) स्मरणशीलता (Mnemonic)

(च) संश्लेषणात्मकता (Synthesis)

(छ) अभिव्यंजकता (Expressiveness)

(ज) सापेक्षता (Relativity)

(क) **संक्षिप्तता:** जहां तक संभव हो अंकन अधिक से अधिक छोटा होना चाहिये । अंकन की संक्षिप्तता उसके आधार के विस्तार पर निर्भर होती है । अंकन का आधार जितना विस्तृत होगा, उस वर्गीकरण पद्धति की (वर्ग) संख्यायें उतनी ही छोटी होगी । अर्थात्, वर्गीकरण पद्धति के अंकन के आधार के लिये प्रयोग में लाये गये प्रारंभिक प्रतीकों व चिन्हों की संख्या यदि अधिक होगी तो उसकी वर्ग संख्यायें छोटी होंगी । यदि विभिन्न जातियों के अंकों का प्रयोग किया' जाये तो सभी प्रारंभिक मुख्य वर्गों को स्वतंत्र स्थान मिल जायेगा और अंकन स्वत:

छोटा होगा । उदाहरणार्थ, यदि A से Z (26 अक्षरों), 1 से 9 व 0 (दस अक्षरों) a से z (23 अक्षरों- i o 1 को छोड़कर) का अंकन के आधार के लिये प्रयोग, जाये तो 59 प्रारम्भिक स्थान मिल जाते हैं । और इस प्रकार वर्ग संख्याओं के निर्माण में कम अंकों का प्रयोग होता है । जैसे

द्विबिन्दु वर्गीकरण के अनुसार -

अर्थशास्त्र = x राजनीति 'शास्त्र = W

दशमलव वर्गीकरण के अनुसार -

अर्थशास्त्र = 330, राजनीति शास्त्र = 320

द्विबिन्दु वर्गीकरण के अंकन का आधार विस्तृत है- अर्थात् मिश्रित अंकन का प्रयोग किया गया है - इसलिये केवल एक ही अंक द्वारा वर्ग, संख्याओं का निर्माण हु आ है । किन्तु दशमलव वर्गीकरण का आधार छोटा है - केवल 1 से 9 व 0 का ही प्रयोग किया गया है- अत : इसकी वर्ग संख्याओं में तीन अंकों का प्रयोग किया गया है । इस प्रकार विस्तृत आधार वाला मिश्रित अंकन छोटी वर्ग संख्यायें प्रदान करता है । तथा छोटे आधार वाला शुद्ध अंकन बड़ी वर्ग संख्या में प्रदान करता है ।

बड़ा अंकन आसानी से याद नहीं रखा जा सकता है तथा उसे लिखने व टाइप करने में गलती हो सकती है । किन्तु छोटा अंकन आसानी से समझा जा सकता है, आसानी से याद रखा जा सकता है और इसके लिखने में गलती नहीं होती । इसके अलावा अंकन की संक्षिप्तता इस बात पर भी निर्भर करती है कि वर्गीकरण पद्धति में विभिन्न विषयों के लिये अंकों का बँटवारा किस प्रकार से किया गया है । अर्थात्, विभाजन के प्रत्येक चरण पर कितने अंक उपलब्ध हैं । तथा किस एक रूपता व समता से अंको का बँटवारा किया गया है । जिस विषय के अन्तर्गत अधिक उपवर्ग हों उसे अधिक प्रतीकों व अंकों का बँटवारा होना चाहिये तथा जिसके कम उपवर्ग हों उसे कम प्रतीकों का बँटवारा होना चाहिये । जैसे, इन्जीनियरी में धर्म शास्त्र से अधिक उपवर्ग होते हैं, तो इंजीनियरी को धर्म -शास्त्र से अधिक प्रतीक चिन्ह मिलने चाहिये।

(ख) **सरलता:** अंकन यथा संभव सरल होना चाहिये । सरलता दो निश्चित विशेषताओं की ओर संकेत करती है| अर्थात्, सरलता का पहला अर्थ तो यह अंकन ऐसा होना चाहिये जिसके द्वारा अनुक्रम की स्पष्ट रूप से जानकारी मिल जाये। जैसे, हिन्द- अरबी अंक 1 से 9 व 0, तथा रोमन अक्षर A से Z स्वत: ही अपने अनुक्रम को व्यक्त कर देते हैं । इनके अनुक्रम को सभी जानते हैं । सरलता का दूसरा अर्थ यह है कि अंकन ऐसा होना चाहिये जिसका सरलता से उच्चारण किया जा सके, जिसे सरलता से याद रखा जा सके, जिसे सरलता से दूसरों को बताया जा सके, जिसे आसानी से लिखा या टाइप किया जा सके । इसके अलावा, अंकन के प्रत्येक प्रतीक को स्पष्ट रूप से पहचाना जा सके, जैसे, 1 से 9 व 0 अंकों को और रोमन बड़े अक्षरों A से Z को आसानी से पहचाना जा सकता है । किन्तु छोटे रोमन अक्षर i o 1 अंक 1 तथा शून्य का भ्रम पैदा करते हैं । इसी प्रकार शून्य व वर्ण 0 भी भ्रांति पैदा करते हैं । इस लिये अंकन में इस प्रकार की भ्रांति का समावेश नहीं होना चाहिये ।

(ग) **वर्धनशीलता :** वर्धनशीलता, विस्तार शीलता, ग्राहयता, एवं समायोजनशीलता शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ व उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाता है । इन सभी शब्दों का अर्थ यह है कि अंकन ऐसा होना चाहिये जो ज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर उत्पन्न होने वाले विषयों, उपवर्गों व विचारों को वर्तमान अनुक्रम में समुचित स्थान प्रदान करने की क्षमता रखता हो । नये विषय या विचार किसी भी पंक्ति के पहले छोर पर, पंक्ति के बीच में या पंक्ति के अंतिम छोर पर किसी भी जगह अपने स्थान की मांग कर सकते हैं । अत : अंकन में नये विषयों व विचारों को अनुसूचियों की वर्तमान व्यवस्था में, बिना किसी व्यवधान व अस्तव्यस्तता के, उचित स्थान प्रदान करने की क्षमता होनी चाहिये । अंकन की वर्धनशीलता के अभाव में, वर्गीकरण पद्धति ज्ञान जगत के विस्तार की गति के साथ नहीं चल सकती और वह शीघ्र ही समाप्त हो जाती है या अप्रचलित हो जाती है ।

(घ) **स्मरणशीलता:** वर्गीकरण पद्धति में प्रतीकों या चिन्हों का इस भांति प्रयोग किया जाना चाहिये ताकि जहां कहीं भी उनका प्रयोग किया जाये उनका अर्थ लगभग समान ही हो । उदाहरणार्थ द्विबिन्दु वर्गीकरण में a अक्षर का जहां कहीं भी प्रयोग किया जाना हैं, ग्रंथ सूची के अर्थ में ही किया जाता है । इसी प्रकार 44 संख्या का प्रयोग भारत भौगोलिक क्षेत्र के लिये किया जाता है । इसी प्रकार दशमलव वर्गीकरण में भी 03 संख्या का प्रयोग सभी स्थानों पर विश्व कोष या शब्द कोष के लिये होता है। यह गुण आकस्मिक या आनुषंगिक होना चाहिये।

(ङ) **संश्लेषणात्मकता:** अंकन इस प्रकार का होना चाहिये कि आवश्यकतानुसार उसका संश्लेषण किया जा सके । उदाहरणार्थ, सभी विषयों के विभिन्न पक्ष होते हैं । पहले किसी भी पुस्तक के विशिष्ट विषय की जानकारी प्राप्त की जाती है । इसके बाद इस विशिष्ट विषय का उसके विभिन्न पक्षों में विश्लेषण किया जाता है । वर्गीकरण की अनुसूचियों से इन पक्षों के वर्गों संबंधी अंकन प्राप्त किये जाते है । तथा इन प्रतीकों को नियमानुसार दूसरे के साथ जोड़ दिया जाता है । अत. अंकन में ऐसी क्षमता होनी चाहिये कि विषय के विभिन्न पक्षों का आसानी से संश्लेषण किया जा सके और इस संश्लेषण में विभिन्न पक्षों की संरचना स्पष्ट रूप मे दिखाई देती रहे । वर्गीकरण जैसी वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति का अंकन प्राय: संश्लेषणात्मक होता है ।

(च) **अभिव्यञ्जकता :** ऐसे अंकन का प्रयोग किया जाना चाहिये जो वर्गीकरण पद्धति के वर्ग विभाजन के क्रम को आसानी से व्यक्त कर सके या प्रदर्शित कर सके । अंकन के द्वारा ही यह स्पष्ट रूप से पता लग जाना चाहिये कि किसी प्रधान वर्ग के अधीनस्थ उपवर्ग कौन -कौन से हैं । तथा प्रधान वर्ग की विशेषता सूचित करने. वाला प्रतीक उन सभी उपवर्गों में विद्यमान है अथवा नहीं । अर्थात् विभाजन के क्रम में विभाजन की प्रत्येक विशेषता को व्यक्त करने वाला प्रतीक उसके उपवर्गों में विद्यमान होना चाहिये । दूसरे शब्दों में हम -यह कह सकते हैं कि अधीनस्थ वर्ग नियन्त्रक वर्ग के अधीन प्रतीत हों । उसके उप भाग के रूप में दिखाई दें । अंकन द्वारा ही उपवर्गों की क्रम -परम्परा (Hierarchy) की अभिव्यञ्जकता हो जानी चाहिये । उदाहरणार्थ, KX311 = गाय, KX312 = भैंस, KX313 = बकरी ये सभी वर्ग अंकन स्तर पर प्रधान वर्ग KX31= दुधारू पशु के उपभाग के रूप में प्रतीत होते हैं क्योंकि KX31 द्वारा व्यक्त की गई विशेषता इन सभी में विद्यमान है ।

(छ) **सापेक्षता :**वर्गीकरण पद्धति में वर्ग संख्या की लम्बाई अर्थात्, उसमें प्रयोग किये गये अंकों की संख्या उस वर्ग के क्रम या दर्जे के अनुपात में होनी चाहिये जिसको उसके द्वारा व्यक्त किया जाता है । जब किसी वर्ग का विस्तार अधिक हो तो उसका अंकन छोटा होना चाहिये तथा जब किसी वर्ग का अर्थ सीमित हो व विस्तार क्रम हो तो उसका अंकन बड़ा होना चाहिये । अर्थात् ज्ञान के क्षेत्र में प्रथम क्रम व दर्जे के वर्गों को एक ही अंक द्वारा व्यक्त किया जाना चाहिये, क्योंकि उनका विस्तार अधिक होता है ।जैसे द्विबिन्दु वर्गीकरण में प्रथम क्रम के वर्गों को एक ही अंक द्वारा व्यक्त किया गया है - राजनीति शास्त्र = W अर्थशास्त्र =X. समाजशास्त्र = Y आदि ।

इसके अतिरिक्त अच्छे अंकन के संबंध में कुछ विद्वानों के विचार निम्नानुसार हैं :

बी. सी. विकरी के अनुसार " अच्छा अंकन वही होता है जिसमें प्रयोग किये गये प्रतीकों व अंकों को व्यवस्थित करने के क्रम को पाठक आसानी मे समझ सकें । अर्थात्, उनकों व्यवस्थित करने का क्रम स्वत : ही स्पष्ट होना चाहिये ।

“वह किसी भी विषय का संबंध उसके अधीनस्थ, उसके समकक्ष तथा उसकी उपरि - श्रेणी के पदों के साथ प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित कर सके ।”

सी जे. कोट्स के कथनानुसार “अंकन वही अच्छा होता है जिसमे बोधगम्यता हो, जो याद रखने में सुगम हो, तथा जो ज्ञान जगत् के परिवर्तनशील वातावरण मे निरन्तर विकास पाता रहे एवं अपना अस्तित्व बनाये रखे ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

1. शुद्ध अंकन छोटी वर्ग संख्यायें प्रदान करता है ।
2. मिश्रित अंकन बड़ी वर्ग संख्यायें प्रदान करता है ।
3. शुद्ध अंकन बड़ी वर्ग संख्यायें प्रदान करता है ।
4. मिश्रित अंकन का आधार छोटा होता है ।
5. मिश्रित अंकन का आधार बड़ा होता है ।
6. A से Z रोमन बड़े अक्षरों वाला अंकन सरल होता है ।
7. A से Z रोमन बड़े अक्षर भ्रांति पैदा करते हैं ।
8. सरल अंकन से अनुक्रम की स्पष्ट जानकारी मिलती है ।

8. वर्गीकरण में अंकन का महत्व

पूर्वोक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि वर्गीकरण में अंकन का बहुत अधिक महत्व है । किन्तु इसके के साथ ही एच. ई. ब्लिस के अनुसार " अंकन वर्गीकरण के क्रम को ही प्रतिबिम्बित करे वह उसके क्रम को निर्धारित नहीं करे । अर्थात् वह वर्गीकरण के क्रम का केवल सहायक व पूरक हे । वह केवल वर्गीकरण द्वारा निर्धारित किसी भी अनुक्रम को कायम रखने या बनाये रखने की क्रिया विधि है । वर्गीकरण में इसका स्थान गौण है । " ब्लिस महोदय के कथनानुसार " अंकन किसी वर्गीकरण का निर्माण नहीं करता, किन्तु वह उसे हानि पहुँचा सकता है ।" अत : वर्गीकरण पद्धति का अनुक्रम निर्धारित करने के बाद ही किसी भी अंकन पद्धति के अपनाने पर विचार करना चाहिये।

सेयर्स के अनुसार " अंकन वर्गीकरण के साथ जोड़ी गई वस्तु है ; किन्तु साथ ही महत्वपूर्ण भी है क्योंकि इसके बिना किसी भी वर्गीकरण को व्यवस्थित क्रम में नहीं रखा जा सकता है और न हीं इसके अभाव में वर्गीकरण का प्रयोग किया जा सकता है । ' इसके साथ ही सेयर्स का यह कथन भी सत्य है कि " अच्छा अंकन त्रुटि पूर्ण वर्गीकरण को अच्छा तो नहीं बना सकता है, किन्तु एक दोषपूर्ण अंकन किसी भी अच्छी वर्गीकरण पद्धति, की उपयोगिता के अधिकांश भाग को नष्ट कर सकता है । "

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

1. अंकन वर्गीकरण पद्धति का पूरक है ।
2. अंकन वर्गीकरण पद्धति का नियन्त्रक है ।
3. अंकन वर्गीकरण के क्रम को निर्धारित करता है ।
4. अंकन वर्गीकरण द्वारा निर्धारित क्रम को कायम रखता है ।

9. सारांश

प्रतीकों व चिन्हों की व्यवस्था को अंकन कहते हैं । यह प्रतीकों की एक कृत्रिम भाषा हैं । अंकन वस्तुत: क्रमसूचक अंकों की व्यवस्था है । प्राकृतिक भाषा के पदों व शब्दों को व्यक्त करने के लिए अंकन का प्रयोग किया जाता है । क्रम -सूचक अंक वर्गीकरण पद्धति की क्रम व्यवस्था को प्रदर्शित करते हैं । अंकन के आधार के लिये विभिन्न जाति के प्रतीकों व चिन्हों का प्रयोग किया जा सकता है - जैसे, हिन्द- अरबी अंक, रोमन बड़े अक्षर, रोमन छोटे अक्षर, ग्रीक अक्षर, गणितीय चिन्ह, विराम चिन्ह आदि । अंकन दो प्रकार का होता है - शुद्ध अंकन व मिश्रित अंकन।

वर्गीकरण पद्धति मे व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिए अंकन नितान्त आवश्यक है । वर्णानुक्रम की कठिनाईयों से बचने के लिये हम विषयों व वर्गों के नामों को अंकन (प्रतीकों) द्वारा सूचित करते हैं । पुस्तकालय का उपयोग करने वालों को विषयों का अधिक से अधिक सहायक अनुक्रम प्रदान करने के लिये ही पुस्तकालय वर्गीकरण में अंकन का प्रयोग किया जाता है ।

वर्गीकरण की व्यवस्था को वैज्ञानिक व यन्त्रवत् बनाने के लिये भी अंकन आवश्यक है । क्रम परम्परा में वर्गों व उपवर्गों के अनुक्रम को प्रदर्शित करना अंकन का उद्देश्य हे ।

अंकन वर्णानुक्रम का व्यवस्थित अनुक्रम से संबंध स्थापित करता है । वह समकक्ष व अधीनस्थ वर्गों के विषयों के क्रम को प्रदर्शित करता है । वह पुस्तक -संग्रह -कक्षों का मार्ग दर्शन करने में सहायता प्रदान करता है । वर्गीकरण की अनुसूचियों के निर्माण में अत्यधिक मितव्ययता प्रदान करता हैं । वह पुस्तकों की निर्गम-आगम प्रक्रिया में सहायता देता है ।

संक्षिप्तता, सरलता, वर्धनशीलता, संश्लेषणात्मकता, अभिव्यंजकता, सापेक्षता आदि अच्छे अंकन के गुण व लक्षण माने जाते हैं । वह वर्गीकरण द्वारा निर्धारित अनुक्रम को कायम रखने की क्रिया विधि है । वह वर्गीकरण का पूरक व सहायक है ।

10. प्रश्न

(क) अंकन का अर्थ स्पष्ट कीजिये एवं उसके उद्देश्य व उसकी आवश्यकता को बताइये।

(ख) वर्गीकरण में अंकन के कार्यों का वर्णन कीजिये ।

(ग) अच्छे अंकन के गुणों का वर्णन करते हुये, वर्गीकरण में अंकन के महत्व को बताइये ।

(घ) "अंकन वर्गीकरण का पूरक है, नियन्त्रक नहीं है' ' इस कथन को स्पष्ट कीजिये ।

(ङ) शुद्ध अंकन व मिश्रित अंकन का वर्णन कीजिये ।

11. संकेत-शब्द

1. निधानी (Shelf) = अलमारी के फलक ।
2. पंक्ति वर्ग (Classes in Array) = ऐसे वर्ग जो समान स्तर के होते है- एक दूसरे के अधीन नहीं होते ।
3. प्राकृतिक भाषा = बोल-चाल की सामान्य प्रचलित भाषा
4. पुस्तक-संग्रह-कक्ष = वह कमरा जहाँ पुस्तकें .अलमारियों में व्यवस्थित करके रखी जाती हैं।
5. यन्त्रवत् (Mechanical) = मशीन के समान शीघ्र कार्य करने का गण ।
6. वर्गानुसार = समान विशेषताओं वाली वस्तुओं के अलग-अलग समूहों का क्रम ।
7. वर्णानुसार = अकारादि क्रम में वस्तुओं की व्यवस्था ।
8. संश्लेषण = विभिन्न खण्डों व भागों को जोड़ना ।
9. शृंखला वर्ग = ऐसे वर्ग जो प्रधान वर्ग के उप भाग होते हैं ।

12. विस्तृत अध्ययन के लिये ग्रंथ सूची:

1. भार्गव, जी.डी ग्रंथालय वर्गीकरण. भोपाल, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 1971. पृष्ठ 225-233
2. Krishan kumar:Theory of Classification. Rev. ed. 2. New Delhi, Vikas Publishing House Pvt. Ltd . 1981.P.127-152
3. Mills, J.: Modern Outline of Classification. Bombay, Asia 1962.P.65.92
4. Palmer, B.1 and Wells, A. J.: Fundamentals of Library Classification, London, George Allen and Unwin.1961.P.60.66
5. Sayers, W. C. B. : Introducation to Library Classification. London, Grafton & Co.1958.P.53-68
6. Srivastava, A.P.:Theory of Knowldge Classification in Libraries New Delhi, Laxmi Book Store. 1964.P.89-110
7. त्रिपाठी एस.एम.: आधुनिक ग्रंथालय वर्गीकरण. आगरा, श्री राम मेहरा एण्ड कं. 1976. पृष्ठ 91 - 106

कोर्स- IA: पुस्तकालय वर्गीकरण-सिद्धान्त

इकाई - (3)

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की प्रमुख विशेषताऐं

(Main Features of Colon Classification)

उद्देश्य

1. द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली के उद्भव एवं विकास की संक्षिप्त जानकारी कराना ।
2. द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली के प्रारूप को समझाना।
3. द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली की प्रमुख विशेषताओं से परिचित होना।
4. द्विबिन्दु वर्गीकरण की समीक्षा से परिचित होना।

संरचना / विषय वस्तु

1. द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली का उद्भव एवं विकास
2. द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली का प्रारूप
3. द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली की विशेषताऐं -
   - 3.1 पाँच मूलभूत श्रेणियों का प्रावधान
     - 3.1.1 आवर्त्तन एवं स्तर
   - 3.2 वैंश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण प्रणाली
   - 3.3 पद्धतियां एवं विशिष्ट वर्ग
   - 3.4 अंकन
     - 3.4.1 मिश्रित अंकन
     - 3.4.2 विस्तृत आधार
     - 3.4.3 स्मृति सहायक अंकन
   - 3.5 विधियां
   - 3.6 दशा संबंध
   - 3.7 ग्रंथांक एवं संग्रहांक
   - 3.8 सामान्य एकल
   - 3.9 सैद्धान्तिक आधार
     - 3.9.1 आद्य ग्रंथ एवं पवित्र धार्मिक ग्रंथों का वर्गीकरण
4. द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली की समीक्षा
5. सारांश
6. पाठ पर आधारित प्रश्न
7. संदर्भ ग्रंथों की सूची

1. द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली का उद्भव एवं विकास (Origin and evolution of Colon Classification Scheme)

द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली के प्रणेता शियाली रामामृत रंगनाथन का जन्म 9 अगस्त, 1892 में मद्रास राज्य के तंजौर जिले के एक ग्राम शियाली में हुआ था । प्रारम्भ में आपने गणित्त विषय के अध्यापन का कार्य किया किन्तु 1924 में आपने मद्रास विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष पद का कर्यभार संभाल कर अपने व्यावसायिक जीवन को एक नया मोड़ दिया । इसी वर्ष आपको ब्रिटेन के पुस्तकालयों की कार्य प्रणाली का अध्ययन करने हेतु लंदन भेजा गया । वहाँ आपने पुस्तकालयों की कार्य प्रणाली के अध्ययन के साथ - साथ पुस्तकालयों में प्रयोग होने वाली वर्गीकरण पद्धतियों का भी अध्ययन किया । आपने अपने अध्ययन के आधार पर यह पाया कि निरन्तर गतिशील ज्ञान से उत्पन्न नये विषयों को वर्गीकृत करने में प्रचलित वर्गीकरण प्रणालियाँ पूर्ण रुप से सक्षम नहीं हैं । परिणामस्वरुप आपने एक ऐसी वर्गीकरण प्रणाली के निर्माण पर विचार करना प्रारम्भ किया जो निरन्तर गतिशील ज्ञान के कारण उत्पन्न विषयों को वर्गीकृत कर सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करने का कार्य अधिक प्रभावी ढंग से कर सके । डॉ. रंगनाथन ने सैफरिज में लंदन डिपार्टमेंटल स्टोर पर बच्चों के खिलौने बनाने वाले यंत्र को देखकर यह अनुमान लगाया कि जिस प्रकार एक खिलौना बेचने वाला एक ही खिलौने को धातु की रस्सियों, नटों, बोल्टों से मनचाहा रुप दे सकता है, उसी प्रकार अरेबिक अंकों (Arabic Numerals) तथा रोमन अक्षरों (Roman Letters) को आधार बनाकर विभिन्न योजक चिन्हों (Connecting Symbols) की सहायता से अनेक प्रकार के वर्गों का निर्माण किया जा सकता है । उपर्युक्त विचार धारा मे प्रेरित होकर लंदन में अपने प्रवास काल में कोलन (:) को. योजक चिन्ह के रुप में अपनाकर कुछ अनुसूचियों का निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया । उन्होंने कोलन युक्ति से बनाये संश्लेषण युक्त वर्गाकों की उपयोगिता को जांचा, परखा तथा अपने सेयर्स मेयसें (W.C.B. Sayers) से इस विषय में विचार विमर्श किया । सेयर्म ने रंगनाथन के प्रयास की सराहना की, किन्तु उन्होंने मार्ग में आनेवाली अनेक बाधाओं व कठिनाईयों से भी अवगत कराया ।

जून 1925 में इंगलैण्ड से लौटते समय, अपने यात्राकाल के दो सप्ताह में, मद्रास विश्वविद्यालय के 30,000 शीर्षकों के एक मुद्रित केटलॉग को अपने द्वारा निर्मित वर्गीकरण प्रणाली द्वारा वर्गीकृत करने में लगाये । इसी अवधि में आपने जहाज पुस्तकालय की पुस्तकों को भी वर्गाक प्रदान किये ।

उन्होंने अनुसूचियों (Schedules) के निर्माण कार्य में विषय-विशेषज्ञों का सहयोग भी प्राप्त किया। 1927 में अनुसूचियों के निर्माण का कार्य पूरा कर लिया गया । उन्होंने वर्गीकरण करने हेतु प्रायोगिक नियम भी बनाये । इन्हीं के आधार पर उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय पुस्तकालय की पुस्तकों को वर्गीकृत कर खुली आलमारियों में व्यवस्थित करने का कार्य पूरा किया तथा पाठकों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन कर तत्संबंधी सुधार भी किये । 1932 में कोलन पद्धति (द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति) मुद्रण के लिये तैयार थी । 1933 में इसका प्रथम संस्करण प्रकाशित हुआ । इसके बाद से इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हुये जो निम्न प्रकार हैं : -

द्वितीय संस्करण	1939
तृतीय संस्करण	1950
चतुर्थ संस्करण	1952

पंचम संस्करण	1954
षष्टम संस्करण	1960
षष्टम संस्करण (पुनमुद्रित)	1963
सप्तम संस्करण	1987

प्रथम तीन संस्करण तक इसमें एक ही प्रकार के संयोजक चिन्ह कोलन (:) का प्रयोग किया गया। इस समय तक यह अपरिवर्तनीय पक्षात्मक पद्धति (Rigidly faceted scheme) कहलाती थी। चौथे संस्करण में पृथक् पृथक् पक्षों के लिये पृथक् पृथक् संयोजक चिन्हों का प्रावधान किया गया। जैसे -व्यक्तित्व पक्ष के लिये कोमा, पदार्थ पक्ष के लिये सेमीकोलन, ऊर्जा पक्ष के लिये कोलन तथा स्थान व काल पक्षों के लिये डोट। अब यह लगभग स्वच्छन्द पक्षात्मक पद्धति (Almost freely faceted scheme) के रूप में जानी जाने लगी। छटवें संस्करण (पुनमुद्रित) में इसमें अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन किये गये, जिन्हें ' परिशिष्ट (Annexure) के रुप में संस्करण के प्रारम्भ में जोड़ा गया है। इस संस्करण में अन्य परिवर्तनों के अलावा काल पक्ष के संयोजक चिन्ह डोट के स्थान पर उल्टा उद्धहरण चिन्ह निश्चित किया गया। इस प्रकार द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली आज विश्व की कुछ गिनी चुनी वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धतियों में से एक है।

इसका सप्तम संस्करण स्वच्छन्द पक्षात्मक पद्धति (Freely faceted scheme) के रुप में प्रकाशित हो चुका है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(अ) द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली :

1. एक वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण प्रणाली है।
2. एक परिगणनात्मक वर्गीकरण प्रणाली है।

(ब) प्रणाली के निर्माण की प्रेरणा डॉ रंगनाथन को

1. डब्ल्यू सी. बी. सेयर्स से मिली।
2. मेलविल ड्यूई से मिली।

(स) डॉ. रंगनाथन ने द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली का निर्माण :

1. व्यावहारिक परीक्षण के बाद किया।
2. केवल कल्पना के आधार पर किया।

2. द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति का प्रारूप

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति का छटवां संस्करण (पुनमुद्रित 1963) तीन भागों में विभक्त है.

भाग - 1 नियम

भाग - 2 वर्गीकरण की अनुसूचिया

भाग - 3 आद्य ग्रंथों एवं धार्मिक ग्रंथों की अनुसूचियां।

भाग - 1 (नियम) : इस भाग में द्विबिन्दु वर्गीकरण के प्रयोग संबंधी नियम दिये गये हैं। इस भाग में अध्याय 01 से 08 के अन्तर्गत अनुसूचियों के प्रयोग संबंधी सामान्य नियमों व विभिन्न विधियो (Devices) के प्रयोगों को समझाया गया है। अध्याय 03 ग्रंथांक (Book Number) तया अध्याय संग्रहांक (Collection Number) के नियमों से संबंधित है।

इस भाग का अध्याय - 1 मुख्य वर्गों से संबंधित है । इस भाग के अन्य प्रमुख अध्याय निम्न प्रकार है:

अध्याय 2	सामान्य एकल	(Common Isolate)
अध्याय 3	काल एकल	(Time Isolate)
अध्याय 4	स्थान एकल	(Space Isolate)
अध्याय 5	भाषा एकल	(Language Isolate)
अध्याय 6	दशा संबंध	(Phase Relation)
अध्याय 7	आद्यग्रंथ विधि	(Classic Device)

अध्याय az (Generalia) से z (Law) के अन्तर्गत मुख्य वर्गों के प्रयोग संबंधी नियमों को पृथक् अध्यायों में दिया गया है । प्रत्येक अध्याय में प्रयुक्त पक्षों को एक तालिका (Table) के रूप मे प्रस्तुत किया गया है । अध्याय के अन्त में कुछ बने बनाये वर्गांकों (Ready made class numbers) का भी उल्लेख है ।

भाग- 2 वर्गीकरण की अनुसूचियां :

इस भाग में वर्गीकरण की अनुसूचियां दी गई हैं । अध्याय 02 ग्रंथांक से संबंधित है । यहां ग्रंथांक के लिये प्रयुक्त परिसूत्र तथा रूप पक्ष के लिये निर्मित एकलों का विस्तार से उल्लेख है । अन्य प्रमुख अध्याय निम्न प्रकार हैं :

अध्याय 1	मुख्य वर्ग
अध्याय 2	सामान्य एकलों की अनुसूचियों
अध्याय 3	काल एकल की तालिका
अध्याय 4	स्थान एकल की तालिका
अध्याय 5	भाषा एकल की तालिका
अध्याय 6	दशा संबंधों को प्रदर्शित करने हेतु दी गई तालिका

इसके बाद वाले अध्याय पृथक् - पृथक् मुख्य वर्गों की अनुसूचियों से संबंधित है । जहाँ मुख्य वर्ग का परिसूत्र मय उनके संयोजक चिन्हों में दिया गया हैं तथा प्रत्येक पक्ष से संबंधित एकल संख्याओं का उल्लेख किया गया है ।

इस भाग के अन्त में एक अनुक्रमणी दी गई है जिसका व्यवस्थापन वर्णक्रमानुसार (Alphabetical) है ।

इस भाग में भौगोलिक एकलों से संबंधित एक अनुक्रमणी भौगोलिक विभाजनों (Geographical Divisions) के बाद दी गई है । यह भी वर्णक्रमानुसार व्यवस्थित है ।

मुख्य वर्ग I Botany तथा K Zoology के व्यक्तित्व पक्ष के लिये भी पृथक् पृथक् अनुक्रमणिया 'संबंधित अध्यायों के बाद दी गई है । इनका व्यवस्थापन भी वर्णक्रमानुसार है । इन अध्यायों से संबंधित विभाजनों का उल्लेख अन्तिम मुख्य अनुक्रमणिका में नहीं किया गया है ।

भाग - 3 आद्यग्रन्थों एवं पवित्र धार्मिक ग्रंथों की अनुसूचियाँ : -

इस भाग में महत्त्वपूर्ण ग्रंथों (दर्शन, साहित्य, आयुर्वेद) इत्यादि के पूर्व निर्मित वर्गांक दिये गये हैं।

परिशिष्ट : - पुनमुद्रित छठे संस्करण के प्रारम्भ में ही छठे संस्करण में किये गये अनेक संशोधनों परिवर्तनों एवं मुद्रण संबंधी त्रुटियों तथा उनके सुधारों को पृष्ठवार दिया गया है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(अ) द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में :

1. केवल एक ही अनुक्रमणी है ।
2. तीन अनुक्रमणियाँ है ।

(ब) भौगोलिक एकलों का उल्लेख :

1. अन्तिम अनुक्रमणिका में किया गया है ।
2. अन्तिम अनुक्रमणिका में नहीं किया गया है ।

(स) भाषा एकलों का उल्लेख :

1. अन्तिम अनुक्रमणिका में किया गया है ।
2. अन्तिम अनुक्रमणिका में नहीं किया गया है ।

(द) भाग 2 में

1. केवल विभिन्न विषयों की अनुसूचियों का उल्लेख है ।
2. विभिन्न विषयों की अनुसूचियों के अलावा अन्य सामान्य एकलों का भी उल्लेख है

3. द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली की विशेषताएं :

3.1 पाँच मूलभूत श्रेणियो पर आधारित :

(Based on Five Fundamental Categories)

डॉ. रंगनाथन की द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति पाँच मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा पर आधारित है । इस अभिधारणा के अनुसार प्रत्येक विषय अगणित विचारों का समूह होता है किन्तु इन सबका विघटन हम पाँच श्रेणियों के रूप में कर सकते हैं । अर्थात् इन अगणित विचारों को हम अध्ययन की दृष्टि से केवल पाँच पहलुओं में विभाजित कर सकते हैं, इससे अधिक में नहीं । किसी विषय के ये पाँच पहलू ही पाँच मूलभूत श्रेणियां है । ये श्रेणियाँ व्यक्तित्व (Personality) अथवा (P) पदार्थ (Matter) अथवा (M) ऊर्जा (Energy) अथवा (E) देश (Space) अथवा (S) तथा काल (Time) अथवा (T) है । इनका विवरण संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है

व्यक्तित्व श्रेणी विषय का सार भाग होती है । विषय को सुनिश्चित आधार प्रदान करने वाली यह सर्वाधिक महत्व की श्रेणी है । अन्य श्रेणियों की कार्यान्वित इस श्रेणी पर निर्भर करती है ।

इस श्रेणी को पहचानना अपेक्षाकृत कठिन है अत : इसके लिये अवशेष विधि का प्रयोग किया जाता है अर्थात् काल, देश, ऊर्जा एवं पदार्थ पक्षों के बाद जो अवशेष रहता है वह व्यक्तित्व पक्ष होता है ।

इस श्रेणी का प्रयोग पृथक् - पृथक् मुख्य वर्गों में पृथक् - पृथक् रूप में हुआ है । जैसे मुख्य वर्ग I Botany में पौधों के तथा K Zoology में पशुओं के प्राकृतिक वर्गों को प्रदर्शित करने के लिये तथा मुख्य वर्ग L Medicine में मानव शरीर के अंग प्रत्यंगों को प्रदर्शित करने के लिये किया गया है । इसके लिये संयोजक चिन्ह कोमा का प्रयोग किया जाता है। किन्तु मुख्य वर्ग के तुरन्त बाद प्रयोग होने पर इसके लिये किसी प्रकार के संयोजक चिन्ह की आवश्यकता नहीं होती।

पदार्थ श्रेणी से अभिप्राय पदार्थ के रूप में प्रयुक्त होने वाली वस्तुओं से है । जैसे कागज व लकड़ी पदार्थ हैं तथा इनसे निर्मित वस्तुऐं भी पदार्थ की श्रेणी में ही आयेंगी । इस श्रेणी का प्रयोग गिने चुने मुख्य वर्गों में हुआ है जैसे पुस्तकालय विज्ञान में हस्तलिखित ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ पदार्थ पक्ष हैं । इसी प्रकार M7 Textile के लिये सूत, ऊन, जूट पदार्थ हैं तथा X61Money को निर्मित करने वाली धातु व सामग्री, जैसे सोना, चाँदी, कागज इत्यादि पदार्थ हैं । इसके लिये संयोजक चिन्ह सेमीकोलन का प्रयोग किया जाता है

उर्जा श्रेणी वस्तुत : एक समस्या पक्ष है । इसका संबंध कार्यकलापों, गतिविधियों इत्यादि से है । इसका प्रयोग अधिकांश मुख्य वर्गों में हुआ है । जैसे मुख्य वर्ग 2 Library Science में पुस्तकालयों के कार्य, उनका संगठन इत्यादि के रूप में, मुख्यवर्ग Y Sociology में समाज की गतिविधियों, समस्याओं के रूप में, तथा मुख्य वर्ग V History में सरकार की नीतियों, कार्यों, नागरिकों के अधिकार कर्तव्यों के रूप में । इसका संयोजक चिन्ह कोलन है ।

मूलभूत श्रेणी देश का प्रयोग भौगोलिक क्षेत्र जैसे महाद्वीप, देश, शहर के रूप में तथा प्राकृतिक विभाग जैसे नदी, पर्वत, डेल्टा, घाटी के रूप में हुआ है । इसका संयोजक चिन्ह डोट है । इसके लिये भौगोलिक एकल सारणी (Geographical Isolate Table) का प्रयोग किया जाता है ।

मूलभूत श्रेणी काल सबसे कम मूर्त है । इसे पहचानना सबसे आसान है । इसका प्रयोग शताब्दी, शताब्दी, वर्ष, माह इत्यादि के रूप में हो सकता है ।पृथ्वी की गति से बनने वाले मौसम जैसे शीतऋतु, ग्रीष्मऋतु इत्यादि के लिये भी इसका प्रयोग किया जा सकता है ।

इसका संयोजक चिन्ह उल्टा उद्धहरण चिन्ह है । इसके लिये काल एकल सारणी (Time Isolate Table) का प्रयोग किया जाता है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही और गलत बताइए

(अ) पाँच मूलभूत श्रेणियों की विचार धारा ने :

(1) वर्गीकरण प्रक्रिया को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया ।

(2) वर्गीकरण प्रक्रिया को जटिल बना दिया ।

(ब) मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व को पहचानना :

(1) सरल है ।

(2) कठिन है ।

(स) मूलभूत श्रेणी ऊर्जा का योजक चिन्ह है

(1) कोलन (:)

(2) सेमीकोलन (;)

(3) कोमा (,)

(द) निम्नलिखित में से कौन, पदार्थ पक्ष को सूचित करते हैं

(1) कागज हाँ/नहीं

(2) कपड़ा हाँ/नहीं

(3) लकड़ी हाँ/नहीं

(4) ऊन हाँ/नहीं

(5) पुस्तक हाँ/नहीं

3.1.1 आवर्तन एवं स्तर (Rounds and Levels) द्विबिन्दु वर्गीकरण की एक अन्य विशेषता पक्षों का आवर्तन एवं स्तर के रूप में प्रयोग है । डॉ. रंगनाथन की एक और अभिधारणा के अनुसार (P) तथा (M) पक्षों की एक से अधिक बार आवृति हो सकती है ।

पक्षों के आवर्तन : किसी पक्ष का वर्गांक में प्रथम बार का प्रयोग उसका प्रथम आवर्तन कहलाता है किन्तु यदि उसका दूसरी बार प्रयोग होता है तो वह उस पक्ष का दूसरा आवर्तन तथा तीसरी बार का प्रयोग तीसरा आवर्तन कहलाता है ।

(E) पक्ष के आवर्तन : निम्नांकित उदाहरण में (E) पक्ष दो आवर्तनों में प्रयुक्त हुआ है । प्रथम। आवर्तन (E) तथा दूसरा (2E) के रूप में व्यक्त किया गया है । इसके लिये संयोजक चिन्ह कोलन का प्रयोग किया गया है ।

Treatment of heart disease L 32 : 4:6 (यहाँ disease (E) पक्ष है तथा (Treatment) (2P) पक्ष)

(P) व (M) पक्षों के आवर्तन : (P) पक्ष व (M) पक्ष की पहली आवृत्ति ऊर्जा पक्ष से पहले होती है । इनकी दूसरी आवृति (E) पक्ष के प्रथम आवर्तन के बाद होती है । (E) पक्ष के प्रथम आवर्तन के बाद यदि (P) पक्ष आता है तो वह (P) पक्ष का दूसरा आवर्तन और यदि (2E) पक्ष के बाद आता है तो वह (P) पक्ष का तीसरा आवर्तन कहलाता है । उदाहरणार्थ

Treatment of eye inflamation by injection (P) (E) (2P) (2E) (3P)
L185:415:616

यहाँ (E) पक्ष के बाद (P) की प्रथम आवृति (2P) के रूप में व द्वितीय आवृत्ति (3P) के रूप में अभिव्यक्त हुई है । वस्तुत : ये (P) पक्ष के दूसरे व तीसरे आवर्तन हैं ।

(M) पक्ष के आवर्तन : (M) पक्ष का भी (E) पक्ष के बाद प्रयोग हो सकता है । यह (2M) पक्ष कहलाता है तथा (2E) पक्ष के बाद का प्रयोग (3M) पक्ष कहलाता है । इनके लिये संयोजक चिन्ह सेमीकोलन का प्रयोग किया जाता है

Iron metabolism in plants I : 33; 182 2M

Treatment by Saline water injection L:4:616; 41171 3M

(S) व (T) पक्षों के आवर्तन नहीं होते ।

स्तर : किसी पक्ष का एक से अधिक स्तरों में प्रयोग होना उस पक्ष के स्तर कहलाते हैं । द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली में (P) पक्ष, (S) पक्ष तथा (T) पक्ष का स्तरों में प्रयोग हुआ है । (M) पक्ष के भी हो सकते है किन्तु इनका प्रयोग छठे संस्करण में नहीं हुआ है । गहन वर्गीकरण में इनका प्रयोग किया जाता सकता है ।

(P) पक्ष का पहला स्तर (P1) अथवा संक्षेप में (P) कहलाता है । दूसरे, तीसरे, चौथे स्तर क्रमश : (P2), (P3) व (P4) कहलाते हैं । जैसे

King Lear by William Shakespeare (born in 1564 his 10th work)

0111 ,2J64,22

उपरोक्त उदाहरण में (P) पक्ष चार स्तरों में प्रयुक्त हुआ हैं । (P) पक्ष का पहला स्तर भाषा के लिए प्रयुक्त हुआ है। (P2) पक्ष साहित्य के रूप पक्ष के लिए प्रयोग हुआ हैं । (P3) पक्ष लेखक पक्ष के लिए प्रयोग हुआ है । (P4) पक्ष कृति पक्ष है ।

(S) पक्ष अपने चार स्तरों में प्रयुक्त हुआ है । पहला स्तर राजनीतिक विभागों के रूप में, दूसरा स्तर जन संख्यानुसार विभागों के रूप में, तीसरा स्तर दिशानुसार विभागों के रूप में तथा चौथा स्तर प्राकृतिक विभागों के रूप में प्रयुक्त हुआ है । इसके लिये संयोजक चिन्ह डोट का प्रयोग किया जाता है । प्राकृतिक विभागों को संशोधित रूप से परिशिष्ट पृष्ठ 24 पर दिया गया है उदाहरणार्थ

Physical Geography of Mountains of Rajasthan U2.4437.g7

उपरोक्त उदाहरण में (S) पक्ष अपने दो स्तरों में प्रयुक्त हुआ है । पहला राजनीतिक विभाग (4437 = Rajasthan) के रूप में तथा दुसरा प्राकृतिक विभाग (g7=Mountain) के रूप में । नियमानुसार संयोजक चिन्ह डोट का प्रयोग किया गया है ।

(T) पक्ष के दो स्तर होते हैं । पहला स्तर (T) पहल स्तर (T) पक्ष तथा दूसरा स्तर (T2) कहलाता है । इसके लिये संयोजक चिन्ह उल्टे उद्धरण का प्रयोग किया जाता है ।

Rainfall during summer of 1980 U 28 55 ‘N 80’ 6 n3

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(अ) (P) पक्ष के

(1) आवर्तन एवं स्तर दोनों होते हैं।

(2) केवल स्तर होते हैं ।

(ब) (S) व (T) पक्ष के

(1) केवल स्तर होते हैं ।

(2) केवल आवर्तन होते हैं ।

(3) आवर्तन एवं स्तर दोनों होते हैं।

(स) (P) पक्ष के मुख्य वर्ग के बाद प्रयोग होने पर.

(1) संयोजक चिन्ह कोमा का प्रयोग होता है ।

(2) संयोजक चिन्ह का प्रयोग नहीं होता है ।

(द) (M) पक्ष का तीसरा आवर्तन.

(1) (2M) कहलाता है।

(2) (3M) कहलाता है ।

(इ) (P) पक्ष के स्तर

(1) होते हैं ।

(2) नहीं होते ।

3.2 वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण प्रणाली : (Analytico - synthetic Scheme of Classification)

वैश्लेषी संश्लेषणात्मक स्वरूप, द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की एक प्रमुख विशेषता है । परिगणनात्मक पद्धति की अनेक सीमाओं व कमियों के कारण ही द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति का आविष्कार हु आ । इस पद्धति में बने बनाये वर्गांक नहीं होते अपितु वर्गाकार को सर्वप्रथम विषय का विश्लेषण करना पड़ता है । तत्पश्चात् विषय में निहित प्रत्येक पक्ष के लिये पृथक् - पृथक् एकल संख्याएं प्राप्त कर, प्रत्येक पक्ष के लिये निश्चित संयोजक चिन्हों की सहायता से संश्लेषण करना होता है । डॉ. रंगनाथन ने वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति के लिये नौ सोपान बताये हैं ।

डॉ रंगनाथन ने अनुसार किसी प्रलेख का वर्गीकरण करते समय सर्वप्रथम उसकी विषय वस्तु का निर्धारण किया जाता है । निर्धारित विषय वस्तु का उसके पक्षों में विश्लेषण किया जाता है । ये दोनों कार्य वैचारिक धरातल (Idea plane) पर होते हैं । विश्लेषण करते समय निरर्थक शब्दों व पदों को छोड़ दिया जाता है और केवल बीज पदों को रखा जाता है । बीज पदों के नीचे उनसे संबंधित पक्ष का प्रतीक चिन्ह लगा दिया जाता है अर्थात् व्यक्तित्व पक्ष के नीचे (P), पदार्थ पक्ष के नीचे (M) ऊर्जा पक्ष के नीचे (E), देश पक्ष के लिए (S) तथा काल पक्ष के लिये (T) तत्पश्चात् संबंधित पक्षों की एकल संख्याओं को वर्गीकरण सारणियों से प्राप्त कर मूलभूत श्रेणियों के प्रतीकों के सामने प्रदर्शित कर दिया जाता है । इसके बाद इन एकल संख्याओं को (P) (M) (E) (S) (T) के अनुक्रम में व्यवस्थित कर संबंधित संयोजक चिन्हों के प्रयोग के साथ जोड़ दिया जाता है । इस प्रकार वर्गकार किसी भी विशिष्ट विषय की प्रतीक एकल संख्या का निर्माण कर सकता है ।

पूर्वोक्त प्रक्रिया को निम्नलिखित उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है : -Classification of maps in research libraries of India during 1988

उपर्युक्त, शीर्षक में से अनावश्यक. शब्दों को हटाने पर जो बीज पद रहे, वे निम्न प्रकार होंगे:-

Classification maps research libraries of India 1988

बीज पदों के साथ पक्षों के प्रतीक चिन्ह लगाने पर -

(E)	(M(	)P(	)S)	(T(
Classification	Maps	libraries	India	1988
	research			

पक्षों के सामने अनुसूची में दी गई एकल संख्याएं लगाने पर :

Classification	(E)	51
Maps	(M)	17
Research libraries	(P)	36
India	(S)	44
1988	(T)	N88

पक्षों को (P) (M) (E) (S) (T) कम में रखने पर :

(P) (M) (E) (S) (T)

Research libraries maps classification India 1988

मुख्य वर्ग के साथ पक्षों की एकल संख्याएं लगाने पर

(BC)	(P)	(M(	)E)	(S(	)T(
Library Science	Research Libraries	maps	classification	India	1988
2	36	17	51	44	N88

पक्षों की एकल संख्याओं को उनके लिये दिये गये संयोजक चिन्हों से जोड़ने पर

236; 17:51.44. ‘N88 =

Classification of maps in research libraries of India during 1988 हुआ । इस प्रकार एक वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति वर्गाकार को वर्गांक निर्मित करने की पूर्ण स्वायत्तता प्रदान करती है । इस प्रणाली के द्वारा निर्मित वर्गांक, विशिष्ट विषय का पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व करता है| अर्थात् किसी विशिष्ट विषय का वर्गांक, उस विषय का प्राकृतिक भाषा से कृत्रिम भाषा में अनुवाद है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(अ) वैश्लेशी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति में -

(1) विषय वस्तु का विश्लेषण किया जाता हे ।

(2) विषय वस्तु का विश्लेषण करना आवश्यक नहीं है ।

(ब) वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति के लिये डॉ. रंगनाथन ने -

(1) पाँच पक्षों का प्रावधान किया है ।

(2) छ : पक्षों का प्रावधान किया है ।

(स) वैश्लेषी संश्लेषणात्मक पद्धति में -

(1) पूर्वनिर्मित वर्गांक होते हैं ।

(2) पूर्वनिर्मित वर्गांक नहीं होते हैं ।

(द) वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति में विभिन्न पक्षों को -

(1) एक निश्चित अनुक्रम में रखना पड़ता है ।

(2) एक निश्चित अनुक्रम में रखना आवश्यक नहीं है ।

3.3 वैचारिक पद्धतियां एवं विशिष्ट वर्ग (Systems and Specials)

वैचारिक पद्धतियां : वैचारिक पद्धतियों का प्रावधान द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की अपनी एक अन्य विशेषता है जो दूसरी पद्धतियों में नहीं है । इनके प्रावधान से किसी विषय का अध्ययन उस पर प्रचलित विशिष्ट. दृष्टिकोण अथवा विचार धाराओं (School of thoughts) के आधार पर करना संभव है । डॉ. रंगनाथन ने अनेक मुख्य वर्गों में वैचारिक पद्धतियों का प्रावधान किया है|

इनकी एकल संख्याओं का निर्माण कालक्रम विधि (CD) के आधार पर किया जाता है । काल की प्रतीक एकल संख्या वह शताब्दी या शताब्दी या वर्ष अंक होता है जिसमें उस विशिष्ट दृष्टिकोण अथवा विचारधारा का उद्भव अथवा आविष्कार हुआ ।

इनका प्रयोग मुख्य वर्ग की तरह होता है और मुख्य वर्ग के सभी पक्षों की एकल संख्याओं का प्रयोग इनके साथ किया जा सकता है ।

ऐसा करते समय संबंधित पक्षों के संयोजक चिन्ह लगाये जाने हैं । उदाहरणार्थ:

Ayurvedic treatment of heart disease L B 32:4:6

विशिष्ट कार्य: ये ऐसे वर्ग हैं जो अपनी कतिपय विशेषताओं अथवा गुणों के कारण मुख्य सामान्य विषय की तुलना में विशिष्टता प्राप्त किये हुये है । इन वर्गों के प्रावधान से किसी विषय का अध्ययन अधिक सूक्ष्मता से किया जा सकता है । मुख्य वर्ग G Biology में Embryo Child ,old age ;तथा वर्ग X Economics में Small scale ,Large scale मुख्य वर्ग Agriculture में Dry Farming इत्यादि ऐसे ही विशिष्ट वर्ग है ।

मुख्य वर्गों के परिसूत्र में इनका व्यवस्थापन (SmF) पक्ष के बाद तथा (P) पक्ष के पूर्व किया जाता है । इनका प्रयोग स्वतंत्र रूप से भी किया जा सकता है । इसके लिये संयोजक चिन्ह कोमा का प्रयोग किया जाता है । उदाहरणार्थ

Small scale textile industry = X 98 ,8 (M7)

Small scale Cooperative Textile Industry XM,9B.8 (M7)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये :

(अ) (SpF) पक्ष को -

(1) (SmF) से पूर्व व्यवस्थित किया जाता है ।

(2) (SmF) के बाद व्यवस्थित किया जाता है ।

(ब) (SpF) पक्षों का प्रयोग मुख्य वर्ग की तरह -

(1) स्वतन्त्र रूप से किया जा सकता है ।

(2) स्वतन्त्र रूप से नही किया जा सकता है ।

(स) (SmF) व (P) पक्षों के बीच -

(1) किसी प्रकार के संयोजक चिन्ह की आवश्यकता नहीं होती ।

(2) इनके बीच संयोजक चिन्ह लगाना आवश्यक होता है ।

(द) (SmF) पक्ष की एकल संख्याओं का निर्माण -

(1) काल क्रम विधि से किया गया है ।

(2) वर्णानुसार विधि से किया गया है ।

3.4 अंकन (Notation)

किसी वर्गीकरण प्रणाली में प्रयुक्त पदों का प्रतिनिधित्व कुछ प्रतीकों द्वारा किया जाता है । किसी वर्गीकरण पद्धति की सफलता व असफलता बहुत कुछ सीमा तक इन प्रतीकों की संख्या, उनके आकार प्रकार तथा युक्तियुक्त प्रयोग पर निर्भर करती हैं ।

3.4.1 मिश्रित अंकन (Pure Notation)

द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली में मिश्रित अंकनों का प्रयोग किया गया है । उदाहरणार्थ :

अरेबिक अंक	0-9	का प्रयोग कुछ मुख्य वर्गों तथा मुख्य वर्गों के
एकलों के निर्माण हेतु ।		
रोमन बड़े अक्षर	A - Z	का प्रयोग मुख्य वर्गों के निर्माण हेतु ।
रोमन छोटे अक्षर	a - z	का प्रयोग सामान्य एकलों के प्रयोग हेतु ।
ग्रीक अक्षर डेल्टा	Δ	का प्रयोग मुख्य वर्ग आध्यात्मिक ज्ञान एवं
रहस्यवाद के लिये		
गणितीय चिन्ह (आडीरेखा(	-	का प्रयोग अध्यारोपण विधि)SID (के लिये
विरामादि चिन्ह		
		का प्रयोग पाँच मूलभूत श्रेणियों के संयोजक चिन्हों के रूप में
लघु कोष्ठक	) (	विषय विधि)SDके लिये (
अग्रमुखी तीर	↗	भविष्यत काल को प्रदर्शित करने हेतु
पश्चमुखी तीर	←	भूतकाल को प्रदर्शित करने हेतु

अंक 9 का प्रयोग अष्टक विधि के रूप में किया गया है अर्थात् इस अंक को खाली छोड़ दिया गया है ताकि आवश्यकता अनुसार इसका प्रयोग किया जा सके। अंक 9 की भांति ही रोमन

अक्षर 3 : Zको खाली छोड़कर इसका प्रयोग सेक्टर विधि के रूप में कर पंक्ति में असीमित ग्राह्यता पैदा की जा सकती है ।

3.4.2 विस्तृत आधार प्रदान करने वाला अंकन:

मिश्रित अंकन के प्रयोग से इस प्रणाली का आधार विस्तृत बना है । अर्थात् ज्ञान जगत को विभाजित करने के लिये प्रथम श्रेणी की एकल पंक्तियों के लिये अधिक स्थान मिले हैं । यही कारण है कि इस प्रणाली में 40 से अधिक मुख्य वर्गों का प्रावधान हो सका है । मिश्रित अंकन के कारण अनेक प्रकार की विधियों का प्रावधान भी हो सका है ।

3.4.3 स्मृति सहायक अंकन (Mnemonic Notation)

द्विबिन्द वर्गीकरण का अंकन स्मृति सहायक है । अर्थात् एक ही विचार व धारणा या उससे मिलते जुलते विचारों के लिये एक ही सुनिश्चित अंक का प्रयोग किया गया है । उदाहरणार्थ, अंक । का प्रयोग God ,Unity World के लिये, अंक 2 का प्रयोग Morphology , Constitution , Form ,Structure इत्यादि के लिये किया गया है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये :

(अ) द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में :

(1) मिश्रित अंकों का प्रयोग है ।

(2) उसमें केवल एक ही प्रकार के अंकों का प्रयोग हुआ है ।

(ब) द्विबिन्दु वर्गीकरण का आधार.

(1) अत्यन्त संकुचित है ।

(2) अत्यन्त विस्तृत है ।

(स) मिश्रित अंकन के द्वारा

(1) विधियों का प्रावधान नहीं किया जा सकता ।

(2) विधियों का प्रावधान किया जा सकता है ।

3.5 विधियां (Devices)

द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली में मिश्रित अंकन का प्रयोग होने के कारण इसमें अनेक प्रकार की विधियों का प्रावधान किया गया है । विधियों के प्रावधान से मुख्य वर्ग के पक्ष अथवा वर्ग पंक्ति में नये एकलों का निर्माण करना संभव है तथा पुराने एकलों के वाच्यार्य को भी तीक्ष्ण बनाया जा सकता है । विधियों के प्रावधान से श्रृंखला एवं पंक्ति में असीमित-ग्राहचता का गुण भी प्रणाली में उत्पन्न हो सका है ।

इस प्रणाली में जिन. प्रमुख विधियों का समावेश हुआ है, वे निम्न प्रकार है

काल क्रम विधि	(CD)
भौगोलिक विधि	(GD)
विषय विधि	(SD)
वर्णक्रम विधि	(AD)

अध्यारोपण विधि (SID)

स्मृति सहायक अंक विधि (MD)

कालक्रम विधि के प्रयोग द्वारा किसी भी वस्तु या सत्ता की एकल संख्या को उसके जन्म वर्ष, उद्भव. आविष्कार व प्रारम्भ के काल के आधार पर विशिष्टता प्रदान की जा सकती है। काल की प्रतीक संख्या काल सारणी (अध्याय 3) से प्राप्त कर बिना किसी संयोजक चिन्ह के सीधी जोड़ दी जाती है। इस विधि का प्रयोग मुख्य वर्ग O Literature में लेखक पक्ष को निर्मित करने में, मुख्य वर्ग V History में विभिन्न प्रकार राजनीतिक दलों के वर्गांक बनाने में तथा अनेक मुख्य वर्गों में वैचारिक पद्धतियों को प्रदर्शित करने में हुआ है ।

उदाहरणार्थ :

LB Ayurveda

SM Experimental Pyschology

CN Theory of Relativity

भौगोलिक विधि के प्रयोग द्वारा किसी एकल संख्या को भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर विशिष्टता प्रदान की जा सकती है । भौगोलिक क्षेत्र को देश, राज्य, प्रदेश व शहर के रूप में आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाया जा सकता है । संबंधित एकल संख्याऐं भौगोलिक सारणी से प्राप्त कर वांछित वर्ग संख्या के रूप में सीधी जोड़ दी जाती है ।

History of Germany V55

French Law Z53

विषय विधि का प्रयोग करते समय वांछित एकल संख्या के लिये निर्माण के लिये दूसरे मुख्य वर्ग से उपयुक्त एकल संख्या प्राप्त कर ली जाती है । संबंधित मुख्य वर्ग के अन्तर्गत वांछनीय एकल संख्या न दी हुई होने के कारण ऐसा करना पड़ता है ।

इसका संयोजक चिन्ह लघु कोष्ठक है । लघु कोष्ठक में दूसरे मुख्य वर्ग से लाई हुई एकल संख्या को मय उसके मुख्य वर्ग के प्रतीक चिन्ह के रखना होती है । उदाहरणार्थ :

Law Library 24 (Z)

Textile Industry X8 (M7) इत्यादि

वर्णक्रम विधि का प्रयोग विद्यमान एवं वैचारिक सत्ताओं या वस्तुओं की प्रतीक एकल संख्याओं के वर्गांक निर्मित करने के लिये किया जा सकता है । डॉ. रंगनाथन के अनुसार इस विधि का प्रयोग उसी स्थिति में किया जाना चाहिये जब किसी अन्य विधि द्वारा सहायक अनुक्रम प्राप्त न हो सके ।

जिस व्यक्ति, विषय, वस्तु, सत्ता एवं सत्व को व्यक्तित्व प्रदान करना हो उसके नाम का प्रथम अक्षर अंग्रेजी वर्णमाला के बड़े अक्षर के रूप में, बिना किसी संयोजक चिन्ह के, संबंधित एकल संख्या के साथ जोड़ दिया जाता है । व्यक्तित्व प्रदान करने की दृष्टि से अक्षरों की संख्या में वृद्धि की जा सकती है । इसका प्रयोग फसलों की किस्मों के लिये, वाहनों के ब्राण्ड नामों के लिये किसी संस्था व संस्थान को व्यक्तित्व प्रदान करने के लिये तथा किसी नदी, पहाड़ आदि के नाम को विशिष्टता प्रदान करने हेतु किया जाता है । उदाहरणार्थ.

Altas Cycle -- D 5125 A

Avon Cycle -- D 5125 AV

इसी प्रकार अध्यारोपण विधि के प्रयोग द्वारा एक ही पक्ष की दो एकल संख्याओं को वर्गांक में एक साथ प्रदर्शित किया जा सकता है । दो एकलों में से एक प्रधान और दूसरा गौण होता है । प्रधान एकल को पहले व गौण एकल को बाद में रखा जाता है । उदाहरणार्थ :

Rural woman -Y 15-31

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये -

(अ) विधियों के प्रावधान से द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली में :

(1) पंक्ति एवं श्रृंखला में ग्राह्यता उत्पन्न हो गई है ।

(2) पंक्ति एवं श्रृंखला में ग्राह्यता नष्ट हो गई है ।

(ब) विधियों के द्वारा नई एकल संख्याओं का -

(1) निर्माण नहीं हो सकता ।

(2) निर्माण हो सकता है ।

(स) विधियों के द्वारा पुराने एकलों के वाच्यार्थ को -

(1) अधिक तीक्ष्ण बनाया जा सकता है ।

(2) अधिक तीक्ष्ण नहीं बनाया जा सकता ।

(द) द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में विधियों का प्रावधान -

(1) मिश्रित अंकन के कारण संभव हुआ है ।

(2) मिश्रित अंकन के कारण संभव नहीं हुआ है ।

(इ) विधियों के कारण -

(1) अनुसूचियों के आकार में वृद्धि हुई हैं ।

(2) अनुसूचियों का आकार छोटा बन गया है। ।

3.6 दशा संबंध (Phase Relation)

आज के युग में किसी विषय का एकाकी अध्ययन संभव नहीं है । विषयों की पारस्परिक निर्भरता को वर्गांक के माध्यम से प्रस्तुत करने के लिये द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में विशेष प्रावधान किया गया है । डॉ. रंगनाथन के अनुसार तीन स्तर के दशा संबंध हो सकते हैं :

(1) अन्त : विषय दशा संबंध

(2) अन्त : पक्ष दशा संबंध

(3) अन्त : पंक्ति दशा संबंध

जब संबंध दो विषयों के मध्य स्थापित किये जाते हैं तो वे अन्त : विषयी दशा संबंध कहलाते हैं । ये संबंध एक मूल विषय का दूसरे मूल विषय के साथ, एक मूल विषय का किसी संयुक्त विषय के साथ किसी संयुक्त विषय का अन्य किसी संयुक्त विषय के साथ हो सकते हैं । उदाहरणार्थ.

Relation between Physics and Chemistry COaE

Labour problems and social welfare X:90aYX

जब संबंध एक मुख्य वर्ग के किसी एक पक्ष की ही, दो समकक्ष एकल संख्याओं (Array Isolates) के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है तो वह अन्त : पक्ष दशा संबंध कहलाता है । उदाहरणार्थ :

Relation between Jainsm and Buddhism Q 30j4

Social condition of India and PakistanY : 440j 44Q7

जब संबंध एक ही पक्ष के दो -शृंखला एकलों (Chain Isolates) के मध्य हो तो वह अन्त : पंक्ति दशा संबंध कहलाता है । उदाहरणार्थ : -

Rural and Urban Sociology Y310t3

ये संबंध (P) (M) (E) व (S) पक्षों के श्रृंखला एकलों के मध्य दर्शाये जा सकते हैं । उपरोक्त तीन स्तरों के दशा संबंध निम्नलिखित पाँच प्रकार के हो सकते हैं.

General	(सामान्य)
Bias	(झुकाव)
Comparison	(तुलनात्मक)
Differential	(अन्तर वाले)
Influencial	(प्रभाव वाले)

द्विबिन्दु वर्गीकरण के अध्याय 6 के अन्तर्गत एक तालिका दी गई है जहां उपर्युक्त प्रकार के संबंधों को प्रदर्शित करने के लिये पृथक् - पृथक् संयोजक चिन्हों का प्रावधान है ।

Physics and Chemistry	Coc E
A comparison	
Physics biasing Chemistry	Cob E
Physics and Chemistry differenciated	Cod E
Physics influencing Chemistry	Eog C

इसी प्रकार के संबंध एक मुख्य वर्ग के एक ही पक्ष की दो समकक्ष एकल संख्याओं के मध्य प्रदर्शित किये जा सकते हैं ।

Tort and Crime -differenciated Z, 4 on 5

इसी प्रकार के संबंध एक ही पक्ष मे दो शृंखला एकलों के मध्य भी प्रदर्शित किये जा सकते हैं :

Comparison of Psychology of S21 on 5
adolescent boys and girls

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइए

(अ) द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में :

(1) पाँच स्तर के दशा संबंध बताये हैं ।

(2) तीन स्तर के दशा संबंध बताये है ।

(ब) किसी मुख्य वर्ग के एक पक्ष के ही दो समकक्ष एकलों के मध्य का संबंध

(1) अन्त : पंक्ति दशा संबंध कहलाता है ।

(2) अन्त : विषयी दशा संबंध कहलाता है ।

(स) अन्त : विषयी दशा संबंध :

(1) दो विषयों के बीच का संबंध होता है ।

(2) दो समकक्ष एकलों के बीच का संबंध, होता है ।

(द) डॉ. रंगनाथन ने अध्याय 6 के अन्तर्गत पाँच प्रकार के दशा संबंधों के लिये.

(1) पृथक् - पृथक् संयोजक चिन्हों का प्रावधान किया है ।

(2) सबके लिये एक ही प्रकार के संयोजक चिन्हों का प्रावधान है ।

3.7 ग्रंथांक एवं संग्रहांक (Book Number and Collection Number)

ग्रंथांक : वर्गांक (Class Number) के द्वारा प्रलेखों को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाता है किन्तु जब एक ही विशिष्ट विषय की अनेक पुस्तकें हों तो उन्हें वर्गांक के द्वारा सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित नहीं किया जा सकता है।

डॉ. रंगनाथन ने अपनी द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में ग्रंथांक का प्रावधान कर, एक ही विशिष्ट विषय की अनेक पुस्तकों को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करने के कार्य को संभव बना दिया है|

ग्रंथांक के परिसूत्र के द्वारा एक ही विशिष्ट विषय की असंख्य पुस्तकों को पृथक् - पृथक् व्यक्तित्व प्रदान किया जा सकता है । इस परिसूत्र का निर्माण, पुस्तक के विशिष्ट विषय के अलावा, उसमें निहित अन्य विशेषताओं के आधार पर किया गया है । ये विशेषताऐ - पुस्तक की भाषा, रूप, प्रकाशन वर्ष, खण्ड संख्या, प्रतिसंख्या तथा पुस्तक के भौतिक स्वरूप से संबंधित अन्य विशेषताएँ हो सकती है । ग्रांथांक का परिसूत्र मय संयोजक चिन्हों के निम्न प्रकार है:

(L))F( )Y( )A ( )V))S( )C) (EVN(

)L)	Language	(भाषा(
(F (	Form	(रूप)
(Y (	Year of Publication	प्रकाशन) (वर्ष
(A)	Accession Part of the Book Number	परिग्रहण) (संख्या
)V)	Volume Number	(खंड अंक(
(S)	Supplimentary Number	(पूरक संख्या(
(C)	Copy Number	(प्रति संख्या(

(EVN) Evaluation Number (समीक्षा अंक(

उक्त परिसूत्र द्वारा एक ही विशिष्ट विषय की असंख्य पुस्तकों को, उनकी भाषा, उनके रूप पक्ष (पुस्तक किस रूप में लिखी गई है - नाटक, कहानी, वाद-विवाद इत्यादि), प्रकाशन वर्ष, प्रति संख्या इत्यादि मे पृथकता प्रदान की जा सकती है । इस प्रकार, जो कार्य वर्गांक द्वारा पूर्ण रूप से नहीं किया जा सकता उसे ग्रंथांक के द्वारा पूर्ण दक्षता से किया जा सकता है । इसी लिये ग्रंथांक को वर्गांक का पूरक कहा गया है ।

संग्रहांक:

पुस्तकालय में उपलब्ध पाठ्य- सामग्री के उपयोग को ध्यान में रखकर तथा प्रलेखों के आकार प्रकार की भिन्नता को दृष्टिगत रखते हु ये अनेक बार उन्हें विच्छेद क्रम में रखना भी उपयोगी रहता है । उदाहरणार्थ - दुर्लभ प्राप्य पुस्तकें , हस्तलिखित ग्रंथ, कलात्मक ग्रंथ, पाठ्य पुस्तकें, संदर्भ ग्रंथ. ग्रामोफोन रेकार्डस इत्यादि ग्रंथों के संग्रह को विशिष्टता प्रदान करने की दृष्टि से एक विशिष्ट प्रकार के प्रतीक चिन्ह द्वारा दर्शाया जाता है । ऐसा करने पर उन्हें पुस्तकालय के किसी भी कक्ष में, उपयोग की दृष्टि मे व्यवस्थित किया जा सकता है । ये प्रतीक चिन्ह ही संग्रहांक कहलाते है तथा इन्हें ग्रंथांक के साथ ही लिखा जाता है ।

डॉ. रगंनाथन ऐसे कुछ प्रतीक चिन्हों का उल्लेख अपनी वर्गीकरण प्रणाली के नियम भाग के अध्याय 04 (पृष्ठ 1.18) पर किया है । उदाहरणार्थ :

वृहद्कार ग्रंथों के लिये	ग्रंथांक को उपरि रेखांकित करना
छोटे ग्रन्थों के लिये	ग्रंथांक को अधो रेखांकित करना
असामान्य ग्रंथों. के लिए	उपरि एवं अद्यों रेखांकित करना इत्यादि ।

इसी प्रकार

वाचनालय की पुस्तकों के लिए	RR
पत्र पत्रिका संग्रह के लिए	PC चिन्हों का प्रयोग किया जाना है।

शैक्षणिक विभागों की पुस्तकों के लिये भी इसी प्रकार पृथक् -पृथक् प्रतीक चिन्ह निर्मित किये है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइए

(अ) ग्रंथांक वर्गांक का :

(1) पूरक है ।

(2) पूरक नहीं हे ।

(ब) ग्रंथांक के परिसूत्र के प्रयोग द्वारा पुस्तकालय में असंख्य प्रलेखों को

(1) पृथक् - पृथक् व्यक्तित्व प्रदान किया जा सकता है ।

(2) पृथक् -पृथक् व्यक्तित्व प्रदान करना संभव नहीं ।

(स) पुस्तकालयों के विशिष्ट संग्रहों के लिये

(1) विच्छेद क्रम उपयोगी नहीं है ।

(2) विच्छेद क्रम उपयोगी है ।

3.8 सामान्य एकल (Common Isolates)

डा. रगंनाथन ने अपनी द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली में सामान्य एकलों का प्रयोग बड़े सुनियोजित तरीके से किया है । छठवें संस्करण के अध्याय 2 में इनके लिये एक पृथक् सारणी दी गई है जहां प्रत्येक श्रेणी के सामान्य एकलों का मय उनके परिसूत्र के उल्लेख है ।

सामान्य एकल ऐसे एकल होते हैं जिनका प्रयोग पुस्तकालय वर्गीकरण प्रणाली में किसी एक पद को एक ही प्रतीक संख्या द्वारा प्रदर्शित करने के लिये किया जाता है चाहे उसका प्रयोग किसी भी मुख्य वर्ग में क्यों न हुआ हो ।

द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली में तीन प्रकार के सामान्य एकलों का उल्लेख है :

(1) ग्रंथ के वर्गांक से संबंधित सामान्य एकल ।

(2) ग्रंथांक से संबंधित सामान्य एकल ।

(3) संग्रहांकों से संबंधित सामान्य एकल ।

वर्गांकों के लिये प्रयुक्त सामान्य एकलों को प्रमुख रूप से दो श्रेणियों में बांटा गया है.

(1) पूर्ववर्त्ती सामान्य एकल (Anteriorising Common Isolates)

(2) परवर्त्ती सामान्य एकल (Posteriorising Common Isolates)

पूर्ववर्त्ती सामान्य एकल

पूर्ववर्त्ती सामान्य एकल का प्रयोग बिना किसी संयोजक चिन्ह के किया जाता है । इस श्रेणी के सामान्य एकलों में सूची, शब्दकोष, जीवनी, प्रशासनिक रिपोर्ट इत्यादि शामिल हैं ।

इस श्रेणी के सामान्य एकलों को पुन : तीन भागों में बाँटा गया है ।

(1) पूर्ववर्त्ती सामान्य एकल, जिनका प्रयोग सामान्यत: स्थान पक्ष के पूर्व होता है ।

(2) पूर्ववर्त्ती सामान्य एकल, जिनका प्रयोग केवल स्थान पक्ष के बाद होता है ।

(3) पूर्ववर्त्ती सामान्य एकल, जिनका प्रयोग केवल काल पक्ष के बाद होता है ।

उपर्युक्त श्रेणी के सामान्य एकलो में से जिनका परिसूत्र दिया गया है उसका प्रयोग परिसूत्र के नियमानुसार ही किया जाना चाहिये । उदाहरणार्थ :

Bibliography of Library Science upto 1981 2aN9

यहाँ a के साथ (T) पक्ष का प्रयोग नियमानुसार अन्तिम प्रभावी दशक के रूप में हुआ है । इसी प्रकार :

Administrative report of road transport in Rajasthan X411.4437

परवर्त्ती सामान्य एकल

इस श्रेणी के सामान्य एकलों का प्रयोग उनके लिये निर्धारित संयोजक चिन्हों के साथ ही होता है । अध्याय 2 में इस श्रेणी के दो प्रकारों का उल्लेख है :

(1) परवर्त्ती व्यक्तित्व पक्ष सामान्य एकल ।

(2) परवर्त्ती ऊर्जा पक्ष सामान्य एकल ।

व्यक्तित्व पक्ष सामान्य एकलों का प्रयोग व्यक्तित्व पक्ष के संयोजक चिन्ह कोमा के साथ किया जाता है । इनका प्रयोग सामान्यत : (S) पक्ष के बाद ही होता है । उदाहरणार्थ :

Medical Profession in U.S.A. L.73, b

ऊर्जा सामान्य एकलों का प्रयोग ऊर्जा के संयोजक चिन्ह कोलन के साथ होता है । उदाहरणार्थ

Discussions on higher education T4:f4

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(अ) द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकलों को :

(1) तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है ।

(2) दो श्रेणियों में विभक्त किया गया है ।

(ब) पूर्ववर्त्ती सामान्य एकलों का प्रयोग :

(1) बिना संयोजक चिन्ह के नहीं हो सकता है ।

(2) बिना संयोजक चिन्ह के हो सकता है ।

(स) परवर्त्ती सामान्य एकलों के लिये :

(1) संयोजक चिन्हों की आवश्यकता होती है ।

(2) संयोजक चिन्हों की आवश्यकता नहीं होती है ।

(द) पूर्ववर्त्ती सामान्य एकलों को पुन :

(1) तीन भागों में विभक्त किया गया है ।

(2) दो भागों में विभक्त किया गया है ।

3.9 सैद्वान्तिक आधार

द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली सिद्धान्तों व अभिधाराणाओं पर आधारित है । अनुसूचियों का निर्माण करते समय डॉ. रंगनाथन ने मूलभूत सिद्धान्तों को ध्यान में रखा है । इसकी अनुसूचियों में वर्ग संख्याओं के व्यवस्थापन में सहायक अनुक्रम के सिद्धान्तों की अनुपालना हु ई है यही कारण है कि इसकी अनुसूचियों में वर्गों का व्यवस्थापन तर्क सम्मत एवं वैज्ञानिक आधार लिये हु ये है ।

डॉ. रंगनाथन ने अनेक अभिधारणों के आधार पर अपनी प्रणाली का निर्माण किया है । इनकी पाँच मूलभूत श्रेणियों, पक्ष विश्लेषण, आवर्तन एवं स्तर की अभिधारणा ने वर्गीकरण को नई दिशा प्रदान की हैं । इनकी वैचारिक (Idea) तथा -शाब्दिक (Verbal) स्तरों की अभिधारणा ने वर्गाकार का कार्य अधिक संयत एवं सरल बनाने में सहायता की है । इतना ही नहीं आपने अनुसूचियों का उपयोग करने संबंधी नियम भी बनाये हैं तथा स्थान-स्थान पर आवश्यक निर्देश दिये है जिससे वर्गीकरण के कार्य में एकरूपता आई है तथा वर्गाकार का कार्य अधिक आसान बन गया है ।

वर्गांकों को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करने के लिये क्रमदर्शक मूल्य निश्चित किया है इससे फलकों में पुस्तकों के व्यवस्थापन तथा सूची में कार्डों के व्यवस्थापन का कार्य सुव्यवस्थित हो गया है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइए

(अ) द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति :

(1) केवल सिद्धान्तों पर आधारित है ।

(2) सिद्धान्तों और अभिधारणाओं दोनों पर आधारित है ।

(3) सिद्धान्तों और अभिधारणाओं पर आधारित नहीं है ।

(ब) द्विबिन्द वर्गीकरण पद्धति में वर्गकार के मार्गदर्शन हेतु :

(1) नियमों का विस्तार से उल्लेख है ।

(2) नियम नहीं दिये गये हैं ।

3.9 आद्यग्रंथ एवं पवित्र धार्मिक ग्रंथों का वर्गीकरण

द्विबिन्दु वर्गीकरण के भाग 3 के अन्तर्गत आद्यग्रंथों एवं पवित्र धार्मिक ग्रंथों के बने बनाये वर्गांक दिये गये हैं । इनमें भारतीय दर्शन, भाषा, साहित्य, आर्युवेद चिकित्सा पद्धति से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रंथों का उल्लेख है । ये ग्रंथ विश्व साहित्य की अमूल्य निधि हैं । जो न केवल भारतीय पुस्तकालयों में अपितु विश्व के अन्य देशों के पुस्तकालयों में उपलब्ध है । अत: इनके बने बनाये वर्गांक देना अनेक दृष्टियों से उपयोगी सिद्ध हुआ है । इसमें रामायण, महाभारत, पाणिनी अष्टाध्यायी, बाइबल इत्यादि के वर्गांक दिये गये हैं ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(अ) आद्य ग्रंथों व पवित्र धार्मिक ग्रन्थों के पूर्व निर्मित वर्गांक द्विबिन्दु वर्गीकरण के :

(1) भाग 3 में वर्णित है ।

(2) अनुक्रमणिका में दिये गये हैं ।

(ब) पूर्व निर्मित वर्गांक :

(1) केवल भारतीय दर्शन से संबंधित हैं ।

(2) सभी विषयों से संबंधित हैं ।

4. द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली की समीक्षा

(1) द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति, अपने वैश्लेषी संश्लेषणात्मक गुणों के कारण आधुनिक ज्ञान जगत की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली तथा गतिशील ज्ञान से उत्पन्न विभिन्न नये विषयों को वर्गीकृत कर फलकों में व्यवस्थित करने की चुनौती का सामना करने वाली विश्व की एक मात्र प्रणाली है । यह प्रणाली स्थूल (Macro) तथा सूक्ष्म (Micro) दोनों प्रकार के विचारों की वर्गीकृत करने की सामर्थ्य रखती है ।

(2) इसका अंकन मिश्रित होने के कारण इसमें विभिन्न विधियों का प्रावधान किया गया है, परिणाम स्वरूप इसकी पंक्ति एवं श्रृंखला में असीमित ग्राह्यता का गुण है । इसके अंकन स्मृति सहायक हैं । अत: अनुसूचियों का आकार अति लघु बन गया है । इसके अंकन में सापेक्षता व संश्लेषणात्मकता का गुण भी है ।

(3) पाँच मूलभूत श्रेणियों के प्रावधान तथा आवर्तन एवं स्तरों की अभिधारणा के कारण यह विषयों को गहराई में वर्गीकृत करने में सक्षम है । विश्वविद्यालय एवं शोध पुस्तकालयों के लिये यह अधिक उपयुक्त प्रणाली सिद्ध हुई है । इसके द्वारा सह विस्तृत वर्गांक प्रदान किये जा सकते हैं ।

(4) इसकी अनुक्रमणियां वर्गकार के लिये अत्यन्त सहायक सिद्ध हुई हैं ।

(5) इस प्रणाली में प्रकार का पक्षपात नहीं है । प्राच्य संग्रहों (Oriental Collections) को वर्गीकृत करने में यह प्रणाली विशेष उपयोगी है ।

(6) इनके मुख्य वर्गों का व्यवस्थापन है तथा संबंधित विषयों को एक साथ रखा गया है ।

(7) इसमें वर्गकार को पूर्ण स्वायत्तता है । इस प्रणाली के द्वारा एक विषय का एक ही वर्गांक बनता है ।

उपर्युक्त गुणों के कारण अनेक विद्वानों ने इस प्रणाली की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है :

बी. आई. पामर (B.I.Palmer) ने कहा है कि "यह पद्धति कुछ विषयों में अद्वितीय है " ।

डब्ल्यू. सी. बरविक सेयर्स (W.C.B.Sayers) के अनुसार "द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति ने, विशेष रूप से इसकी विश्लेषण एवं संश्लेषण संबंधी युक्तियों ने आधुनिक वर्गीकरण अध्ययन को अत्यधिक प्रभावित किया है । इनमें अष्टक विधि भी एक हैं'' ।

पूर्वोक्त विशेषताओं के होते हुए भी इस प्रणाली के प्रयोग में निम्नलिखित कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है :

(1) इस पद्धति का अंकन लिखने, पढ़ने, उच्चारण करने मैं अपेक्षाकृत कठिन है । इसके अंकन द्वारा निर्मित वर्गांकों का व्यवस्थापन कठिन है । इसके लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है ।

(2) इस पद्धति के प्रयोग के नियम जटिल हैं । अनेक नियमों को समझकर उनकी व्याख्या करना आसान नहीं हैं।

(3) इसकी अनुक्रमणियों में अनेक त्रुटियां हैं तथा कहीं - कहीं इनके द्वारा अनुसूची में पहुँचना कठिन होता है । पर्यायवाची शब्दों को ढूंढने के लिये समानार्थ शब्दों को नहीं दिया गया है।

5. सारांश (Conclusion)

सारांश में यह कहा जा सकता है कि द्विबिन्दु वर्गीकरण प्रणाली एक वैश्लेषी संश्लेषणात्मक वर्गीकरण प्रणाली है। पक्ष-विश्लेषण तथा पाँच मूलभूत श्रेणियों की अवधारणा के कारण यह गहन वर्गीकरण के लिये भी उपयुक्त प्रणाली सिद्ध हुई है । इस प्रणाली में सिद्धान्तों को महत्व दिया गया है अत: इसका आधार सुदृढ़ है । मिश्रित अंकन के कारण इसकी पंक्ति स्व शृंखला में अमीमित ग्राह्यता का गुण है । स्मृति सहायक अंक ने इस प्रणाली को और भी लोकप्रिय बना दिया है । इस प्रणाली का अभी तक कोई विकल्प नहीं है ।

6. पाठ पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में एक विश्लेषण संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति के सभी गुण विद्यमान हैं, सिद्ध कीजिये।

प्रश्न 2 द्विबिन्दु वर्गीकरण की प्रमुख विशेषताओं पर एक लेख लिखिये ।

प्रश्न 3 द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की किन्हीं दो विशेषताओं को सोदाहरण समझाइये ।

7. संदर्भ ग्रंथों की सूची

1. Parkhi, R.S: Library Classification: Evolution of a dynamic theory, Delhi, Vikas, 1972.
2. Ranganathan, S.R.: Colon Classification, Ed. 6 (Reprinted, 1963)
3. Srivastava, A.P.: Theroy of Knowledge Classification. 1964. New Delhi, Laxmi Book Store.
4. Tripathi, S.M.: आधुनिक ग्रंथालय वर्गीकरण; सैद्धान्तिक विवेचन 1976, आगरा, श्रीराम मेहरा ।
5. दवे, राजेन्द्र कुमार: द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति एवं वर्गकार, जोधपुर, किरण, 1988, पृ. 1-6
6. भार्गव, जी.डी. : ग्रंथालय वर्गीकरण, भोपाल, मध्यप्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1985
7. माड़ीवाले, द.ब.: द्विबिन्दु वर्गीकरण, दिल्ली, आत्माराम, 1965.

कोर्स- 1 A: पुस्तकालय वर्गीकरण-सिद्धान्त

इकाई - 3 (b)

दशमलव वर्गीकरण पद्धति- प्रमुख विशेषतायें

(Deway Decimal Classification Scheme-Main Features)

उद्देश्य

1. दशमलव वर्गीकरण पद्धति के उद्भव एवं विकास से परिचित होना।
2. दशमलव वर्गीकरण पद्धति के प्रारूप के विषय में जानकारी प्राप्त करना।
3. दशमलव वर्गीकरण पद्धति की प्रमुख विशेषताओं को समझाना।

संरचना/विषय वस्तु

1. दशमलव वर्गीकरण पद्धति का उद्भव एवं विकास
2. दशमलव वर्गीकरण पद्धति का प्रारूप
3. दशमलव वर्गीकरण पद्धति की प्रमुख विशेषताऐं
   - 3.1 परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति
   - 3.2 पक्ष विश्लेषण एवं संश्लेषण शुद्ध अंकन
   - 3.3 शुद्ध अंकन
     - 3.3.1 सोपानिक अंकन
     - 3.3.2 स्मृति सहायक अंकन
   - 3.4 सात सारणियों का प्रयोग
   - 3.5 योजक विधियां
   - 3.6 भौगोलिक सारणी
   - 3.7 काल सारणियां
   - 3.8 सापेक्ष अनुक्रमणी
   - 3.9 सतत् संशोधन नीति
4. दशमलव वर्गीकरण प्रणाली की सीमाएं एवं कमियां
5. सारांश
6. संदर्भ ग्रंथ
7. अभ्यासार्थ प्रश्न

1. दशमलव वर्गीकरण पद्धति का उद्भव एवं विकास

दशमलव वर्गीकरण पद्धति के प्रणेता मेलविल लुईस कोसुथ ड्यई (Melville Louis Kossuth Deway) (1851 - 1931) का जन्म न्यूयार्क राज्य के जेफरसन प्रदेश के एक ग्राम एडमसेंटर में हुआ था । ड्यूई आधुनिक पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति के जनक तथा अमेरिका में पुस्तकालय आंदोलन

के सूत्रधार माने जाते हैं । 1874 में एमहर्स्ट कॉलेज में स्नातक उपाधि प्राप्त करने के बाद वे इसी कॉलेज में सहायक पुस्तकाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हुए । ड्यूई की प्रारम्भ से ही पुस्तक संग्रह एवं उनके व्यवस्थापन में रुचि थी । उन्होंने न्यूयार्क व इंग्लैण्ड के पुस्तकालयों की कार्य प्रणाली का अध्ययन कर यह अनुभव किया कि वहां प्रयुक्त वर्गीकरण प्रणालियां दोषपूर्ण हैं जिससे पुस्तकालयों के श्रम एवं धन का दुरूपयोग हो रहा है । परिणामस्वरूप उन्होंने एक ऐसी योजना पर विचार करना प्रारम्भ किया जिसके द्वारा पुस्तक संग्रह को अधिक व्यवस्थित क्रम में रखा जा सके। इस सम्बन्ध में उन्होंने हैरिस (W.T. Harris) तथा स्वार्ज (Jacob Schwartz) जैसे विद्वानों के सुझाव भी आमंत्रित किये । अनेक वर्षों के अथक प्रयासों के बाद ड्यूई का सपना साकार हुआ और ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति का प्रथम संस्करण 1876 में 'A Classification and Subject Index for Cataloguing the books and pamphlets of a Library नाम से प्रकाशित हुआ । इस पद्धति पर हैरिस (W.T. Harris) द्वारा निर्मित पद्धति का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है । हेरिस ने एक पद्धति सैंट लुई पब्लिक लाइब्रेरी के लिये वहां की सूची को क्रमबद्ध करने के लिये बनाई थीं । हैरिस की पद्धति भी बेकन द्वारा विलोम क्रम में रख कर विषयों को व्यवस्थित करने के लिये बनाई गई पद्धति से प्रभावित थी ।
ड्यूई का 1876 में प्रकाशित प्रथम संस्करण अज्ञातनाम (Anonymous) से प्रकाशित हुआ । इसमें 12 पृष्ठों की भूमिका, 12 पृष्ठों की अनुसूची तथा 18 पृष्ठों की अनुक्रमणिका थी । इससे पता चलता है कि ड्यूई ने प्रारम्भ से ही अनुक्रमणिका को विशेष महत्व दिया । इस पद्धति के अभी तक 19 संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं तथा 20 वां संस्करण प्रकाशनाधीन है । पद्धति का द्वितीय संस्करण (1885) में विस्तृत एवं संशोधित रूप में प्रकाशित हुआ जिसका नाम Dewey decimal Classification and Relative Index रखा गया । पंचम संस्करण (1894) से इसके संक्षिप्त संस्करण (Abridged edition) भी प्रकाशित होने प्रारम्भ हुये । इसका पन्द्रहवां संस्करण (1951) पूर्णत: संशोधित रुप में प्रकाशित हुआ । यह पुराने संस्करणों से भिन्न है तथा इसे "प्रामाणिक संस्करण" भी कहा जाता है । इसका सोलहवां संस्करण (1958) में प्रकाशित हुआ । यह संस्करण पहले के संस्करणों से विस्तृत है । यह ड्यूई वर्गीकरण का पहला संस्करण हैं जो दो भागों में प्रकाशित हुआ है । प्रथम खण्ड - अनुसूची तथा द्वितीय खण्ड - अनुक्रमणिका है । इसका अठारहवां संस्करण (1971) तीन खण्डों में है, प्रथम खण्ड - प्रस्तावना, सारणी, दूसरा खण्ड - अनुसूची तथा तीसरा खण्ड - अनुक्रमणिका है । इसका उन्नीसवां संस्करण (1979) भी तीन खण्डों में है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न : सही या गलत बताइये

(ए) दशमलव वर्गीकरण पद्धति का प्रथम संस्करण -

(1) डब्ल्यू.टी. हैरिस के नाम मे प्रकाशित हुआ ।

(2) मेलविल ड्यूई के नाम से प्रकाशित हुआ ।

(3) अज्ञातनाम से प्रकाशित हुआ ।

(बी) इसका पन्द्रहवां संस्करण -

(1) दो खण्डों में प्रकाशित हुआ है ।

(2) तीन खण्डों में प्रकाशित हुआ है ।

(सी) ड्यूई के उन्नीसवां संस्करण का दूसरा खण्ड -

(1) अनुसूची है ।

(2) अनुक्रमणी है ।

2. दशमलव वर्गीकरण पद्धति के 19 वें संस्करण का प्रारूप

इस पद्धति का 19 वां संस्करण तीन खण्डों में विभाजित है-

खण्ड 1 - भूमिका, सारणियां (Introduction Tables)

खण्ड 2- अनुसूची (Schedules)

खण्ड 3- सापेक्ष अनुक्रमणिका (Relative Index)

खण्ड 1 भूमिका, सारणियां

प्रथम खण्ड के प्रारम्भिक पृष्ठों में इस पद्धति के उपयोग करने की विधि समझाई गई है। पद्धति में प्रयुक्त नियमों एवं निर्देशों का स्पष्टीकरण इस खण्ड में दिया गया है। अनुसूची में प्रयुक्त अनेक प्रकार के प्रतीक चिन्हों के उपयोग को भी प्रस्तावना में समझाया गया है। इस प्रणाली से वर्गीकरण प्रारम्भ करने के पहले इसकी भूमिका का पढ़ना अत्यंत आवश्यक है। इसमें वर्गीकरण करने की विधि, सारणियों का उपयोग, अनुक्रमणिका के अन्तर्गत पदों की व्यवस्था आदि स्पष्ट रूप से समझाए गये है।

सात सारणियां प्रथम खण्ड में सात प्रकार की सारणियों (Tables) का उल्लेख है :

सारणी 1 मानक उपविभाजन (Standard Subdivisions)

सारणी 2 भौगोलिक उपविभाजन (Areas)

सारणी 3 साहित्यिक उपविभाजन (Subdivision of Individual literatures)

सारणी 4 भाषा उपविभाजन (Subsivisions of Individual Languages)

सारणी 5 प्रजातीय, भाषायी, राष्ट्रीय समूह (Racial, Ethnic, National Groups)

सारणी 6 भाषाएँ (Languages)

सारणी 7 व्यक्ति (Persons)

पूर्वोक्त सारणियां सहायक सारणियां कहलाती हैं । अर्थात् इन सारणियों का प्रयोग अकेले नहीं किया जा सकता अपितु इनका प्रयोग अनुसूची (खण्ड 2) की वर्ग संख्याओं के साथ जोड़ कर निर्धारित नियमों व निर्देशों के अनुसार किया जा सकता है । सारणियों में दी गई संख्याएँ वर्ग संख्याएँ नहीं हैं, बल्कि सहायक संख्याएँ है । सारणियों में दी गई संख्याओं के पहले डैश (-) का चिहन दिया गया है, जिसका अर्थ है इनका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किया जा सकता हैं ।

संक्षेपक

प्रथम खण्ड के अन्त में अनुसूची में प्रयुक्त ज्ञान जगत के विभाजनों, उपविभाजनों को तीन संक्षपकों में (Summaries) में दिया गया है ।

प्रथम संक्षेपक (First Summary) में ज्ञान जगत को 10 भागों में बाँटा गया है । ये निम्न प्रकार हैं -

000	Generalities
100	Philosophy & related disciplines

200	Religion
300	Social Sciences
400	Languages
500	Pure Sciences
600	Technology
700	Arts
800	Literatures
900	General Geography and History

द्वितीय संक्षेपक में प्रथम संक्षेपक की प्रत्येक वर्ग संख्या को पुनः नौ भागों में विभाजित किया जाता है उदाहरणार्थ - 300 समाज विज्ञान (Social Science) को पुन: नौ विभागों (Divisions) में निम्न प्रकार से बाँटा गया है -

310	Statistics
320	Political Science
330	Economics
340	Law
350	Public Administration
360	Social Pathology & Services
370	Education
380	Commerce
390	Custom and Folklore

तीसरे संक्षेपक में द्वितीय संक्षेपक के प्रत्येक विभाग को पुनः नौ-नौ अनुभागों (Sections) मैं बाँटा गया है तथा लगभग 1 हजार विषयों को गिनाया गया है ।

इस प्रकार ये सभी संक्षेपक अनुसूची के उपयोग में सहायक है। ये संक्षेपक मुख्य वर्ग व उनसे सम्बन्धित स्थूल विषयों को खोजने में सहायक हैं । यदि तीन संक्षेपक को पूरी तरह समझ लिया जाय तो वर्ग संख्या बनाने का काम आसान लगने लगता है ।

खण्ड 2 अनुसूची

खण्ड 2 के अन्तर्गत मुख्य वर्गों की अनुसूचियां दी गई हैं । विषयों का विभाजन सामान्य से विशिष्ट की ओर किया गया है ।

अनुसूची में पहले कृत्रिम भाषा में वर्गांक दिये गये है तथा उसके सामने विषय या प्रकरण का नाम प्राकृतिक भाषा में दिया गया है । उदाहरणार्थ -

301-307	Sociology
301	Sociology
302	Social interaction
303	Social Processes

सभी वर्गांकों को श्रेणी बद्ध कम में व्यवस्थित किया गया है। अर्थात् एक मुख्य वर्ग के अधीनस्थ विषयों को उसके विस्तार के आशय के अनुसार व्यवस्थित किया गया है, अर्थात् विषयों को स्थूल से सूक्ष्म की ओर व्यवस्थित किया गया है ।

वर्गकार की सुविधा के लिये स्थान-स्थान पर परिभाषाएं, उदाहरण, टिप्पणियां, क्षेत्र विस्तार टिप्पणियां, निर्देश टिप्पणियां, आदि के रूप में अनेक नोट दिये गये हैं । उदाहरणार्थ - 300 समाज शास्त्र शीर्षक के अन्तर्गत समाज -शास्त्रों की परिभाषा इन -शब्दों में दी गई है - "वे शास्त्र जो सामाजिक गतिविधियों व संस्थाओं से संबंध रखते हैं" इत्यादि ।

खण्ड 3 सापेक्षक अनुक्रमणिका : इस खण्ड में वर्णानुक्रम में व्यवस्थित एक विस्तृत एवं सापेक्ष अनुक्रमणी दी गई । अनुसूची व सारणियों में प्रयुक्त सभी शब्दों व पदों का इसमें उल्लेख कर, संबंधित वर्ग संख्याएं पदों के सामने अंकित कर दी गई हैं । अनेक पदों व शब्दों के पर्यायवाची शब्दों का भी उल्लेख किया गया है । इसमें एक संख्यक संलेख के अलावा बहु-संख्यक संलेख भी दिये गये हैं । अनुक्रमणिका का उपयोग किये बिना वर्गीकरण करना कठिन । अत: अनुक्रमणिका से सम्बन्धित निम्नलिखित महत्वपूर्ण बातों की जानकारी अत्यंत आवश्यक हैं :

(i) प्रारम्भ में वर्गाकार को पुस्तक का विषय निश्चित कर अनक्रमणिका में उसे ढूंढना चाहिए । उसके बाद पुस्तक में चर्चित उस विषय के विभिन्न पहलुओं को भी अनुक्रमणिका में ढूंढना चाहिए । ड्यूई की अनुक्रमणिका में वे सारे शब्द तथा पद अपने वर्गानुक्रमिक स्थान पर मिल जाते है जिनका प्रयोग सारणी, अनुसूची आदि में हुआ हैं ।

(ii) अनुक्रमणिका में विषय का नाम प्राकृतिक भाषा में देकर उसके सामने उसकी वर्ग संख्या दी गई है ।

(iii) यह अनुक्रमणिका सापेक्षिक अनुक्रमणिका (Relative Index) है । सापेक्ष अनुक्रमणिका में एक ही विषय के विभिन्न पहलुओं (जो अनुसूची में जगह-जगह पर बिखरे होते हैं) को संबंधित विषय या पद के नाम के नीचे एक स्थान पर एकत्रित कर वर्णानुक्रम में व्यवस्थित कर दिया जाता है । जैसे -

Electric
  Clocks
  Controls
  Currents

(iv) यदि सम्बन्धित संख्या किसी सारणी की है तो उसे अनुक्रमणिका में संक्षेपाक्षरों (Abbreiations) के द्वारा दिखाया गया है जैसे -

Formulas	s.s-0122
Foster Childran	pers.-0441
France	area-044

विभिन्न सारणियों के लिये निम्नलिखित संक्षेपाक्षरों (abbreviations) कार प्रयोग किया गया है :

1.	Standard Subdivisions	= s.s
2.	Areas	=area
3.	Subdivisions of Individual Literatures	= lit. sub

4. Subdivisons of Individual Language = lang sub.
5. Racial, Ethnic, National Groups = r.e.n.
6. Languages = lang
7. Persons = Pers.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत

(अ) अनुसूची (खण्ड 2) के तीन संक्षेपक हैं, जो दशमलव वर्गीकरण पद्धति के -

1. खण्ड 1 के अन्त में दिये गये हैं ।
2. खण्ड 2 के प्रारम्भ में दिये गये हैं ।
3. खण्ड 3 में दिये गये हैं ।

(ब) सापेक्ष अनुक्रमणी में-

1. पर्यायवाची शब्द नहीं दिये गये हैं ।
2. एक प्रकार के पद के नीचे उसके सभी उपविभागों एक साथ नहीं दिये गये हैं ।
3. एक प्रकार के पद के नीचे उसके सभी उप विभाग एक साथ दिये गये हैं ।

(स) अनुसूची खण्ड 2 में-

1. केवल वर्गांकों का उल्लेख है ।
2. वर्गकार के लिये आवश्यक निर्देश, परिभाषाएं, उदाहरण इत्यादि दिये गये हैं ।
3. वर्गांकों के साथ-साथ स्थान-स्थान पर आवश्यक निर्देश, परिभाषाऐं, उदाहरण इत्यादि भी दिये गये हैं ।

(द) दशमलव वर्गीकरण के खण्ड 1 में-

1. सात सारणियां व प्रस्तावना दी गई हैं ।
2. केवल तीन संक्षेपक दिये गये हैं ।
3. प्रस्तावना, सात सारणियां व तीन संक्षेपक सभी दिये गये हैं ।

3. दशमलव वर्गीकरण पद्धति के गुण

3.1 परिगणनात्मक वर्गीकरण पद्धति

दशमलव वर्गीकरण पद्धति मूलत: एक परिगणनात्मक पद्धति है । इसकी अनुसूची में प्राय: सभी संभावित विषयों को सामान्य से विशिष्ट की ओर व्यवस्थित किया गया है । इसमें केवल एक अनुसूची है जिसमें सम्पूर्ण वर्गों को वरीयतापूर्ण सहायक अनुक्रम में एक साथ उल्लेख कर दिया गया है । इसलिये इसको अनुसूची भी बृहदाकार है ।

इसकी अनुक्रमणी अत्यधिक उपयोगी है। आवश्यकता पड़ने पर वर्गकार अनुक्रमणी के माध्यम से किसी भी पहलू को खोज सकता है, जहाँ उसका बना बनाया वर्गांक अंकित होता है । इस वर्गीकरण पद्धति का आकार एक स्तम्भीय होने के कारण इसमें पक्ष विश्लेषण तथा संश्लेषण संभव नहीं है । फिर भी 19 वें संस्करण में किये गये अनेक संशोधनों के द्वारा इस पद्धति में अब कुछ अंशों में पक्षात्मक पद्धति के गुण आ गये हैं । इसका विवेचना इसी पाठ में किया गया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइए-

(अ) परिगणनात्मक पद्धति में-

1. पर्व निर्मित वर्गांक प्राप्त नहीं होते हैं ।
2. पूर्व निर्मित वर्गांक होते हैं ।

(ब) परिगणनात्मक पद्धति में-

1. पक्ष संश्लेषण संभव नहीं है ।
2. पक्ष संश्लेषण संभव है ।

(स) परिगणनात्मक पद्धति में -

1. अनुक्रमणी को अधिक महत्व दिया जाता है ।
2. अनुक्रमणी को महत्व नहीं दिया जाता ।

(द) परिगणनात्मक पद्धति का आकार -

1. एक स्तंभीय होता है ।
2. बहु स्तंभीय होता है ।

3.2 पक्ष विश्लेषण एवं संश्लेषण

दशमलव वर्गीकरण पद्धति का मूल ढाँचा परिगणनात्मक होते हुये भी इसमें पक्षात्मक पद्धति की विशेषताऐं दिखाई देती हैं । दूसरे शब्दों में अनेक वर्गों के वर्गांक संश्लेषण के आधार पर निर्मित होना इस पद्धति के परिगणनात्मक प्रारूप के साथ-साथ इसके पक्षात्मक गुणों को भी बताता है । उदाहरणार्थ -

मुख्य वर्ग 400 Philology को सर्वप्रथम हम भाषा के आ धार पर विभाजित करते हैं और उसके बाद उसके समस्या पक्ष से जैसे -

420	English language
428.1	Words of English language

इसी प्रकार - मुख्य वर्ग 800 Literature को सर्वप्रथम साहित्य की भाषा से विभाजित करते हैं उसके बाद उसके रूप पक्ष से, और फिर उसके काल से । जैसे -

800	Literature
891.43	Hindi Literature (भाषा)
891.431	Hindi Poetry (रूप)
891.4317	Hindi Poetry after 1940 (काल)

मुख्य वर्ग 900 History को भी पक्षों में विभाजित किया गया है । पहले स्थान से, इसके बाद कालावधि से । जैसे -

900	History
940	History of Europe (स्थान)
940.232	History of Europe during 16th Century (1517-1618) (काल)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइए

(अ) दशमलव वर्गीकरण पद्धति में -

1. पक्षात्मक पद्धति के गुण विद्‌यमान हैं ।
2. पक्षात्मक पद्धति के गुण विद्‌यमान नहीं हैं ।
3. पक्षात्मक पद्धति के गुण कुछ सीमा तक विद्‌यमान हैं ।

(ब) दशमलव वर्गीकरण पद्धति के वर्गांक में -

1. संश्लेषण का गुण विद्‌यमान है ।
2. संश्लेषण का गुण बिल्कुल नहीं है ।
3. संश्लेषण का गुण कुछ अंशों में है ।

3.3. शुद्ध अंकन

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में शुद्ध अंकन का प्रयोग किया गया है । इसमें एक ही प्रकार के प्रतीक चिन्हों का प्रयोग है, अर्थात् इसकी अनुसूचियों में प्राकृतिक नामों के लिए दिये गये प्रतीकों का निर्माण एक ही प्रकार के चिन्हों से हुआ है। इसमें हिन्द-अरेबिक अंक (Indo-Arabic Numerals) का प्रयोग है । तीन अंकों के बाद विराम के रूप में दशमलव का प्रयोग आखों को आराम देने के लिये किया गया है । इस प्रयोग से इसका अंकन और अधिक ग्राहय सिद्ध हुआ है । इसके अंकनों को दशमलव भिन्न के रूप में लिखा, पढ़ा जाना चाहिये तथा उनका उच्चारण किया जाना चाहिये, अर्थात् प्रत्येक अंक दशमलव से विभाजित है । इसलिए इसके अंकों का उच्चारण अलग-अलग अंकों की तरह किया जाता है। उदाहरणार्थ 300 को तीन सौ न पढ़कर, तीन, शून्य, शून्य पढ़ेंगे ।

एक ही प्रकार के अंकों से निर्मित होने के कारण इसका अंकन लिखने, पढ़ने या उच्चारण करने तथा याद करने में सरल है किन्तु साथ ही शुद्ध अंकन के कारण इसका आधार संकुचित हो गया है । परिणामस्वरूप इसमें नये विषयों को स्थान देने की क्षमता का अभाव है । इसी कारण 19 वें संस्करण में अनेक मुख्य वर्गों मे विशिष्टता प्राप्त करने की दृष्टि से अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों का प्रयोग करने के निर्देश मिलते हैं । इस प्रकार के निर्देश अनेक मुख्य वर्गों के अन्तर्गत दिये गये हैं ।

3.3.1 सोपानिक अंकन : दशमलव वर्गीकरण का अंकन सोपानिक अंकन है । इसमें स्थूल विषय का अंकन सबसे पहले रखा गया है, तत्पश्चात् इसके दशमलव खंडन करते हुए अंकों की संख्या में वृद्धि ही गई है परिणामस्वरूप विषय स्थूल से सूक्ष्म व सूक्ष्म से सूक्ष्मतर होता चला गया है । दायीं ओर बढ़ाये जाना वाला प्रत्येक खण्डन उसके पूर्ववर्ती अंकन का ही भाग होता है। ड्यूई का अंकन कम से कम तीन अंकों में निर्मित होने के कारण इसका सोपानिक कम तीन अंकों के बाद ही प्रारम्भ होता है । उदाहरणार्थ -

610	Medical Science
616	Human Disease
616.2	Disease of respiratory system

616.24	Disease of Lungs
616.241	Pneumonias

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(अ) दशमलव वर्गीकरण पद्धति का अंकन

1. लिखने, पढ़ने, उच्चारण करने में आसान है ।
2. लिखने, पढ़ने, उच्चारण करने मैं जटिल है ।

(व) दशमलव वर्गीकरण पद्धति का अंकन -

1. स्मृति सहायक नहीं है ।
2. स्मृति सहायक है ।

3.3.2 स्मृति सहायक अंकन : इस पद्धति में स्मृति सहायक अंकों का प्रयोग हुआ है । सारणी 1 (Standard sub-division) तथा सारणी 2 (Areas) का स्मृति सहायक प्रयोग है । उदाहरणार्थ 03 का प्रयोग सभी मुख्य वर्गों में 420-490 मे छेड़कर निर्देशानुसार किया जा सकता है । इसी प्रकार भौगोलिक क्षेत्र - अंकन 1-9 का प्रयोग भी किसी भी मुख्य वर्ग में निर्देशानुसार किया जा सकता है । भारत के लिये सभी स्थानों पर क्षेत्र अंकन 54 का ही प्रयोग होगा जब कि फ्रांस के लिए 44 और पाकिस्तान के लिये 549 का । उदाहरणार्थ -

History of India	945
Geography of India	915.4
यहां भारत देश के लिये क्षेत्र अंकन 54 का स्मृति सहायक प्रयोग हुआ है ।	
Dictionary of Political Science	320.03
Dictionary of Military Science	355.003
Dictionary of Public Administration	350.0003

यहां स्मृति सहायक अंक 03 का प्रयोग शब्द कोष के अर्थ में सभी वर्गों में समान रूप से हुआ है ।

इसके अलावा जैसा कि पहले बताया जा चुका है 19 वें संस्करण में अनके स्थलों पर शाब्दिक स्मृति सहायक अंकों (Verbal Mnemonics) का प्रयोग भी हुआ है ।

मुख्य वर्ग 400 (Language) 800 (Literature) में भी भाषा के लिये प्रयुक्त एकलों का स्मृति सहायक प्रयोग किया गया है ।

German Language	430
German Literature	830

यहां अंक 3 का German के अर्थ में स्मृति सहायक प्रयोग है ।

3.4. सात सारणियों व प्रयोग :

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में सात सारणियां हैं । इन सात सारणियों को दो भागों में बांट सकते हैं -

1. ऐसी सारणी जिसके एकलों का प्रयोग किसी भी वर्गांक के साथ आवश्यकतानुसार किया जा सकता है ।
2. ऐसी सारणियां जिनका प्रयोग केवल उन्हीं वर्गों के साथ किया जा सकता है, जिनके लिये ये निर्मित की गयी हैं।

मानक उपविभाजन सारणी 1 में 03 Dictionary, 05 serial publications इत्यादि एकलों का उल्लेख है जिन्हें अनुसूची की किसी भी वर्ग संख्या के साथ जोड़ा जा सकता है । उदाहरणार्थ-

Serial publication of rail road Transport	385.05
Study and teaching of Library Science.	020. 7

सारणी 2 में भौगोलिक उपविभाजन दिये गये हैं । इसका प्रयोग दो प्रकार से हो सकता है । अनुसूची में जहां निर्देश दिये गये हैं वहां निर्देशों के अनुसार तथा जहां निर्देश नहीं दिये गये है वहां मानक उपविभाजन 09 के साथ इनका प्रयोग किया जा सकता है ।

सारणी 3 का प्रयोग केवल विशिष्ट भाषाओं के साहित्य के लिये ही किया जा सकता है, इन भाषाओं का उल्लेख वर्ग संख्या 810-890 के अन्तर्गत किया गया है ।

सारणी 4 का प्रयोग भी वर्ग संख्या 420-390 के साथ ही किया जा सकता है । ये वर्ग संख्याऐं विशिष्ट भाषाओं से सम्बन्धित हैं ।

अनुसूची में वर्णित किसी भी अंकन के साथ आवश्यकतानुसार सारणी 5 के अंकनों का प्रयोग मानक उपविभाजन 089 की सहायता से किये जाने का विशेष प्रावधान किया गया है । अर्थात् सारणी 5 के अंकनों का प्रयोग अनुसूची के किसी भी अंकन के साथ 089 जोड़ कर किया जा सकता है एवं सह -विस्तृत वर्गांक बनाये जा सकते हैं ।

सारणी 7 के किसी भी अंकन का प्रयोग अनुसूची के किसी भी अंकन के साथ आवश्यकतानुसार मानक उपविभाजन 088 को जोड़ कर किया जा सकता है । इस प्रावधान ने सारणी 7 के अंकनों को और अधिक व्यापकता प्रदान कर दी है। 19 वें संस्करण से पूर्व इनका उपयोग केवल निर्देशित अवस्था में ही किया जाता था ।

सारणी 6 के अंकनों का प्रयोग आवश्यकतानुसार अनुसूची में दिये गये निर्देशों के अनुसार ही किया जा सकता है, स्वतंत्र रूप से नहीं । इस सारणी के अंकों के प्रयोग का प्रावधान भौगोलिक उपविभाजन सारणी -2 के अंकन 175 के अन्तर्गत करने के निर्देश है । इसी प्रकार भाषा विषयक उपविभाजन सारणी में अंकन 32-39, 824-864 के अन्तर्गत भी इसी सारणी के प्रयोग का प्रावधान किया गया है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइए

(अ) मानक उपविभाजन सारणी 1 का प्रयोग -

1. केवल अनुसूची में दिये गये निर्देशों के अनुसार किया जा सकता है ।
2. अनुसूची दिये किसी भी वर्ग के साथ किया जा सकता है ।

(ब) भौगोलिक उपविभाजन सारणी 2 का प्रयोग -

1. केवल अनुसूची में दिये गये निर्देशों के अनुसार ही किया जा सकता है ।
2. अनुसूची में निर्देश न होने पर भी किया जा सकता है ।

(स) सारणी 3 का प्रयोग -

1. आवश्यकतानुसार अनुसूची के किसी भी वर्ग के साथ हो सकता है ।
2. इसका प्रयोग केवल अनुसूची की वर्ग संख्या 810-890 के साथ ही किया जा सकता है ।

(द) सारणी 4 का प्रयोग -

1. आवश्यकतानुसार अनुसूची के किसी भी वर्ग के साथ हो सकता है ।
2. इसका प्रयोग केवल अनुसूची की वर्ग संख्या 420-490 के साथ किया जा सकता है ।

(य) सारणी 5 व 7 का प्रयोग -

1. केवल अनुसूची में दिये गये निर्देशों के अनुसार ही हो सकता है ।
2. इनका प्रयोग अनिर्देशित अवस्था में भी किया जा सकता है ।

(र) सारणी 6 का प्रयोग -

1. अनुसूची में दियें गये निर्देशों के अनुसार किया जा सकता हे ।
2. अनिर्देशित अवस्था में भी हो सकता है ।

3.5. योजक विधियां

योजक विधि का प्रयोग दशमलव वर्गीकरण पद्धति की अपनी एक विशेषता है । इस विधि का प्रयोग बाद वाले संस्करणों में निरन्तर बढ़ता जा रहा है । इस विधि के प्रयोग ने एक ओर जहां अनुसूचियों के आकार को छोटा बनाने में सहायता की है वहीं दूसरी ओर इससे पक्षात्मक वर्गीकरण के समान संश्लेषण का गुण भी पैदा हु आ है ।

इस विधि के प्रयोग के निर्देश अनेक मुख्य वर्गो में दिये गये हैं । योजक विधि एक प्रकार से द्विबिन्दु वर्गीकरण की विषय विधि (SD) के समान है जिसमें एक विषय के साथ दूसरे विषय अथवा उसके पक्ष की एकल संख्याओं को जहां निर्देश दिये गये हैं वहां आवश्यकता पड़ने पर, जोड़ दिया जाता है । इस प्रकार के प्रयोग से एक नई वर्ग संख्या निर्मित हो जाती है। दशमलव वर्गीकरण के 19 वे संस्करण में तीन प्रकार की योजक विधियो का प्रावधान है ।

1. जहां किसी निर्दिष्ट आधार संख्या (Base Number) के साथ 001-999 तक के किसी भी अंकन को जोड़कर वर्गांक बनाया जा सकता है ।
2. जहां किसी निर्दिष्ट आधार संख्या के साथ अनुसूची में उल्लिखित किसी अन्य वर्ग संख्या के कुछ भाग को (उसके कुछ अंकों की छोड़कर) जोड़कर वर्गांक बनाया जा सकता है ।

3. जहां किसी तारांकित वर्ग संख्या के साथ उस विषय के विभिन्न पहलुओं को दर्शाने वाले अंकनों को जोड़कर वर्गांक बनाया जा सकता है । उदाहरणार्थ -

   A bibliography of Political Science 016.32

   यह मुख्य वर्ग 016 के साथ 011-999 से उपयुक्त एकल संख्या 320 जोड़कर वर्गांक बनाया गया है ।

   इसी प्रकार -

   Size and Shape of Mercury 523.411

   यहां 523.41 में 523.31 से 523.37 की वर्ग संख्याऐं 523.3 को छोड़कर जोड़ने के निर्देश हैं । इसी प्रकार -

   Repair of motor cycles0 629.28775

   यहां 629.287 में 629.222 से 629.229 की वर्ग संख्याऐं 629.22 को छोड़कर जोड़ने के निर्देश हैं । इसी प्रकार -

   Training of horses for circuses 636.108 88

   यहां 636.10 = Horse की आ धार संख्या है । अनुसूची मैं दिये गये निर्देशानुसार 636.01 से 636.08 तक के अंकनों में से 636.0 को छोड़कर शेष को 636.10 के साथ जोड़ा जा सकता हैं । 636.0888 = Training दिया हुआ है ; अत: निर्देशानुसार 636.0 को छोड़कर शेष अंक 888 को 636.10 के साथ जोड़ दिया गया है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(अ) योजक विधि के प्रयोग में जहां 001-999 के निर्देश दिये गये हैं वहां -

1. अनुसूची के किसी विषय के साथ दूसरे विषय का पूरा का पूरा वर्गांक जोड़ दिया जाता है।
2. अनुसूची के किसी विषय के साथ दूसरे विषय के वर्गांक का कुछ भाग ही जोड़ा जाता है।

(ब) योजक विधि के प्रावधान से दशमलव वर्गीकरण पद्धति में -

1. संश्लेषण संभव है ।
2. संश्लेषण संभव नहीं है ।

3.6 भौगोलिक सारणी

सारणी - 2 में भौगोलिक एकलों का बहु त विस्तार से उल्लेख है जो विशेष उपयोगी सिद्ध हु आ है । इस सारणी के आधार पर किसी भी भौगोलिक क्षेत्र को विशिष्ट क्षेत्र अंकन प्रदान किया जा सकता है । इस सारणी का अंक 3 Ancient World के लिये तथा 4 से 9 तक के अंकन आधुनिक विश्व के विभिन्न राजनीतिक विभागों जैसे महाद्वीप, देश, प्रदेश, शहर इत्यादि के लिये दिये गये हैं । अनुसूची में इन भौगोलिक क्षेत्रों को जोड़ने के लिए Add areas notation 1- 9, 3-9, 4-9 इत्यादि निर्देश दिये गये हैं ।

सामान्य क्षेत्र अंकन 1-19 के अन्तर्गत विश्व के उन भौगोलिक क्षेत्रों का उल्लेख है जिनका निर्माण भूमि व भूमि के आकार प्रकार के आधार पर, दिशाओं के आधार पर, सामाजिक व आर्थिक अवस्थाओं के आधार पर तथा जाति व धर्म के आधार पर हुआ है । उदाहरणार्थ - भूमि व भूमि के आकार-प्रकार के आधार पर 143 Mountains, 146 Deltas, 152 Forests इत्यादि

सामाजिक व आर्थिकि आधार पर

1732 Urban regions

1734 Rural Regions

1717 Communist blocks इत्यादि ।

दिशाओं के आधार पर

1812 Western Hemisphere

1814 Southern Hemisphere इत्यादि

इसी प्रकार जाति के आधार पर अरब देशों तथा धर्म के आधार पर मुस्लिम देशों के वर्गांक निर्मित किये जा सकते हैं। सामान्य क्षेत्र अंकनों का इतना विस्तृत, व्यवस्थित उल्लेख इस प्रणाली की अपनी एक अनन्य विशेषता है । इनका उल्लेख सापेक्ष अनुक्रमणी में किया गया है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(अ) दशमलव वर्गीकरण पद्धति में भौगोलिक उपविभाजनों में -

1. केवल राजनीतिक विभागों के अंकन वर्णित है ।
2. राजनीतिक विभागों के अलावा सामाजिक आर्थिक आधार पर बने वर्गांक भी वर्णित हैं।

(ब) भौगोलिक सारणी के अंकनों को -

1. अनुक्रमणी में सम्मिलित किया गया है ।
2. अनुक्रमणी में इनका उल्लेख नहीं है ।

3.7 काल सारणियां

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में काल को व्यक्त करने के लिए अनेक प्रकार की सारणियां दी गई हैं।

प्रथम प्रकार की सारणी के द्वारा विश्व के सामान्य समय (General Time) को दर्शाया गया है । सामान्य समय को दर्शाने के लिये मानक उपविभाजनों -0901 से - 0905 तक का प्रयोग किया जाता है । इनका प्रयोग संसार में घटित किसी घटना के लिये किया जा सकता है । उदाहरणार्थ - Ancient World History (500-1500 A.D.) 930.2

यहाँ पर - 0902 मानक उपविभाजन में से निर्देशानुसार 090 छोड़कर शेष को 930 के साथ जोड़ दिया गया है ।

मुख्य वर्ग इतिहास में विभिन्न देशों के इतिहास को 930-990 के अनुक्रम में संबंधित देश के इतिहास के वर्गांक के अन्तर्गत उस देश के ऐतिहासिक काल के अनुसार विभाजित किया

गया है । इन काल सूचक अंकनों का प्रयोग संबंधित देश के संदर्भ में ही किया जा सकता है । उदाहरणार्थ

England Under Tudors	942.05
India Under Britishers	954.03
India during reign of Harsha	934.07

मुख्य वर्ग साहित्य में 810 से 890 तक के अनुक्रम में पृथक-पृथक् साहित्य के लिये काल सारणियां दी गई हैं । इनका प्रयोग संबंधित साहित्य के लिये ही किया जाता है । उदाहरणार्थ-

Chinese poetry of Classical age	895.111
20th Century Bengali dramas	891.4427

इसी प्रकार 551.7 History Geology अन्तर्गत समय को इंगित करने के लिये पृथक से Geological ages को दिया गया है । उदाहरणार्थ -

Permian Period 551.756

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(अ) दशमलव प्रणाली में -

1. पृथक्-पृथक् देशों के लिये पृथक्-पृथक् काल का उल्लेख किया गया है ।
2. सभी देशों के लिये एक ही काल सारणी दी गई है ।

(ब) दशमलव वर्गीकरण प्रणाली में सामान्य समय (General Periods) को इंगित करने के लिये -

1. पृथक्-से एकल दिये गये हैं ।
2. पृथक से एकल नहीं दिये गये ।

(स) विशिष्ट साहित्य उप विभाजनों के लिये -

1. पृथक् से काल सारणी का प्रावधान है ।
2. इनके लिये कोई काल सारणी नहीं दी गई है ।
3. इनके काल एकल मानक उपविभाजन से प्राप्त करने का प्रावधान है |

(द) सामान्य समय को प्रदर्शित करने के लिये प्रयोग में लायेंगे :

1. देशों के लिये दी गई काल सारणी ।
2. विशिष्ट साहित्य के लिये दी गई काल सारणी ।
3. मानक उपविभाजनों के अन्तर्गत दी गई काल सारणी ।

3.8 सापेक्ष अनुक्रमणी

दमशलव वर्गीकरण पद्धति की अनुक्रमणी विस्तृत एवं सापेक्ष है । इसका व्यवस्थापन वर्णानुक्रम से है। अनुसूची में प्रयुक्त सभी पदों (व्यक्तियों, शहरों, संस्थाओं, खनिजों, जानवरों, यौगिकों नामों को छोड़कर) को अनुक्रमणी में सम्मिलित किया गया है ।

सापेक्षिक अनुक्रमणी का सबसे बड़ा लाभ वर्गकार को यह होता है कि वह किसी विषय या उसके किसी प्रकरण से संबंधित किसी पद को, उस प्रकरण के नीचे वर्णानुक्रम से व्यवस्थित

असंख्य पदों में खोज सकता है । संबंधित पद के लिये प्रयुक्त वर्ग संख्या भी उस पद के सामने अंकित होती है । इस प्रकार वर्गकार अपने अभीष्ट विषय का बना बनाया वर्गांक (Readymade Class Number) अनुक्रमणी की सहायता से खोज सकता है ।

किसी भी सारणी में प्रयुक्त पदों के प्रतीकों को एक आडी रेखा (Hyphen) द्वारा इंगित किया गया है ताकि वर्गकार उन्हें अनुसूची (खण्ड-2 में न खोज कर सारणियों (Tables) में खोजें । उदाहरणार्थ सारणी-1 के पदों के प्रतीकों इंगित करने के लिये आडी रेखा से पर्व ss का प्रयोग किया गया है । इसी प्रकार सारणी - 2 के पदों के लिये area का प्रयोग तथा सरिणी-6 के पदों के लिये lang का प्रयोग टेढ अक्षरों (Italics) में किया गया है ।

किसी भी प्रकरण से संबंधित सभी पदों को उस प्रकरण के मुख्य शब्द या पद के नीचे वर्णानुक्रम मे व्यवस्थित किया गया है, ताकि वर्गकार विषय का अध्ययन जिस संदर्भ में करना चाहे, उस पद को वहां देख सकता है, तथा इसकी बनी बनाई वर्ग संख्या की जानकारी भी प्राप्त कर सकता है । उदाहरणार्थ- Labor पद से संबंधित अनेक पदों को Labor शब्द के नीचे वर्णानुक्रम से निम्न प्रकार व्यवस्थित किया गया है.

Conditions	331.2
Contracts	331.891
Economics	331
Force	331.11
Market	331.12
Parties	329.9
Union	331.88

इसी प्रकार सारणी 1, 2 व 6 के पदों का भी उनके लिये निर्धारित प्रतीक चिन्हों के साथ अनुक्रमणी में उल्लेख है । उदाहरणार्थ-

Equipment	SS	-028
Cambodia	area	-596
Persian	lang.	-9155

इसी प्रकार सारणी 5 व सारणी 7 में प्रयुक्त पदों के भी पृथक्-पृथक् प्रतीक चिन्हों का उल्लेख अनुक्रमणी में किया गया है ।

अनुक्रमणी में पदों व शब्दों के पर्यायवाची शब्दों का भी प्रयोग किया गया है । उदाहरणार्थ-

Marine biology	See	Hydro biology
Plant breeding	See	Plant propagation

3.9 सतत् संशोधन नीति

दशमलव वर्गीकरण पद्धति की सतत् संशोधन नीति के फलस्वरूप लगभग 100 वर्षो में इसके 19 संस्करण प्रकाशित हो चके हैं । इसका प्रत्येक संस्करण निरन्तर सुधार के साथ प्रकाशित हु आ है । तथा नये विषयों का समाविष्ट करने के लिये योजक विधियो का प्रयोग बहुतायत

से किया जाने लगा है । इसमें आवश्यकतानुसार अनेक स्थलों पर अरेबिक अंकों के अलावा रोमन अक्षरों के प्रयोग के निर्देश दिये गये हैं । इस प्रकार यह पद्धति भी धीरे-धीरे पक्षात्मक पद्धति जैसी विशेषताओं से युक्त बनती जा रही है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(अ) सापेक्ष अनुक्रमणी का व्यवस्थापन -

1. वर्णानुक्रम से है ।
2. विषयानुसार है ।

(ब) सापेक्ष अनुक्रमणी में-

1. अनुसूची में दिये गये सभी एकल शामिल है ।
2. कुछ एकलों को नहीं गया है ।

(स) सापेक्ष अनुक्रमणी में-

1. केवल पदों के नाम दिये गये हैं ।
2. केवल वर्गांकों का उल्लेख है ।
3. पद के नाम व वर्गांक दोनों दिये गये है

(द) अनुक्रमणी में-

1. पर्यायवाची शब्दों को दिया गया है ।
2. पर्यायवाची शब्दों को नहीं दिया गया है ।

4. दशमलव वर्गीकरण प्रणाली की सीमाएं एवं कमियां

दशमलव वर्गीकरण में अनेक विशेषताओं के होते हुए भी यह प्रणाली दोषमुक्त नहीं कही जा सकती है अपितु इसकी अनेक कमियां एवं सीमायें हैं, जिनका विवेचन यहां किया जा रहा है :

4.1 आधार का संकुचित होना

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में शुद्ध अंकन का प्रयोग होने के कारण ज्ञान जगत् को विभाजित करने वाली प्रथम श्रेणी की पंक्तियों के लिये इसमें पर्याप्त स्वतंत्र अंकनों का अभाव है । अर्थात् प्रथम श्रेणी की एकल पंक्तियों के लिये केवल दस स्थान है जो निरन्तर गतिशील ज्ञान को पूर्णरूप से विभाजित करने के लिये अपर्याप्त हैं । इस कारण अनेक महत्वपूर्ण विषयों का इस प्रणाली में उपयुक्त स्वतंत्र अंकन नहीं मिल पाया है। परिणामस्वरूप यह प्रणाली नवीन विषयों पर प्रकाशित पाठ्य सामग्री को उपयुक्त स्थान पर समाविष्ट करने में असमर्थ रहती है । इसके साथ ही शुद्ध अंकन के कारण इसमें नये विषयों को, पुराने कम को अस्त व्यस्त किये बिना, स्थान देने की क्षमता नहीं है । इसके लिये कहीं-कहीं रिक्त स्थान विधि (Gap Device) का उपयोग हो सका है ।

संकुचित आधार का होना इस प्रणाली का एक ऐसा दोष है जिसका प्रभाव इसके सम्पूर्ण प्रारूप पर पड़ता है और इस एक दोष के कारण अन्य दोष स्वत: ही उत्पन्न हो गये है ।

इस दोष को दूर करने के लिए इस प्रणाली को मिश्रित अंकों को अपनाना चाहिये तथा श्रृंखला एवं पंक्ति में ग्राह्यता पैदा करने के लिये कुछ विधियों का प्रावधान भी करना चाहिये ।

4.2 अंकों का असमान संगठन :

शुद्ध अंकन के कारण सभी महत्वपूर्ण विषयों को पृथक्-पृथक् अंक नहीं मिल पाये हैं और जिन विषयों में अंक मिले हैं, उनका व्यवस्थापन भी सही तरीके से नहीं किया गया हें । कुछ विषयों को किसी मुख्य वर्ग के अधीन रखकर गौण बना दिया गया है और जिन विषयों में ज्ञान का विकास धीमा है, उन्हें पूरा दर्जा दे दिया है । उदाहरणार्थ- 100 दर्शनशास्त्र के अन्तर्गत 150 मनोविज्ञान को रखकर उसे गौण बना दिया गया है। इसी प्रकार मुख्य वर्ग 300 समाज विज्ञान के अधीन, 320 राजनीति विज्ञान (Political Science) 330 अर्थशास्त्र (Economics) 340 कानून (Law) जैसे विषयों को रखकर गौण बना दिया गया है। जबकि 900 इतिहास को पूर्ण दर्जा दिया गया है, जिसमें नये विचारों की उत्पत्ति प्राय: कम होती है । 500 विज्ञान (Pure Sciences) को केवल एक अंक दिया गया है । जबकि विज्ञान निरन्तर विकासमान है, और इसमें दिन-प्रतिदिन नवीन आविष्कार होते रहते है । 200 धर्मशास्त्र में 211-289 (Christain Religious) को प्रदान किया गया है और एक अंक 290 के अन्तर्गत अन्य धर्मों को रख दिया गया है। 400 भाषा में अनेक भाषाओं को पृथक वर्गांक दिये गये हैं, जबकि 490 के अन्तर्गत अन्य भाषाओं को रखा गया है । ऐसा ही 800 साहित्य में भी किया गया है।

4.3 विषयों का दोषपूर्ण व्यवस्थापन :

विषयों का व्यवस्थापन करते समय उनके पारस्परिक संबंधों को ध्यान में रखा जाना चाहिये। दशमलव वर्गीकरण प्रणाली में विषयों का व्यवस्थापन व संगठन भी दोषपूर्ण है । उदाहरणार्थ 400 भाषा तथा 800 साहित्य को दूर-दूर रखा गया है । तथा इनके मध्य अनेक असंबंधित विषयों को रख दिया गया है । इसी प्रकार अर्थशास्त्र से वाणिज्य को, समाज विज्ञान से समाज शास्त्र को, सार्वजनिक वित्त से निजी वित्त को पृथक्-पृथक् कर दिया गया है ।

4.4 मूलभूत सिद्धान्तों की अवहेलना "

इस प्रणाली में मूलभूत सिद्धान्तों की अवहेलना की गई है । जिस प्रकार डॉ. रंगनाथन अपनी वर्गीकरण प्रणाली का
निर्माण मूलभूत सिद्धान्तों को दृष्टिगत रखते हुये दिया है इस प्रकार दशमलव वर्गीकरण में सिद्धान्तों का बिल्कुल ध्यान नहीं रखा गया है । बुद्ध धर्म (294.3) को जैन धर्म (294.4) से पूर्व व्यवस्थित करना परवर्ती काल का सिद्धान्त (Principle of Later in Time) की अवहेलना है । जैन धर्म की उत्पत्ति बुद्ध धर्म से पहले हुई है । अत जैन धर्म को कह धर्म मे पहले रखा जाना चाहिये । इसी प्रकार की अवहेलना मुख्य वर्गों के व्यवस्थापन में भी की है।

4.5 प्राच्य विषयों के साथ उपेक्षा व व्यवहार :

डूयर्ड दशमलव वर्गीकरण प्रणाली में प्राच्य विषयों का पर्याप्त समायोजन नहीं किया गया है। भारतीय धर्म, भारतीय दर्शन, भारतीय संस्कृति आदि के विभिन्न पक्षों को पर्याप्त स्थान नहीं दिया गया है। जबकि ये विषय पूरे विश्व साहित्य को अमूल्य देन है ।

4.6 अमेरिकन पक्षपात :

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में अमेरिकन पक्षपात स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है । उदाहरणार्थ, भौगोलिक उपविभाजन सारणी में अमेरिका के देशों, शहरों का उल्लेख अन्य देशों की तुलना में अधिक सूक्ष्मता मे किया गया है । इसी प्रकार अमेरिकन राजनीतिक दलों का पृथक से उल्लेख है । इसी प्रकार मुख्य वर्ग धर्म के अन्तर्गत अन्य देशों के धर्मो को 290 के अन्तर्गत रखकर गौण बना दिया गया है । इस प्रकार का पक्षपात अनेक अन्य स्थलों पर भी देखा जा सकता है । इसके अलावा अमेरिकन प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया गया है । अमेरिकन वर्तनी (Spellings) जैसे Labor इत्यादि का प्रयोग भी इसके इन पक्षपात को दर्शाता है । इसमें अनेक अप्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है । इससे स्पष्ट हो जाता है, कि ड्यूई का झुकाव अपने देश की ओर अधिक रहा है जबकि एक सार्वभौम प्रणाली के प्रणेता के रूप में ड्यूई का दृष्टिकोण पक्षपात रहित होना चाहिये था।

4.7 सापेक्षिक अनुक्रमणी को विशेष महत्व :

अनुसूची में विषयों के विभाजन व व्यवस्थापन की अपेक्षा अनुक्रमणी को विशेष महत्व देना इस पद्धति का एक अन्य दोष है । कोई भी वर्गीकरण पद्धति का महत्व, उसके विषय विभाजनों, विषयों के उपयुक्त संस्थापन, संगठन एवं अंकन के युक्तियुक्त प्रयोग पर निर्भर करना है । ड्यूई की अनुक्रमणी अत्यन्त उपयोगी अवश्य है किन्तु विषयों के विभाजनों को महत्व देने की तुलना में अनुक्रमणी को विशेष महत्व देना उपयुक्त नहीं कहा जा सकता।

5. सारांश

दशमलव वर्गीकरण पद्धति विश्व की पुरानी पद्धतियों में से एक है । इनकी परिगणनात्मक विशेषता, सापेक्ष अनुक्रमणिका की उपयोगिता एवं शुद्ध अंकन की सरलता के कारण विशेष रूप से छोटे पुस्तकालयों में आज भी इसका व्यापक रूप से प्रयोग हो रहा है । इसके पीछे एक बहुत बड़ी संस्था कार्यरत है जो इसके संशोधित संस्करण निरन्तर निकालती रहती है। इनके 100 वर्ष की कालावधि में प्रकाशित 19 संस्करण इस बात के प्रमाण हैं ।

इस प्रणाली में कुछ मूलभूत कमियां तथा सीमाएं हैं जिनके कारण इस प्रणाली की कतिपय विद्वानों ने कटु आलोचना की है । यहां कतिपय विद्वानों के सारगर्भित विचारों को दिया जा रहा है ।

सेयर्स (W.C.B. Sayers) ने इसे अन्तर्राष्ट्रीय शब्दकोष के रूप में प्रचलित, एक सरल, विस्तारशील व स्मरणशील अंकन वाली एवं सापेक्ष अनुक्रमणी जैसे मौलिक गुणों से युक्त पद्धति बताया है ।

ब्राउन (J.D. Brown) के शब्दों में यह एक सुव्यवस्थित ग्रंथालय वर्गीकरण की समस्त पद्धतियों में अत्यधिक सर्वव्यापी एवं प्रतिष्ठित पद्धति है । वर्गीकरण की किसी पद्धति का इतना व्यापक प्रयोग अथवा

सर्वव्यापी मूल्यांकन नहीं हुआ । सुव्यवस्थित वर्गीकरण के क्षेत्र में इतना बहु मूल्य परोपकारी कार्य किसी पद्धति ने नहीं किया।

ब्लिस (H.E. Bliss) ने इसकी आलोचना करते हुये लिखा है कि निर्माण एवं कार्य सम्पादन दोनों दृष्टियों से ज्ञान को संगठित करने में दशमलव पद्धति अयोग्य सिद्ध हो चुकी हैं ।

शेरा (H.J. Shera) के अनुसार आधुनिक जगत में पाठ्य-सामग्री में हुई अत्यधिक वृद्धि एवं विभिन्न आकार-प्रकार की पाठ्य-सामग्री के प्रकाशन के कारण, पारम्परिक ग्रंथालय वर्गीकरण पद्धतियों की उपयोगिता प्राय: नष्ट हो चुकी है ।

रंगनाथन (S.R. Ranganathan) के शब्दों में दशमलव वर्गीकरण पद्धति में अमेरिकन पक्षपात अधिक है । इसकी आलोचना करने का तात्पर्य इसे तुच्छ सिद्ध करना अथवा व्यक्तियों की दृष्टि में इसे गिराना नहीं है । यह पद्धति सबकी अभिनेत्री है किन्तु इसका ढांचा सीमित आधार पर अवलंबित होने के कारण यह स्वभावत: अव्यावहारिक हो गई है । इसका अंकन पर्याप्त रूप से स्मृति सहायक नहीं है । ज्ञान जगत में वृद्धि के कारण इसकी ग्राहचता नष्ट हो चुकी है। भारतीय शास्त्रों के संबंध में किये गये इसके तुच्छ व्यवहार के कारण यह पद्धति सर्वथा अयोग्य सिद्ध हो चुकी है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि यदि पद्धति के मूलभूत ढांचे में निहित काम या को दूर कर इसका अंकन के आधार को विस्तृत प्रदान कर दिया जाये तो यह प्रणाली निरन्तर गतिशील ज्ञान को वर्गीकृत करने में उसी प्रकार सक्षम हो सकेगी जैसे अन्य पक्षात्मक वर्गीकरण प्रणालियां । आज भी छोटे पुस्तकालयों के लिये यह अति उपयुक्त प्रणाली कही जा सकती है । आज विश्व के पुस्तकालयों में इसका उपयोग इसकी सर्वाधिक प्रसिद्धि का प्रमाण है ।

6. अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. दशमलव वर्गीकरण पद्धति के प्रारूप को विस्तार से समझाइये।
2. दशमलव वर्गीकरण पद्धति की प्रमुख विशेषताओं का सोदाहरण वर्णन कीजिये ।
3. क्या आधुनिक ज्ञान जगत का वर्गीकरण करने के लिये दशमलव वर्गीकरण पद्धति एक उपयुक्त पद्धति कही जा सकती है ? तर्क संगत उत्तर दीजिये ।
4. दशमलव वर्गीकरण पद्धति की कमियों का उल्लेख कीजिये ।
5. दशमलव वर्गीकरण पद्धति में एक परिगणनात्मक पद्धति की सभी विशेषताऐं विद्‌यमान हैं, सिद्ध कीजिये ।

7. संदर्भ ग्रन्थ:

Battey (C.D.): Introduction to Decimal Classification

Deway (Melville): Deway Decimal Classification and Relative Index, Ed. 19. 3V

Satija (Mohendra-

Pratap and Coma: Introduction to the Practice of Deway Comaromi (John-P) Decimal Classification. New Delhi, Sterling, 1987.

सूद (एम.पी.) एवं : क्रियात्मक ड्यूई दशमलव वर्गीकरण,

रावतानी (एम.आर.) : जयपुयर आर.बी.एस.ए. 1986.

NOTES

कोर्स- I A: पुस्तकालय वर्गीकरण-सिद्धान्त

इकाई-4

“सहायक-अनुक्रम : अर्थ, आवश्यकता एवं सिद्धान्त”

(Helpful Sequence: need, Purpose and Principles)

उद्देश्य :

1. सहायक - अनुक्रम के अर्थ व उसकी आवश्यकता के बारे में जानना ।
2. सहायक - अनुक्रम के विभिन्न सिद्धान्तों से परिचित होना ।
3. द्विबिन्दु वर्गीकरण व दशमलव वर्गीकरण में सहायक अनुक्रम के सिद्धान्तों के अनुसरण की जानकारी देना ।

संरचना / विषय वस्तु

1. विषय प्रवेश
2. सहायक-अनुक्रम का अर्थ
3. सहायक-अनुक्रम की आवश्यकता
4. सहायक-अनुक्रम के सिद्धान्त
   - (क) कालक्रम में उत्तरता का सिद्धान्त
   - (ख) विकासक्रम में उत्तरता का सिद्धान्त
   - (ग) देशीय समीपता का सिद्धान्त
   - (घ) मात्रा वृद्धि का सिद्धान्त
   - (ङ) जटिलता वृद्धि का सिद्धान्त
   - (च)पारम्परिक अनुक्रम का सिद्धान्त
   - (छ)साहित्यिक मांग का सिद्धान्त
   - (ज)वर्णानुक्रमिकता का सिद्धान्त
5. सारांश
6. वस्तुनिष्ठ प्रश्न
   - 6.1 प्रश्न
7. विस्तृत अध्ययन के लिये ग्रंथ-सूची

1. विषय प्रवेश

आपको सहायक-अनुक्रम के विभिन्न पहलुओं, वर्गीकरण में सहायक- अनुक्रम के महत्व, तथा सहायक अनुक्रम के सिद्धान्तों के बारे में जानकारी देने के लिये प्रस्तुत पाठ की रचना की गई है । इस पाठ में आप सहायक- अनुक्रम से संबंधित विभिन्न प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करेंगे । जैसे, कौन-कौन से अच्छे तरीके हैं जिनके द्वारा सहायक-अनुक्रम प्राप्त किया जा सकता है तथा पाठकों को सहायता प्रदान की

जा सकती है ? एवं द्विबिन्दु वर्गीकरण व दशमलव वर्गीकरण पद्धतियों में सहायक-अनुक्रम के सिद्धान्तों का अनुपालन किया गया है अथवा नहीं?

2. सहायक-अनुक्रम का अर्थ

विभिन्न वर्गों, उपवर्गों तथा उनकी -शाखाओं प्रशाखाओं को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करना वर्गीकरण का सर्वप्रथम उद्देश्य है ।

"सहायक- अनुक्रम का सामान्य अर्थ यह है कि विभिन्न वर्गों व उपवर्गों आदि को ऐसे अनुक्रम में व्यवस्थित करना जो पाठकों के लिये सहायक हो।" बी.आई. पामर एवं ए.जे. वैल्स के कथनानुसार "सहायक-अनुक्रम का अर्थ उन अनुक्रम से है जो विषयों का प्रदर्शन इस प्रकार से करता है कि पाठक उस अनुक्रम में किसी भी स्थल मे अपने विषयों के समूह को देखना प्रारम्भ करे वह अनुक्रम ही उसे उस विशिष्ट विषय तक पहुँचा दे जिसकी उसे आवश्यकता है।"

ज्ञान के छोटे से क्षेत्र को भी अनेक सहायक-अनुक्रमों में व्यवस्थित किया जा सकता है । एक वर्ग के पाठकों के लिये जो अनुक्रम सहायक हो सकता है वह किसी दूसरे वर्ग के पाठकों के लिये सहायक अनुक्रम नहीं हो । ऐसी स्थिति में इस समस्या का व्यावहारिक हल यही है कि जो भी अनुक्रम नियत किया जाये उसके निर्धारण में अधिकांश पाठकों के दृष्टिकोण का ध्यान रखा जाये ।

डॉ, एस.आर. रंगनाथन ने ज्ञान के क्षेत्र के सभी प्रकार के विभाजनों को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करने के सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया है । किन्तु, वे सभी सिद्धान्त इस पाठ के क्षेत्र के बाहर हैं । प्रस्तुत पाठ में हम केवल पंक्ति में वर्गों को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करने वाले सिद्धान्तों का वर्णन करेंगे । इसके लिये डॉ. रंगनाथन ने सहायक-अनुक्रम के उपसूत्र का प्रतिपादन किया है । इस उपसूत्र के अनुसार "किसी भी पंक्ति में वर्गों को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करना चाहिये । यह अनुक्रम मनमाने ढंग पर आधारित नहीं होना चाहिये, बल्कि किसी सुविधाजनक सिद्धान्त पर आधारित होना चाहिये ।"

3. सहायक-अनुक्रम की आवश्यकता

अध्ययन सामग्री का अधिक से अधिक उपयोग बढ़ाना पुस्तकालय का मुख्य उद्देश्य माना जाता है । इसके लिये पुस्तकालय में अनेक प्रक्रियायें अपनाई जाती है । वर्गीकरण प्रक्रिया का भी मुख्य उद्देश्य पाठकों को अपनी अध्ययन सामग्री की खोज करने में सहायता पहुँचाना है । अत: इस अध्ययन सामग्री को किसी सहायक-अनुक्रम में व्यवस्थित करना आवश्यक है ताकि पाठकों को उनकी अध्ययन सामग्री आसानी से मिल जाये ।

4. सहायक- अनुक्रम के सिद्धान्त

सहायक-अनुक्रम के उपसूत्र का पालन करने के लिये डॉ. रगंनाथन ने निम्नलिखित सिद्धान्तों का निर्माण किया है :

(क) कालक्रम में उतरता का सिद्धान्त (Principal of Later in Time)

इस सिद्धान्त का यह अर्थ है कि "यदि वर्गों की एक विशेष पंक्ति में विभिन्न वर्गों की उत्पत्ति अलग-अलग समय में हुई है हैं तो उन्हें क्रमश समय के अनुक्रम में व्यवस्थित करना चाहिये।" अर्थात् जिस वर्ग की उत्पत्ति पहले हुई है उसे प्रथम तथा जिस वर्ग की उत्पत्ति बाद में हुई हैदूसरा स्थान देना चाहिये । दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि ये जो वस्तु या सत्ता पहले उत्पन्न हुई है

इसे अनुक्रम में पहला स्थान तथा जो वस्तु या सत्ता बाद में पैदा हुई है उसे अनुक्रम में दूसरा स्थान देना चाहिये ।

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में इस सिद्धान्त का अनेक स्थानों पर अनुसरण किया गया है । धर्मशास्त्र विषय के अन्तर्गत विभिन्न धर्मों से संबंधित वर्गों को इसी सिद्धान्त के अनुसार व्यवस्थित किया गया है । वैदिक हिन्दू धर्म सबसे पहले उत्पन्न हुआ है अत: उसे पहला स्थान दिया गया है । इसके बाद कालक्रम के अनुसार अन्य धर्मों को स्थान दिया गया है । निम्नलिखित उदाहरण इस तथ्य को स्पष्ट कर देता है :

Q1	हिन्दू धर्म (वैदिक)
Q2	हिन्दू धर्म (वैदिकोत्तर)
Q3	जैन धर्म
Q4	बौद्ध धर्म
Q5	यहूदी धर्म
Q6	ईसाई धर्म
Q7	इसलाम
Q8441	सिख धर्म

किन्तु दशमलव वर्गीकरण पद्धति में इस सिद्धान्त का अनुसरण नहीं किया गया है । ईसाई धर्म जो यहूदी धर्म के भी बाद उत्पन्न हुआ है उसे सबसे पहला स्थान दिया गया है । बौद्ध धर्म को जैन धर्म के पहले स्थान दिया गया है । निम्नलिखित उदाहरण इस तथ्य को स्पष्ट कर देता है :

220/289	ईसाई धर्म
294.1	हिन्द धर्म (वैदिक)
294.3	बौद्ध धर्म
294.4	जैन धर्म
294.5	हिन्दू धर्म (वैदिकोत्तर)
294.6	सिख धर्म
296	यहूदी धर्म
297	इसलाम

इसका पालन का में के लिये द्विबिन्दु वर्गीकरण में अन्य स्थानों पर कालक्रम विधि का प्रयोग किया गया है । जैसे, साहित्य के क्षेत्र में सभी लेखकों को काल क्रम विधि का प्रयोग करके परवर्ती काल के अनुसार सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है । निम्नलिखत उदाहरण में भी परवर्ती काल के सिद्धान्त का पालन किया गया है ।

LB	आयुर्वेद पद्धति
LC	सिद्ध पद्धति
LD	यूनानी पद्धति
LL	हौम्योपैथी

(ख) **विकासक्रम में उत्तरता का सिद्धान्त (Principal of Later in Evolution)**

इस सिद्धान्त का अभिप्राय यह है कि “यदि वर्गों की एक विशेष पंक्ति में विभिन्न वर्ग विकास के विभिन्न चरणों से संबंध रखते हों (अर्थात् उनका विकास पहली अवस्था से दूसरी अवस्था में तथा दूसरी अवस्था से तीसरी अवस्था में हु आ है) तो उन्हें विकास क्रम के अनुसार व्यवस्थित करना चाहिये । अर्थात् पहली अवस्था वाले वर्ग को पहला स्थान तथा दूसरी अवस्था वाले वर्ग को बाद का स्थान मिलन चाहिये । उदाहरणस्वरूप :

द्विबिन्दु वर्गीकरण में इस सिद्धान्त का प्रयोग मुख्य वर्ग प्राणिशास्त्र में किया गया है । इस मुख्य वर्ग में सभी जन्तुओं को उनके विकासक्रम के अनुसार व्यवस्थित किया गया है । जन्तुओं की सबसे पहली अवस्था प्रोटोजोआ (Protozoa) है । अत: उसे सर्वप्रथम रखा है। अन्तिम अवस्था मेमेलिया (Mammalia) है । उसे सबके बाद रखा गया है । उदाहरणार्थ, उन्हें K2 से K97 तक व्यवस्थित किया है। इसी प्रकार वनस्पति शास्त्र में भी सभी वनस्पतियों को उनके विकासक्रम की अवस्थाओं के अनुसार व्यवस्थित किया गया है । इसके अतिरिक्त, जीव विज्ञान में भी जीवन को उसके विकास की विभिन्न अवस्थाओं के अनुसार व्यवस्थित किया गया है। जैसे, G9B = भ्रूण अवस्था, G9C = शिशु अवस्था, G9D = किशोर अवस्था, G9B = वृद्धावस्था । चिकित्साशास्त्र (Medicine) में भी इस सिद्धान्त के पालन का अच्छा उदाहरण मिलता है:

L = Medicine

L9B = Embryo

L9C = Child

L9D = Adolescent

L9E = Old

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में भी इस सिद्धान्त का अनेक जगहों पर अनुसरण किया गया है जैसे, सभी जन्तुओं को उनके विकासक्रम की अवस्थाओं के अनुसार 593.1 से 599 तक व्यवस्थित किया है । परन्तु अनेक स्थलों पर इस सिद्धान्त का पालन नहीं भी हु आ है ।

कालक्रम एवं विकासक्रम के सिद्धान्तों में अन्तर : कालक्रम के सिद्धान्त का प्रयोग तो उसे समय किया जाता है जबकि वर्गों से संबंधित वस्तुओं, सत्ताओं व घटनाओं का जन्म या आविर्भाव या आरंभ अलग-अलग समय में हु आ हो तथा उनके उत्पन्न होने का समय ज्ञान हो । इसके अलावा, ऐसे वर्गों में कोई पारस्परिक संबंध भी नहीं होता है । जैसे, धर्मशास्त्र विषय के अन्तर्गत सभी धर्मों का जन्म अलग-अलग समय में हुआ है तथा उनका आपस में कोई संबंध नहीं है । अत: सभी धर्मों को कालक्रम के सिद्धान्त के अनुसार व्यवस्थित किया गया है । किन्तु विकासक्रम के सिद्धान्त का प्रयोग उस स्थिति में किया जाता है जबकि विभिन्न वर्गों से संबंधित वस्तुओं का विकास पहली अवस्था से दूसरी अवस्था में तथा दूसरी अवस्था से तीसरी अवस्था में हुआ हो । इस प्रकार वे सभी वर्ग एक ही वस्तु की विभिन्न अवस्थाओं को व्यक्त करते है। बाद वाला वर्ग अपने विकास के लिये अपने से पहले वाले वर्ग पर आश्रित है । किन्तु इनके विकास की अवस्थाओं के समय का पता नहीं लगाया जा सकता है, जैसे: भ्रूण, शिशु, किशोर, व्यस्क ।

(ग) देशीय समीपता का सिद्धान्त (Principal of Spatial Contiguity)

इस सिद्धान्त का अर्थ यह है कि "यदि वर्गों की एक विशेष पंक्ति में विभिन्न वर्ग एक दूसरे से देशीय समीपता रखते हों तो उन्हें देशीय (भौगोलिक) समीपता के कम में रखना चाहिऐ । क्षेत्रीय समीपता का कम निर्धारण कई प्रकार से किया जा सकता है-ये वर्ग एक दूसरे से काल्पनिक खड़ी रेखा (Vertical Line) पर स्थित हो सकते हैं; आड़ी रेखा (Horizontal Line) पर स्थित हो सकते है; एक परिधि रेखा (Circle) पर स्थित हो सकते हैं । अत : इन्हें उनकी भौगोलिक समीपता के आधार पर उनके समानान्तर भौगोलिक अनुक्रम में व्यवस्थित करना चाहिये । अर्थात् ये वर्ग अपनी भौगोलिक स्थिति के आधार पर एक सीधी पंक्ति में या किसी वृत्त में या उसके अर्धव्यास पर, या वृत्त की परिधि पर विद्यमान हो सकते हैं । अत : वर्गों स्थानीय समीपता की स्थिति के अनुसार इस सिद्धान्त को कार्यान्वित किया जा सकता है।" उदाहरणार्थ :

(i) **खड़ी रेखा (Vertical Line)** पर स्थित वर्ग पंक्ति की व्यवस्था यदि वर्गों की किसी विशेष पंक्ति में विभिन्न वर्ग खड़ी रेखा पर स्थित हों तो उनकी भौगोलिक समीपता निम्न दो सिद्धान्तों के आधार पर निर्धारित करके उन्हें व्यवस्थित किया जा सकता है :

(अ) तलोपर गमनीयता का सिद्धान्त : अर्थात् जो वस्तु सबसे नीचे (तल) स्थित है उसे प्रथम स्थान पर दिया जाय और क्रमशः तल से ऊपर तलों की ओर चलकर अन्य सभी को व्यवस्थित किया जाए । जैसे किसी भी पेड़ के विभिन्न भागों को इस सिद्धान्त के आधार पर नीचे से ऊपर की ओर के क्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है । डॉ० रंगनाथन ने द्विबिन्दु वर्गीकरण में इसी आधार पर पेड़ के विभिन्न भागों को व्यवस्थित किया है । जैसे :

वनस्पति विज्ञान	= I
जडें	= I,13
तना	= I,14
पत्ते	= I.15
फूल	= I.16
फल	= I.17

(ब) **ऊपर-तल गमनीयता का सिद्धान्त (Principal of Top downwards) :** अर्थात् जो वस्तु सबसे ऊपर स्थित है उसे प्रथम स्थान दिया जाय और क्रमानुसार ऊपर से नीचे की ओर चलकर अन्य सभी को व्यवस्थित कर दिया जाये। द्विबिन्दु वर्गीकरण में इसका अच्छा उदाहरण राजनीति विज्ञान की सारणी में मिलता है ।

(ii) **आडी रेखा (Horizontal Line)** पर स्थित वर्ग पंक्ति की व्यवस्था : यदि वर्गों की एक विशेष पंक्ति में विभिन्न वर्ग एक आड़ी रेखा (काल्पनिक) पर स्थित ही तो उन्हें निम्नांकित सिद्धान्तों के आधार पर सहायक क्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है :

(अ) बायीं ओर से दाहिनी ओर का सिद्धान्त

(ब) दाहिनी ओर से बायीं ओर का सिद्धान्त

(iii) **वृत्त-रेखा पर स्थित पंक्ति-वर्गों की व्यवस्था :** यदि वर्गों की एक विशेष पंक्ति में विभिन्न वर्ग एक वृत्त (Circle) या गोलाकार (काल्पनिक) रेखा पर स्थित हों तो उन्हे निम्नलिखित सिद्धान्तों के आधार पर सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है :

(अ) दक्षिणावर्तन का सिद्धान्त (परिधि के साथ-साथ घड़ी की सुई की तरह दायीं ओर चल कर)

(ब) वामावर्तन का (परिधि के साथ-साथ घड़ी की सुई की उलटी दशा में बायीं ओर चलकर)

(iv) यदि वस्तुओं के वर्गों की स्थिति वृत्त के अर्धव्यास के साथ-साथ हो तो उनकी भौगोलिक समीपता निम्न सिद्धान्तों के आधार पर निर्धारित करके उन्हें सहायक-अनुक्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है :

(अ) परिधि से केन्द्र की ओर का सिद्धान्त

(ब) केन्द्र से परिधि की ओर का सिद्धान्त

(v) यदि वस्तुओं के वर्गों की स्थित ऐसी हो कि उनकी स्थिति केवल किसी एक स्थल से उनको दूरी के आधार पर निर्धारित करनी पड़े तो किसी एक निर्धारित स्थान से शुरूआत करके भिन्न-भिन्न दिशाओं की ओर चलकर उस स्थल से उनकी दूरी के आधार पर उनकी भौगोलिक समीपता निम्न सिद्धान्तों के अनुसार निर्धारित की जा सकती है :

(अ) दूरी वृद्धि का सिद्धान्त

(ब) दूरी ह्रास का सिद्धान्त

द्विबिन्दु वर्गीकरण में दूरी वृद्धि के सिद्धान्त का अनुसरण करके खगोल-शास्त्र में सभी ग्रहों को पृथ्वी से उनकी दूरी के आधार पर सहायक-अनुक्रम में व्यवस्थित किया है । जैसे

B91	=	पृथ्वी
B92	=	चन्द्रमा
B93	=	सूर्य
B941	=	मरकरी
B942	=	शुक्र
B943	=	मंगल
B945	=	बृहस्पति
B946	=	शनि

दशमलव वर्गीकरण में भी ग्रहों को इसी सिद्धान्त के अनुसार व्यवस्थित किया है ।

पूर्वोक्त सभी सिद्धान्त विरोधात्मक युगल (विपरीत जोड़ी) के रूप में दिये गये हैं । प्रत्येक जोड़ी में से किसी एक सिद्धान्त का (जिसका प्रयोग किया जा सकता है) चयन करना पड़ेगा । यह चयन संदर्भ के अनुसार करना पड़ेगा । यदि दोनों ही सिद्धान्त समान रूप से सहायक-अनुक्रम प्रदान करते हों तो इनमें से किसी एक सिद्धान्त का चयन करना होगा और इस चयन में सुसंगत अनुक्रम के उपसूत्र का करना होगा ।

द्विबिन्दु वर्गीकरण में एशिया महाद्वीप के विभिन्न देशों को इसी सिद्धान्त के अनुसार व्यवस्थित किया गया है । किन्तु दशमलव वर्गीकरण में इस सिद्धान्त का अनुसरण नहीं किया गया है ।

(घ) मात्रा या परिमाण वृद्धि का सिद्धान्त (Principal of increasing quantity)

इस सिद्धान्त का अभिप्राय यह है कि “यदि वर्गों की पंक्ति में विभिन्न वर्ग परिमाण या संख्या या मात्रा जैसी विशेषता को व्यक्त करते हों तो उन्हें परिणाम या मात्रा या संख्या के बढ़ते हु येक्रम में व्यवस्थित करना चाहिये।” अर्थात्, जो वर्ग सबसे कम संख्या या मात्रा प्रकट करता हो उसे पहला स्थान, उससे

अधिक संख्या या मात्रा वाले वर्ग को दुसरा स्थान, उससे भी अधिक संख्या या मात्रा वाले वर्ग को तीसरा स्थान प्रदान करनी चाहिये ।

जैसे किसी कक्षा के छात्रों को उनकी आयु के अनुसार क्रमबद्ध करना हो तो सबसे कम आयु वाले के प्रथम स्थान पर उससे अधिक आयु वाले को दूसरे स्थान पर व्यवस्थित किया जा सकता है । द्विबिन्दु वर्गीकरण में इस सिद्धान्त का अनुसरण अनेक स्थानों पर किया गया है । उदाहरणार्थ, रेखागणित के क्षेत्र को विभिन्न आकृतियों के आयामों (Dimensions) की संख्या के अनुसार उनके आयामों के बढ़ते हुए क्रम में व्यवस्थित किया है :

B91 = रेखा ज्यामिति (रेखा का केवल एक आयाम या परिमाप होता है-अर्थात् लम्बाई)

B92 = समतल ज्यामिति (समतल के केवल दो माप होते हैं- अर्थात् लम्बाई + चौडाई)

B93 = त्रय आयाम ज्यामिति (ठोस वस्तु के तीन माप होते हैं- अर्थात् लम्बाई + चौडाई - मोटाई)

B944 = चार आयाम की ज्यामिति इत्यादि

इसी प्रकार दशमलव वर्गीकरण में भी 516 के उपवर्गों में इस सिद्धान्त का अनुसरण किया गया है । द्विबिन्दु वर्गीकरण में भी इतिहास व राजनीति -शास्त्र वर्गों के अन्तर्गत सरकार के अगों को संख्या वृद्धि के सिद्धान्त के अनुसार व्यवस्थित किया है । जैसे :

V, 1 = राष्ट्र का अध्यक्ष

V, 2 = कार्यपालिका

V, 3 = विधायिका इत्यादि ।

यदि पंक्ति वर्गों को पूर्वोक्त सिद्धान्त के आधार पर सहायक-अनुक्रम में व्यवस्थित नहीं किया जा सके तो उन्हें इसके विलोम सिद्धान्त अर्थात् मात्रा ह्रास के सिद्धान्त का अनुसरण करके व्यवस्थित किया जा सकता है । अर्थात् वस्तुओं से संबंधित वर्गों को उनकी संख्या या मात्रा के घटते हुये क्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है । सबसे अधिक संख्या व्यक्त करने वाले वर्ग को प्रथम स्थान पर, उससे कम संख्या व्यक्त करने वाले वर्ग को दूसरे स्थान पर क्रमश: व्यवस्थित किया जा सकता है । उदाहरणार्थ, द्विबिन्दु वर्गीकरण में पुस्तकालय विज्ञान मुख्य वर्ग के अन्तर्गत पुस्तकालयों को जनसमस्या या क्षेत्रफल के परिमाण के आधार पर जनसंख्या व क्षेत्रफल के घटते हुये कम में व्यवस्थित किया गया है ।

211 = विश्व पुस्तकालय

213 = राष्ट्रीय पुस्तकालय

214 = क्षेत्रीय पुस्तकालय

213 = राज्य पुस्तकालय

216 = मण्डल पुस्तकालय

(ङ) जटिलता वृद्धि का सिद्धान्त

“यदि पंक्ति वर्गों की पंक्ति में विभिन्न वर्ग अलग-अलग अंश की जटिलता को प्रकट करते हों तो उन्हें उनकी जटिलता के अंश की वृद्धि के कम में स्थान प्रदान कर देना चाहिये।” अर्थात्, जो वर्ग सबसे कम जटिलता को प्रकट करता हो उसे प्रथम स्थान पर, उससे अधिक जटिलता वाले वर्ग को दूसरे स्थान पर, उससे भी अधिक जटिलता वाले वर्ग को तीसरे स्थान पर क्रमश: व्यवस्थित करना चाहिये ।

द्विबिन्दु वर्गीकरण में भाषा विज्ञान मुख्य विषय के अन्तर्गत भाषा के विभिन्न तत्वों को उनकी जटिलता के बढ़ते हुये क्रम में व्यवस्थित किया गया है । जैसे :

P, 1 = पृथक् ध्वनि

P, 2 = अक्षर

P, 3 = शब्द

P, 4 = वाक्यांश

P, 5 = मुहावरे (खण्ड काव्य)

P, 6 = पहेलियों (वाक्य) इत्यादि

इसी प्रकार रेखागणित में वक्र रेखाओं की जटिलता के बढ़ते क्रम में वक्र रेखाओं को व्यवस्थित किया है । जैसे :

B622 = दूसरे अंश की वक्र रेखा

B623 = तीसरे अंश की वक्र रेखा

B624 = पांचवें अंश की वक्र रेखा इत्यादि

(च) पारम्परिक अनुक्रम का सिद्धान्त (Principle of Comical Sequence)

यदि पूवोक्त सिद्धान्तों में से किसी सिद्धान्त का अनुसरण करके पंक्ति वर्गों को व्यवस्थित न किया जा सके तथा पंक्ति वर्गों की पंक्ति में विभिन्न पंक्ति वर्गों को परम्परा के आधार पर किसी अनुक्रम में पहले से ही व्यवस्थित कर दिया गया है तो उस ही प्रचलित अनुक्रम का अनुसरण करना चाहिये, यद्यपि उस अनुक्रम का कोई स्पष्ट सैद्धान्तिक आधार भी न हो । द्विबिन्दु वर्गीकरण में गणित मुख्य वर्ग के भागों को निम्नानुसार प्रामाणिक अनुक्रम में व्यवस्थित किया है :

B1 = अंक गणित (Arithmetic)

B2 = बीज गणित (Algebra)

B3 = विश्लेषण (Analysis)

B4 = कलन (Calculus)

B5 = त्रिकोणमिति (Trignometry)

B6 = रेखागणित (geometry)

साहित्य मुख्य वर्ग में साहित्य के विभिन्न स्वरूपों को भी निम्नानुसार प्रामाणिक अनुक्रम में व्यवस्थित किया है :

O, 1 = पद्य

O, 2 = नाटक

O, 3 = उपन्यास

O, 4 = पत्र

O, 5 = भाषण इत्यादि ।

दशमलव वर्गीकरण में भी लगभग इसी पारम्परिक अनुक्रम को अपनाया गया है ।

(छ) साहित्यिक माँग का सिद्धान्त (Principal of Literary Warrant)

इस सिद्धान्त का अभिप्राय यह है कि "पंक्ति वर्गों की पंक्ति में विभिन्न वर्गों को उन वर्गों से संबंधित विषयों पर प्रकाशित साहित्य (अध्ययन सामग्री) के घटते हुये क्रम में व्यवस्थित कर देना चाहिये । अर्थात् जिस विषय वर्ग पर सबसे अधिक साहित्य (अध्ययन सामग्री) या लेख प्रकाशित हु ये हैं उसे प्रथम स्थान पर, जिस विषय पर इससे कम संख्या में पुस्तकें प्रकाशित हु यी हैं उसे दूसरे स्थान पर क्रमशः व्यवस्थित करना चाहिये । इस सिद्धान्त को अंगीकृत श्रेणी का सिद्धान्त (favoured Category Principal) भी कहते हैं । इस सिद्धान्त का बड़ी सावधानी से प्रयोग करना चाहिये । जब किसी अन्य सिद्धान्त का प्रयोग करना संभव न हो तब हो इसका प्रयोग करना चाहिये ।

द्विबिन्दु वर्गीकरण में कृषि मुख्य विषय के अन्तर्गत विभिन्न वर्गों की फसलों को इसी सिद्धान्त के अनुसार निम्न प्रकार से व्यवस्थित किया है

J381 = चावल, J382 = गेहूं, J383 = जई, J384 = राई इत्यादि

किन्तु दशमलव वर्गीकरण में इस सिद्धान्त का उल्लंघन करके चावल को 633.18 वर्ग संख्या के अन्तर्गत सबसे बाद में रखा गया है ।

(ज) वर्णानुक्रम का सिद्धान्त (Principal of Alphabetical Sequence)

यदि पंक्ति वर्गों की पंक्ति में विभिन्न वर्गों को सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करने के लिये किसी अन्य सिद्धान्त को प्रयोग में नहीं लाया जा सके तो उन्हें उनके नाम के आधार पर वर्णक्रम में व्यवस्थित कर देना चाहिये । ऐसा करते समय उस वस्तु या सत्ता के उसी नाम को अपनाना चाहिये जो सामान्य रूप से सभी जगह (अर्थात् अन्तराष्ट्रीय स्तर पर) प्रयोग में लाया जाता हो ।

द्विबिन्दु वर्गीकरण में कृषि विषय के अन्तर्गत फसलों की विभिन्न किस्मों को, इन्जीनीयरी में वाहनों की विभिन्न निर्माण विशेषता सूचक श्रेणियों को उनके नाम के अनुसार वर्णक्रम में व्यवस्थित किया जा सकता हैं । निम्न उदाहरण इस तथ्य को स्पष्ट करने हैं :

J451 = चाय, J451B = ब्रुकब्रॉन्ड की चाय, J451L = लिपटन की चाय ।

D5125 = साइकिल, D5125A = एटलस साइकिल D5125H = हीरो साइकिल

D5125R = रैले साइकिल, D5133 = मोटर कार D5133A = अम्बासैडर कार

D5133F = फीयट कार इत्यादि ।

इस सिद्धान्त का प्रयोग करते समय किसी वस्तु के नाम का प्रथम अक्षर, उसके नाम के प्रथम दो अक्षर या तीन अक्षर प्रयोग में लाये जा सकते हैं यदि दो वस्तुओं के नाम उसी एक अक्षर से प्रारंभ होते हों तो ।

दशमलव वर्गीकरण में भी कुछ स्थानों पर इस सिद्धान्त का अनुसरण किया गया है । भारत वर्ष के राजनीतिक दलों को वर्णक्रम में निम्नानुसार व्यवस्थित किया जा सकता है ।

329.954 = भारत के राजनीतिक दल

329.954B = भारतीय जनता पार्टी

329.954C = कांग्रेस पार्टी

329.954J = जनता पार्टी इत्यादि

5. सारांश

पुस्तक-संग्रह का अधिक में अधिक उपयोग बढ़ाना ही पुस्तकालय का मुख्य उद्देश्य माना जाता है। वर्गीकरण इस उद्देश्य की पूर्ति में अधिक से अधिक सहायता प्रदान करता है । सर्वप्रथम, वर्गीकरण ज्ञान के क्षेत्र के विभिन्न विभाजनों की जानकारी प्राप्त करता है । इसके बाद, पाठकों की सुविधा के लिये सभी विभाजनों को किसी सहायक-अनुक्रम में व्यवस्थित किया जाना है । किन्तु, यह सहायक-अनुक्रम मनमाने ढंग पर आधारित नहीं होना चाहिये । अपितु, वह कुछ सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिये । डॉ. रंगनाथन ने पंक्ति वर्गों को सहायक अनुक्रम मे व्यवस्थित करने के लिये आठ सिद्धान्तों का निर्माण किया है । इन सिद्धान्तों के आधार पर पंक्ति वर्गों को समय क्रम, विकास क्रम, भौगोलिक अनुक्रम, अंगीकृत श्रेणी अनुक्रम व वर्णक्रम के आधार पर सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित किया जा सकता है । ये सिद्धान्त पंक्ति वर्गों की विभिन्न विशेषताओं को ध्यान में रखकर बनाये गये हैं । इन सिद्धान्तों के आधार पर अध्ययन सामग्री का व्यवस्थापन करने पर पाठक अपनी रुचि के सभी सह-संबंधित विषयों को स्थान पर सहायक अनुक्रम में प्राप्त कर लेता है ।

अत: वर्गीकरण में सहायक अनुक्रम के सिद्धान्तों का बहुत अधिक महत्व है ।

6. वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(क) निम्नलिखित में से सही या गलत बताइये :

(i) सहायक-अनुक्रम केवल पुस्तकालय कर्मचारियों को लिये सहायक होना चाहिये ।

(ii) सहायक-अनुक्रम पाठकों के लिये सहायक होना चाहिये ।

(ख) निम्नलिखित में से कौन-कौन से अनुक्रम सहायक हैं और क्यों :

(i) माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, विश्वविद्यालयी शिक्षा

(ii) विश्वविद्यालर्यी शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा

(iii) प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, विश्वविद्यालयी शिक्षा

(iv) राजतन्त्र, सामन्तवादी राज्य, प्रजातन्त्र

(v) प्रजातन्त्र, राजतन्त्र, सामन्तवादी राज्य

(vi) सामन्तवादी राज्य, राजतन्त्र, प्रजातंत्र

(vii) आर्य समाज (1880), बह्म समाज (1820), प्रार्थना समाज (1860)

(viii) प्रार्थना समाज (1860), ब्रह्म समाज (1820), आर्य समाज (1880)

(ix) ब्रह्म समाज (1820), प्रार्थना समाज (1860), आर्य समाज (1880)

(x) चतुर्भुज, त्रिभुज, षड्भुज

(xi) षड्भुज, चर्तुभुज, त्रिभुज

(xii) त्रिभुज, चर्तुभुज, षड्भुज

6.1 प्रश्न

(क) सहायक-अनुक्रम का अर्थ स्पष्ट कीजिये

(ख) कालक्रमों में उत्तरता एवं विकास के क्रम में उत्तरता के सिद्धान्तों का वर्णन कीजिये तथा इन दोनों सिद्धान्तों का अन्तर स्पष्ट कीजिये ।

(ग) द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में सहायक-अनुक्रम के सिद्धान्तों के प्रयोग का वर्णन कीजिये ।

(घ) भौगोलिक-अनुक्रम के सिद्धान्त के विभिन्न पहलुओं का उदाहरण सहित वर्णन कीजिये ।

(ङ) दशमलव वर्गीकरण में सहायक-अनुक्रम के कौन-कौन से सिद्धान्तों का अनुसरण किया गया है ।

7. विस्तृत अध्ययन के लिये ग्रंथ सूची

(क) Krishna Kumar: theory of Classification. Rev. ed. 2. New Delhi, Vikas Publishing House. Ltd. 1981, P.104-115.

(ख) Ranganathan, S.R.: Elements of Library Classification. Ed. 3 Bombay, Asia Publishing House, 1962.

(ग) Ranganathan, S.R.: पुस्तकालय वर्गीकरण के मल तत्व अनु. उमेश दत्त शर्मा ।

(घ) Ranganathan, S.R.: Colon Classification. Ed. 6 (Reprinted 1963).

(ङ) Ranganathan, S.R.: Prolegomena to Library Classification. Ed. 3. Bombay, Asia, 1967.

(च) त्रिपाठी, एस.एम.: आधुनिक ग्रंथालय वर्गीकरण. आगरा, श्रीराम मेहरा एण्ड कं. 1976 पृ. 49-52.

NOTES

कोर्स - IA : पुस्तकालय वर्गीकरण - सिद्धान्त

इकाई - 5:

पाँच मूलभूत श्रेणियां-सामान्य परिचय

(Five Fundamental Categories - General Description)

उद्देश्य :

1. मूलभूत श्रेणियों के अर्थ व उसकी परिभाषा से परिचित होना।
2. मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा के औचित्य को समझाना।
3. विभिन्न मूलभूत श्रेणियों व उनके आर्वनों वं स्तरों को जानना।

संरचना / विषयवस्तु

1. विषय प्रवेश
2. मूलभूत श्रेणियों की परिभाषा
3. डॉ. रंगनाथन की विचारधारा
4. पांच मूलभूत श्रेणियाँ
   - 4.1 मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व
   - 4.2 मूलभूत श्रेणी पदार्थ
   - 4.3 मूलभूत श्रेणी ऊर्जा
   - 4.4 मूलभूत श्रेणी देश
   - 4.5 मूलभूत श्रेणी काल
5. मूलभूत श्रेणियों के आवर्तन एवं स्तर
   - 5.1 व्यक्तित्व पक्ष के आवर्तन
   - 5.2 पदार्थ पक्ष के आवर्तन
   - 5.3 ऊर्जा पक्ष के आवर्तन
6. मूलभूत श्रेणियों के स्तर
   - 6.1 व्यक्तित्व पक्ष के स्तर
   - 6.2 पदार्थ पक्ष के स्तर
   - 6.3 स्थान पक्ष के स्तर
   - 6.4 काल पक्ष के स्तर
7. सारांश
8. अभ्यासार्थ प्रश्न
9. संदर्भ ग्रंथ

1. विषय प्रवेश

ज्ञान जगत मनुष्य द्वारा अर्जित असंख्य विचारों का समूह है । ये विचार अनेक दिशाओं में फैले हुये हैं । अनेक प्रकार से सम्बन्धित विचारों का संश्लेषण ज्ञान का विशिष्ट क्षेत्र कहलाता है । ज्ञान के विशिष्ट

क्षेत्र में सम्मिलित किये जाने वाले, सभी विचारों को व्यवस्थित कम में रखना आवश्यक है । उन्हें व्यवस्थित कम में रखने के लिये सर्वप्रथम इन्हें कुछ मूलभूत पक्षों में वर्गीकृत करना आवश्यक है । इन मूलभूत पक्षों को ही मूलभूत श्रेणियां कहते हैं । इस प्रकिया का मल आधार पक्ष विश्लेषण है । पक्ष विश्लेषण का अर्थ है -विभिन्न विचारों को विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत करना तथा प्रत्येक श्रेणी के अन्तर्गत विचारों को एक अनुवर्गीय व्यवस्था में क्रमबद्ध करना ।

2. परिभाषा

श्रेणियों को अनेक प्रकार से परिभाषित किया गया है । विद्वान के अनुसार श्रेणी उस दृष्टिकोण को सूचित करती है जिसके अनुसार किसी विषय को विभाजित किया जा सकता है । फोस्केट ने श्रेणियों को पक्षों के समान ही माना है । डॉ. रंगनाथन ने इसे विशिष्ट अर्थ में प्रयोग किया है । उनके अनुसार किसी विषय का प्रत्येक पक्ष, तथा किसी पक्ष का प्रत्येक विभाजन, पांच मूलभूत श्रेणियों में से किसी एक श्रेणी की अभिव्यक्ति होती है ।

3. रंगनाथन की विचारधारा

डॉ. रंगनाथन के अनुसार प्रत्येक विषय असंख्य विचारों का समूह है । प्रत्येक विषय के विचारों को हम केवल पांच मूलभूत श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं जिनके नाम हैं -व्यक्तित्व, पदार्थ ऊर्जा, देश तथा काल श्रेणी । ये पांच पक्ष डॉ. रंगनाथन की अभिधारणा पर आधारित है । उन्होने इन्हें उल्लेख करके ही समझाया है । ये श्रेणियों उपयोगी एवं सुविधाजनक साबित हुई हैं यही इस अभिधारणा का औचित्य है ।

पांच मूलभूत श्रेणियों के व्यक्तिगत नामों तथा उनकी संख्या' का कोई सैद्धान्तिक आधार नहीं है । रंगनाथन का कहना है जिस प्रकार रंग असंख्य होते हैं किन्तु वे प्रमुख चार रंगो के ही विविध रूप है, ध्वनियां अनेक होती हैं किन्तु वे प्रमुख पांच ध्वनियों की ही अभिव्यक्ति हैं उसी प्रकार किसी विषय में अगणित विशेषताऐं हो सकतीं हैं, किन्तु इन सबका विघटन प्रमुख पांच श्रेणियों में ही किया जा सकता है ।

वर्गीकरण का आधार विषय में निहित विशेषताऐं होती हैं । इन विशेषताओं के आधार पर बनने वाले वर्गो की संख्या इतनी अधिक होती है कि इनका विघटन वर्गों के कुछ मूलभूत समूहों के रूप में करना आवश्यक हो जाता है । डॉ. रंगनाथन ने यह अनुभव किया कि किसी को विधिवत अध्ययन करने की दृष्टि से, विभाजन के लिये चयनित समस्त विशेषताओं के आधार पर बनने वाले वर्ग, पांच मूलभूत श्रेणियों-व्यक्तित्व, पदार्थ, ऊर्जा, देश व काल हो सकते हैं । डॉ ० रंगनाथन ने इन्हें श्रेणियों के नाम से अभिव्यक्त किया है । ये पांच मूलभूत श्रेणियाँ ही किसी विषय के पांच पक्ष है ।

पांच मूलभूत श्रेणियों को मूर्तता के हास सिद्धान्त के अनुसार निम्नक्रम में रखा जा सकता है- (पी) (एम) (इ) (एस) (टी) संक्षेप में इन्हें पी एम इ एस टी कहा जाता है ।

4. पांच मूलभूत श्रेणियाँ

किसी विषय का आधारभूत अंग या मुख्य अध्ययन क्षेत्र उस विषय का व्यक्तित्व पक्ष होता है । किसी विषय के अध्ययन में किसी पदार्थ का समावेश हो जाता है तो उसे उसका पदार्थ पक्ष कहते हैं । विषय की समस्याऐं, उसके कार्यकलाप, उसकी प्रक्रियाऐं उसका ऊर्जा पक्ष है । किसी विषेय का अध्ययन जब किसी भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर होता है तो वह उसका देश पक्ष कहलाता है तथा किसी विषय का

अध्ययन जब किसी समय के अनुसार होता है तो वह उसका कलापक्ष होता है । इसे निम्नलिखित उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं-

Value of Silver Currency in India during 20th century

पूर्वोक्त विषय अर्थशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र में आता है । पांच मूलभूत श्रेणियों में विभाजित करने पर उसके पांच मूलभूत पक्ष निम्न प्रकार होंगे -

Currency व्यक्तित्व पक्ष	:	विषय का आधारभूत अंग होने के कारण व्यक्तित्व पक्ष हुआ।
Silver पदार्थ पक्ष	:	वह पदार्थ है जिससे मुद्रा निर्मित हुईहै, अत: यह पदार्थ पक्ष हुआ ।
Value ऊर्जा पक्ष	:	समस्या पक्ष है, अतऊर्जा पक्ष हुआ । :
India देश पक्ष	:	वह भौगोलिक क्षेत्र है संबंधित है, अत यह देश पक्ष : हुआ ।
20th Century काल पक्ष	:	वह काल है जिसमें विषय का अध्ययन किया गया है, अतयह काल पक्ष हुआ । :

प्रत्येक श्रेणी की पृथक् से पहचान के लिये उनके लिये पृथक् -पृथक् संयोजक चिन्ह निर्धारित किये हैं जो निम्न प्रकार हैं :

मूलभूत श्रेणी का नाम	अनुसूची में प्रयुक्त चिन्ह	संयोजक चिन्ह
व्यक्तित्व श्रेणी	(पी)	(कोमा)
पदार्थ श्रेणी	(एम)	(सेमीकोलन)
ऊर्जा श्रेणी	(इ)	(कोलन)
देश श्रेणी	(एस)	(डोट)
काल श्रेणी	(टी)	(उल्टा उद्धरण चिन्ह)

4.1 मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व :

यहां मूलभूत श्रेणियों का उनके अर्थ, प्रकृति एवं विषय में भूमिका को दृष्टिगत रखते हुये संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है ।

व्यक्तित्व पक्ष, किसी विषय को सुनिश्चित आधार प्रदान करता है । यह विषय का मूलभूत आधार होता है । अन्य श्रेणियों की क्रियान्विति इस श्रेणी के अस्तित्व पर निर्भर करती है । इसके अभाव में न तो विषय के 'किसी अंग का अस्तित्व और न उसके कार्य कलापों, समस्याओं इत्यादि का होना संभव है । व्यक्तित्व श्रेणी विषय का वह स्थल एवं विशिष्ट होती है जिस पर पूरा का पूरा विषय आधारित होता है । व्यक्तित्व श्रेणी विषय में अन्तर्निहित होती है और दूसरी श्रेणियों को आधार प्रदान करने का कार्य करती है । द्विबिन्दु वर्गीकरण के छठे संस्करण में व्यक्तित्व श्रेणी प्रथम श्रेणी के रूप में प्रयुक्त हुई है । उदाहरणार्थ -मुख्यवर्ग पुस्तकालय विज्ञान में पुस्तकालयों के, प्रकारों के रूप में, मुख्यवर्ग वनस्पतिशास्त्र में पौधों

के प्राकृतिक वर्गो के रूप में तथा मानव -शरीर विज्ञान में मानव के शरीर के अंग प्रत्यंगों के रूप में ।

डॉ. रंगनाथन ने इसे भ्रामक, अकथनीय एवं अवर्णनीय बताया है । इस श्रेणी को पहचानना अपेक्षाकृत कठिन है अत: इसके लिये अवशेष विधि का प्रयोग किया है-अर्थात काल, स्थान ऊर्जा एव पदार्थ श्रेणी के बाद जो -शेष रहे वह व्यक्तित्व श्रेणी है ।

इसका संयोजक चिन्ह कोमा है किन्तु मुख्य वर्ग के तुरन्त बाद प्रयोग होने पर इसके लिये किसी प्रकार के संयोजक चिन्ह की आवश्यकता नही होती ।

4.2 मूलभूत श्रेणी पदार्थ :

पदार्थ श्रेणी से अभिप्राय उन पदार्थों व वस्तुओं से है जो विषय के किसी वर्ग का निमार्ण करने में प्रयुक्त होती हैं । उदाहरणार्थ, लकडी, कागज, ऊन इत्यादि सभी पदार्थ

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में पदार्थ का प्रयोग गिने चने मुख्य वर्गों में हुआ है । उदाहरणार्थ -मुख्य वर्ग पुस्तकालय विज्ञान में- पुस्तकालयों में उपलब्ध विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्री के रूप में , परम्परागत वर्ग चित्रकला में चित्रों के विभिन्न धरातलों जैसे-कपड़ा, लकड़ी, हाथीदांत, कांच इत्यादि के रूप में इस का प्रयोग हुआ है ।

4.3 मूलभूत श्रेणी ऊर्जा :

ऊर्जा से अभिप्राय विषय के कार्यकलापों, गति विधियों, प्रक्रियाओं तथा समस्याओं से है । इस श्रेणी का प्रयोग अधिकांश मुख्य वर्गो में हुआ है । उदाहरणार्थ

मुख्यवर्ग जीव विज्ञान में जीवों के वर्गीकरण, सरंचना, शरीर किया विज्ञान परिस्थितिकी इत्यादि के रूप में, मुख्य वर्ग शिक्षा में, शिक्षण के तरीकों, छात्र समस्याओं, शिक्षा व्यवस्था इत्यादि के रूप में मुख्य वर्ग समाजशास्त्र में. समाज में व्याप्त व्याधियों तथा उनके समाधानों के रूप में. इस श्रेणी का प्रयोग हुआ है ।

अनेक मुख्य वर्गो में इस श्रेणी का प्रयोग अन्य अर्थों में भी हुआ है । उदाहरणार्थ परम्परागत वर्ग ललित कलाओं में. Technique के रूप में तथा कृषि में Sowing, Harvesting इत्यादि के रूप में ।

4.4 मूलभूत श्रेणी - देश :

देश श्रेणी का प्रयोग उसी रूप में हुआ है जिस रूप में यह सामान्य तौर पर जानी जाती है । इसको चार खण्डों में विभाजित किया गया है ।

(i) राजनीतिक विभाग के रूप में - अर्थात् राजनीतिक या प्रशासनिक आधार पर निर्मित भौगोलिक क्षेत्र जैसे एशिया, यूरोप, भारत, चीन आदि ।

(ii) जनसंख्यानुसार, विभाग - जब किसी बड़े राजनीतिक के छोटे - छोटे विभागों का भौगोलिक सारणी में उल्लेख नहीं मिलता तो उनके वर्गांकों को वर्णक्रम विधि के द्वारा बनाने का प्रावधान है । अर्थात राजनीतिक विभाग के साथ छोटी इकाई के नाम का प्रथम अक्षर

संयोजक चिन्ह डोट मे जोड़ कर दिया जाता है । उदाहरणार्थ - Climate of Churu (Rajasthan U287. 4437.C

(iii) प्राकृतिक विभाग - इसमें पर्वत, झील, नदी, डेल्टा इत्यादि प्राकृतिक विभागों को लिया गया है । इन्हें संशोधित रूप में परिशिष्ट में प्रस्तुत किया गया है ।

(iv) दिशानुसार विभाग - किसी भी भौगोलिक क्षेत्र को दिशानुसार विशिष्टता प्रदान करने हेतु भौगोलिक सारणी में प्रावधान किया गया है । जैसे पूर्वी देश, पश्चिमी देश आदि ।

4.5 मूलभूत श्रेणी - काल :

इस श्रेणी का प्रयोग उसी रूप में हुआ है जिस रूप में सामान्यत : इसे समझा जाता है । इसे पहचानना अपेक्षाकृत सरल है । प्राय : सभी विषयों का अध्ययन समय के अनुसार किया जा सकता है ।

समय की प्रतीक संख्या को शताब्दी, दशाब्दी, वर्ष, माह, दिन घन्टे इत्यादि इकाइयों के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है । इसे भूत, भविष्यत व वर्तमान की कलावधियों को व्यक्त करने के लिये भी किया जाता है । उदाहराणार्थ -

Library Science in 20^{th} Century 2‘N

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में दशाब्दी के रूप में इसका प्रयोग अन्तिम प्रभावी दशक के रूप में भी करने के निर्देश है । उदाहरणार्थ -

History of Social Science in India upto 1981 SZv44’N9

इस श्रेणी का प्रयोग स्तरित -शैलविज्ञान (Stratigraphy) में विभिन्न भूगर्भ शास्त्रीय ' युगों के लिये किया गया है । जैसे Cainozoic Mesozonic भूवैज्ञानिक समय को ज्ञात करने के लिये मुख्य वर्ग Geology में पृथक् से प्रावधान है ।

समय श्रेणी का प्रतिरूपण व्यक्तित्व श्रेणी के रूप में अनेक मुख्य वर्गो में हुआ है । जैसे मुख्य वर्ग साहित्य में इसका प्रयोग लेखक पद को निर्मित करने के लिये व्यक्तित्व पक्ष के तीसरे स्तर के रूप में हुआ है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइए

(अ) मूलभूत श्रेणी :

1. व्यक्तित्व का पहचानना सबसे सरल है ।
2. काल को पहचानना सबसे कठिन है ।
3. व्यक्तित्व सभी विषयों का मूल आधार है ।
4. पदार्थ सभी विषयों को गीत प्रदान करती है ।

(ब) मूलभूत श्रेणी

1. पदार्थ का प्रयोग सभी विषयों में किया गया है ।
2. ऊर्जा का प्रयोग सबसे कम हुआ है ।

(स) देश श्रेणी का प्रयोग :

1. दो खण्डों में हुआ है हाँ / नहीं

2. इसे पहचानना कठिन हाँ / नहीं

(द) काल श्रेणी का प्रयोग :

1. दशाब्दी, शताब्दी व वर्ष के रूप में हुआ है ।
2. भूशास्त्रीय युगों के लिये हुआ है ।
3. अन्तिम प्रभावी दशक के रूप में नहीं हुआ है ।
4. भूत भविष्यत काल को अभिव्यक्त करने के लिये नहीं हुआ है ।
5. केवल वर्तमान काल के लिये हुआ है ।
6. भूत, भविष्यत, वर्तमान सभी कालों के लिये हुआ है ।

5. मूलभूत श्रेणियों के आवर्तन एवं स्तर

आवर्तन का अर्थ है किसी पक्ष का एक बार से अधिक बार प्रयोग होना । इस अभिधारणा के अनुसार एक पक्ष का एक से अधिक बार भी प्रयोग हो सकता है । द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में (पी), (एम) व (ई) पक्षों का एक से अधिक बार प्रयोग हुआ है ।

किसी पक्ष का प्रथम वार का प्रयोग उसका सामान्य प्रयोग होता है । किन्तु प्रथम बार में प्रयोग के बाद यदि किसी पक्ष का दूसरी बार प्रयोग होता है तो वह उसका दूसरा आवर्तन कहलाता है ।

(पी) पक्ष के प्रथम आवर्तन को (1पी) अथवा (पी), दूसरे आवर्तन को (2पी) तथा तीसरे आवर्तन को (3पी) के रूप में व्यक्त किया जाता है ।

(एम) पक्ष के प्रथम आवर्तन को (1एम) अथवा (एम) दूसरे आवर्तन को (2एम) तथा तीसरे आवर्तन को (3एम) के रूम में व्यक्त किया जाता है ।

(ई) पक्ष के प्रथम आवर्तन को (1ई) अथवा (ई) दूसरे आवर्तन को (2ई) तथा तीसरे आवर्तन को (3 ई) के रूप में व्यक्त किया जाता है ।

(एस) व (टी) पक्षों के आवर्तन नहीं होते ।

5.1 व्यक्तित्व (पी) पक्ष के आवर्तन

रंगनाथन की एक अभिधारणा के अनुसार (पी) पक्ष अपने प्रथम आवर्तन में, मुख्य वर्ग के साथ बिना किसी संयोजक चिन्ह के प्रयुक्त होता है । किन्तु एक अन्य अभिधारणा के अनुसार (पी) पक्ष का दूसरी बार प्रयोग (इ) पक्ष के बाद ही किया जा सकता है । (इ) पक्ष के बाद (पी) पक्ष का प्रथम बार आना (2पी) पक्ष कहलाता है । इसी प्रकार: (2ई) पक्ष के बाद (पी) पक्ष का दूसरी बार आना (3पी) पक्ष कहलाता है । (ई) पक्ष के बाद (पी) पक्ष के प्रयोग होने पर किसी प्रकार के संयोजक चिन्ह की आवश्यकता नहीं होती । उदाहरणार्थ -

Infection in lungs 145:42

यहाँ (इ) पक्ष की एकल संख्या 4Disease के साथ (पी) पक्ष की एकल संख्या 2 को सीधा जोड़ दिया गया है । यदि (पी) पक्ष पुन : आता है तो वह (पी) पक्ष का तीसरा आवर्तन कहलाता है । उदाहरणार्थ -

Treatment of lung infection by injection L45: 42: 616

यहाँ एकल संख्या 6 ऊर्जा के द्‌वितीय आवर्तन के रूप में प्रयुक्त हुई है तथा इसके साथ संलग्न एकल संख्या 16 व्यक्तित्व पक्ष का तीसरा आवर्तन है । नियमानुसार एकल संख्या 6 तथा 16 के बीच किसी प्रकार के संयोजक चिन्ह का प्रयोग नही किया गया है ।

पी पल के दूसरे आवर्तन का दूसरा स्तर अर्थात्‌ (2 पी 2) पक्ष

(ई) पक्ष के बाद (पी) पक्ष का प्रयोग, (2 पी) पक्ष कहलाता है जिसे (इ) (2पी) के रूप में व्यक्त किया जाता है । रंगनाथन की एक अन्य अभिधारणा के अनुसार (इ) (2 पी) पक्ष के बाद (पी) पक्ष का स्तर भी प्रयोग में लाया जा सकता है । इसे (2 पी 2) पक्ष अर्थात्‌ व्यक्तित्व पक्ष के दूसरे आवर्तन दुसरा स्तर (Second Round Second Level Personality) कहते है । इसके लिए (पी) पक्ष के संयोजक चिन्ह कोमा का प्रयोग किया जाता है । उदाहरणार्थ-

Quantitative macro analysis E:34, 1

Teaching of Library Science by discussion method T:3(2) , 98

उपयुक्त' उदाहरणों में एकल संख्या 1macro तथा 98Discussion (इ) (2पी) पक्ष के बाद प्रयुक्त हुई है अत: यह (2पी 3) पक्ष हुआ । नियमानुसार संयोजक चिन्ह कोमा का प्रयोग किया गया हैं ।

5.2 पदार्थ (एम) पक्ष के आवर्तन :

(इ) पक्ष के बाद (एम) पक्ष का प्रयोग (2एम) पक्ष तथा (इ) पक्ष के बाद (एम) पक्ष का प्रयोग (3एम) पक्ष कहलाता हैं । इसके लिये (एम) पक्ष के संयोजक चिन्ह सेमीकोलन का प्रयोग किया जाता है ।

(एम) पक्ष के आवर्तन प्राय: गहन वर्गीकरण (Depth Classification) के लिये किये जाते हैं ।

(एम) पक्ष के आर्वतनों की आवश्यकता प्राय : मुख्य वर्ग C Physics , G Biology , I Botany , K Zoology तथा L Medicine इत्यादि में होती है, जबकि जीवन की दैहिक प्रक्रियाओं में पदार्थो के उपयोग को दर्शाने की आवश्यकता होती है । उदाहरणार्थ :

Iron meta bolism in plant cells I11:33; 182

Treatment by Saline water injection L:4:616; 41171

प्रथम उदाहरण में (एम) पक्ष का 2 पी पक्ष के बाद प्रयोग हुआ है अत: (2 एम) पक्ष हुआ । जबकि दूसरे उदाहरण में (एम) पक्ष का प्रयोग (2इ) (3पी) के बाद ह आ है अत : (3 एम) कहलायेगा । नियमानुसार संयोजक चिन्ह सेमीकोलन का प्रयोग किया गया है ।

5.3 ऊर्जा इ पक्ष के आवर्तन :

डॉ. रंगनाथन की एक अभिधारणा के अनुसार (इ) पक्ष, एक ही विषय में एक से अधिक बार प्रयोग में लाया जा सकता है । अर्थात्‌ ऊर्जा पक्ष के एक से अधिक आवर्तन संभव हैं । प्रथम आवर्तन (इ) तथा दूसरा (2इ) कहलाता है । (2इ) पक्ष का प्रयोग बिना (इ) पक्ष के नहीं हो

सकता है। अर्थात् (2इ) पक्ष के लिये (इ) पक्ष का होना अनिवार्य है । (इ) व (2इ) पक्षों को संयोजक चिन्ह कोलन से जोड़ा जाता है । उदाहरणार्थ :

(2इ) पक्ष का प्रयोग अनेक मुख्य वर्गों में पृथक् - पृथक् नामों से हुआ है । उदाहरणार्थ :

मुख्य वर्ग J Agriculture में इसे Operation, तथा

मुख्य वर्ग L Medicine में इसे Handling Facet कहा है ।

6. मूलभूत श्रेणियों के स्तर

6.1 व्यक्तित्व (पी) पक्ष के स्तर

डॉ. रंगनाथन की अभिधारणा के अनुसार किसी में (पी) (एम) (एस) व (टी) पक्षों का प्रयोग एक से अधिक स्तरों में हो सकता है । डॉ. रंगनाथन के अनुसार सम्पूर्ण विषय में, उसका भाग अथवा कोई खण्ड (पी) पक्ष के स्तर के रूप में प्रयुक्त होते हैं। नियमानुसार सर्व प्रथम समष्टि (whole) आता है तत्पश्चात् उसका भाग (organ) रखा जाता है । उदाहरणार्थ :

Leaf of a cryptogamia 1 11, 15

पूर्वोक्त उदाहरण में (पी2) पक्ष की अभिव्यक्ति पौधे के एक भाग के रूप में हुई है । (पी) पक्ष का पहला स्तर (पी 1) अथवा (पी), दूसरा स्तर (पी 2), तीसरा स्तर (पी 3) तथा चौथा स्तर (पी4) कहलाता है । (पी) पक्ष के स्तर मुख्य वर्ग Generalia Bibliography , O Literaturire इत्यादि में प्रयुक्त हुये हैं । सामान्यत: (पी) के स्तरों को संयोजक चिन्ह कोमा से जोड़ा जाता है किन्तु जहां अनुसूची में कोमा के प्रयोग के निर्देश नहीं है वहाँ इसका प्रयोग नहीं करना चाहिये । उदाहरणार्थ - 0111, 2J64, 21

पूर्वोक्त; उदाहरण में (पी) पक्ष अपने चार स्तरों में प्रयुक्त हुआ है । तथा द्वितीय एवं तृतीय स्तरों के लिये कोमा का प्रयोग नहीं किया गया है ।

6.2 पदार्थ (एम) पक्ष के स्तर

(एम) पक्ष के स्तरों का प्रयोग द्विबिन्दु वर्गीकरण के छठवें संस्करण में नहीं किया गया है । किन्तु इसका प्रयोग गहन वर्गीकरण में किया जा सकता है ।

6.3 देश (एस) पक्ष के स्तर

(एस) पक्ष का प्रयोग निम्नलिखित चार स्तरों में हुआ है : (1) राजनीतिक विभागों के लिये । (2) जनसंख्यानुसार विभागों 'के लिये । (3) दिशानुसार विभागों के लिये । (4) प्राकृतिक विभागों के लिये ।

इसके लिये भौगोलिक एकल सारणी दी गई है । इस सारणी में (एस 2) पक्ष के लिये दी गई एकल संख्याओं को निरस्त कर इनके स्थान पर परिशिष्ट पृष्ठ 24 पर संशोधित एकल संख्यायें दी गई हैं । (एस2) पक्ष का प्रयोग प्राकृतिक विशेषताओं

(Physical features) वाले भौगोलिक क्षेत्रों को लिये किया जाता है । इसके अन्तर्गत पर्वत, नदी, डेल्टा, घाटों इत्यादि का उल्लेख है । (एस) पक्ष के प्रत्येक स्तर के लिये संयोजक चिन्ह

डोट (.) का प्रयोग किया जाता है । उदाहरणार्थ : Physical geography of mountains of Madhya Pradesh U2.4455. g[7]

6.4 काल (टी) पक्ष के स्तर

(टी) पक्ष का दो स्तरों में प्रयोग हुआ है । प्रथम स्तर शताब्दी, दशाब्दी, वर्ष, माह, दिन का बोध कराने वाली समय की इकाईयों के लिये तथा दुसरा स्तर पृथ्वी की गीत से होने वाले परिवर्तन जैसे मौसम इत्यादि के लिये प्रयुक्त होता है । प्रथम स्तर (टी) तथा (टी 2) के लिये संयोजक चिन्ह उल्टा उद्धहरण चिन्ह का प्रयोग किया जाता है । उदाहरणार्थ :
Rainful in Rajasthan during the summer of 1988 'U2855.4437 'N'88 'n3
(एस) व (टी) पक्षों के आवर्तन नहीं होते ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

अ. ऊर्जा पक्ष के :

1. आवर्तन नहीं होते हैं ।
2. स्तर होते हैं ।

बी. व्यक्तित्व पक्ष का

1. प्रथम आवर्तन (पी) कहलाता है ।
2. दूसरा आवर्तन एवं दूसरा स्तर (2पी 2) कहलाता है ।

सी. पदार्थ पक्ष के आवर्तन :

1. (इ) पक्ष में बाद ही संभव है ।
2. (2इ) पक्ष के बाद प्रयोग होने पर (3एम) कहलाता है ।
3. (इ) पक्ष के बाद प्रयोग होने पर (2एम) कहलाता है ।

डी. देश व काल पक्षों के :

1. आवर्तन नहीं होते ।
2. स्तर होते हैं ।

इ. पदार्थ पक्ष के स्तरों का प्रयोग.

1. द्विबिन्दु वर्गीकरण में हुआ है ।
2. द्विबिन्दु वर्गीकरण में नहीं हुआ है ।

7. सारांश :

वर्गीकरण के क्षेत्र में डॉ. रंगनाथन की पाँच मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा ने नई प्रत्याक्षा को जन्म दिया है । फिर भी पाश्चात्य देशों में इसे पूर्ण मान्यता नहीं मिली । CRG (Classification Research Group) ने डॉ. रंगनाथन के पक्ष विश्लेषण को तो मान्यता दे दी किन्तु उनकी मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा को अभी तक भी अस्वीकार किया हुआ है । रोबर्ट (Norman Roberts) ने कहा है कि पाँच मूलभूत श्रेणियों की आभिधारणा को बिना किसी प्रमाण के मान लिया गया है । विकरी(Vickery) का भी यही मत है कि रंगनाथन इस तथ्य की सही व्याख्या करने में असफल रहे

हैं कि केवल पांच मूलभूत श्रेणियां ही क्यों? दूसरे प्रकार की श्रेणियों का भी तो चयन किया जा सकता है ।

विकरी (Vickery) का भी मत है कि विषय के क्षेत्र विस्तार व आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुये श्रेणियों की संख्या निर्धारित की जानी चाहिये । दास गुप्ता (Das Gupta) ने इस सारे विवाद को यह कहकर दबा दिया है कि रंगनाथन द्वारा पाँच मूलभूत श्रेणियों की अवधारणा की शुरूआत अच्छी है किन्तु उसे यहां तक ही सीमित रखना उचित नहीं है । अर्थात् इस दिशा में अभी बहुत कुछ करना शेष हैं । उनका कहना है कि आर्वतन एवं स्तर की अभिधारणा से ज्ञान जगत के विस्तार को बहुत कुछ सीमा तक नियंत्रित करने में सहायता मिली है । वास्तविक स्थिति यह है कि अभी तक इस क्षेत्र में रंगनाथन के सिद्धान्तों का कोई और अच्छा विकल्प नहीं है । रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित तथ्य आज भी सत्य हैं ।

अन्त में कहा जा सकता है कि वर्गीकरण के क्षेत्र में जितने भी तरीके वैज्ञानिकों ने सुझाये है उनमें डॉ. रंगनाथन द्वारा निर्मित वर्गीकरण पद्धति सबसे अधिक सहायक सिद्ध हुई है । गहन वर्गीकरण की अनेक ' अनुसूचियों का निर्माण कार्य इसके द्वारा किया गया है । निश्चय ही रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित अभिधारणाओं के परिणाम संतोषजनक निकले हैं । अत : यह कहा जा सकता है कि रंगनाथन के सिद्धान्तों ने वर्गीकरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया है अत : पाश्चात्य विद्वानों द्वारा की गई आलोचना ठीक नहीं है ।

द्विबिन्दु वर्गीकरण के सप्तम संस्करण में जिन नवीन विचार धाराओं को सम्मिलित किया गया है वे निश्चय ही इस वर्गीकरण को दृढ आधार प्रदान करती हैं और इससे वर्गीकरण के क्षेत्र में नई आशाऐं जाग्रत हुई है ।

8. अभ्यासार्थ प्रश्न

(क) डा. रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित पाँच मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा पर एक लेख लिखिये।

(ख) पाँच मूलभूत श्रेणियों की अभिधारणा ने वर्गीकरण के क्षेत्र में नई आशाऐं जगाई हैं विवेचना कीजिये ।

(ग) आवर्तन एवं स्तर से आप क्या समझते हैं |

(घ) व्यक्तित्व पक्ष के आवर्तन एवं स्तरों को सोदाहरण समझाइए ।

(ङ) ऊर्जा पक्ष के आवर्तनों से संबंधित अभिधारणों का प्रायोगिक वर्गीकरण पर क्या प्रभाव पड़ा है, सोदाहरण समझाइए

9. संदर्भ ग्रंथ

1. Mills J.Modern Outline of Library Classification. Bombay, Asia Publishing House. 1962.
2. Parkhi R.S. Library Classification, the Evolution of a Dynamic Theory, Delhi, vikas.1972.
3. Ranganathan S.R Elements of Library Classification Ed.3 Bombay, Asia 1962.

4. Ranganathan S.R. Colona Classification. Ed.6. (Reprint) Bombay, Asia, 1963.
5. Ranganathan S.R Prolegomena to Library Classification. Ed 3 Bombay Asia, 1967.
6. Sharma, C.L. Relevance of Ranganathan's Fundamental Categories; A Critical Appraisal (in Library and Information Science Ed, by P.K. Gupta and Usha Pawan) Jaipur , RBSA 1986.P. 208-18
7. दूबे, राजेन्द्र कुमार: द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति एवं वर्गकार, जोधपुर, किरण, 1988, पृ. 29 -77
8. भार्गव जी .डी : ग्रंथालय वर्गीकरण, भोपाल, म. प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, 1985.
9. माड़ी वाले, दब: द्विबिन्दु वर्गीकरण, दिल्ली, आत्माराम, 1965.

NOTES

कोर्स- IA पुस्तकालय वर्गीकरण-सिद्धान्त

इकाई- 6

"द्विबिन्दु एवं दशमलव वर्गीकरण पद्धतियों में प्रयुक्त विधियाँ:''

(Devices used in Colon and Decimal Classification)

उद्देश्य:

— वर्गीकरण पद्धतियों में विभिन्न विधियों के प्रयोग की आवश्यकताओं व उनके उद्देश्य के बारे में जानना ।

— विभिन्न विधियों के प्रयोग से वर्गीकरण को होने वाले लाभ से परिचित होना।

— विभिन्न विधियों के प्रयोग की जानकारी देना ।

संरचना / विषयवस्तु

1. विषय प्रवेश
2. विधियों के प्रयोग का उद्देश्य
3. विधियों के प्रयोग से लाभ
4. द्विबिन्दु एवं दशमलव वर्गीकरण पद्धतियों में प्रयुक्त विधियाँ
   - 4.1. विषय विधि
   - 4.2 कालक्रम विधि
   - 4.3 भौगोलिक विधि
   - 4.4 वर्णक्रम विधि
5. अभ्यास के लिये प्रश्न
6. विस्तृत अध्ययन के लिये ग्रंथ सूची

1. विषय प्रवेश

आधुनिक युग में ज्ञान का विकास बहुत तीव्र गति से हो रहा है । इसका विकास व विस्तार अनेक दिशाओं मे हो रहा है । इसके फलस्वरूप नये-नये विचार एवं विषय उत्पन्न हो रहे हैं । वर्गीकरण करते समय इन नवीन विषयों व विचारों को एक निर्धारित वर्तमान कम में सही स्थान देना आवश्यक हो जाता है । इनको किसी निर्धारित क्रम में उपयुक्त स्थान देने के लिये किसी भी पक्ष या वर्ग पंक्तियों में नवीन एकलों का निर्माण किया जाता है अथवा विद्यमान एकलों के अर्थ को अधिक गहन बनाया जाता है । अर्थात् नवीन एकल संख्याओं का निर्माण किया जाता है और उन्हें वर्गांकों के वर्तमान कम को अस्त -व्यस्त किये बिना उपयुक्त स्थानों पर रखा जाता है । इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये ज्ञान वर्गीकरण के अंकन में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जो पंक्ति (Array) एवं श्रृंखला (chain) में असीमित ग्राहयता (Hospitality) प्रदान कर सके । एक प्रामाणिक वर्गीकरण पद्धति में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये कुछ युक्तियों (Devices) का प्रावधान किया जाता है और इनकी सहायता से पक्षों या वर्ग पंक्तियों में नये एकलों की रचना की जाती है । द्विबिन्दु एवं दशमलव वर्गीकरण पद्धतियों में भी अनेक विधियों का प्रावधान किया गया है ।

पूर्वोक्त दोनों वर्गीकरण पद्धतियों में द्विबिन्दु पद्धति एक विश्लेषण संश्लेष मूलक वर्गीकरण पद्धति (Analytico Synthetic Scheme) है । जिसमें मिश्रित अंकन का प्रयोग किया गया है और मिश्रित अंकन के गुणों के आधार पर इस पद्धति में नये विचारों को सरलता से उपयुक्त स्थान दिया जा सकता है । इस प्रकार इस पद्धति के अंकनों में ग्राहयता (Hospitality) एवं सुनम्यता (Flexibility) विद्यमान हैं ।

इसके विपरीत दशमलव वर्गीकरण पद्धति एक परिगणनात्मक (Enumerative) पद्धति है, जिनमें -शुद्ध अंकन का प्रयोग गया है । इस कारण इस पद्धति के अंकन में मिश्रित अंकन जैसी ग्राहयता नहीं है तथा इसका विस्तार व विकास परिसीमित हो गया है । परन्तु इस पद्धति के 19 वें संस्करण के प्रथम भाग में दी गई सात सारणियों तथा अन्य योजक निर्देशों की सहायता से इसके अंकन में भी कुछ सुनम्यता व ग्राहयता प्रदान कर दी गई है ।

2. विधियों के प्रयोग का उद्देश्य :

विभिन्न विधियों का प्रयोग किसी नए वर्गांक के निर्माण अथवा वर्तमान वर्गांक के अर्थ को गहन करने के लिये किया जाता है ।

इनका प्रयोग वर्गीकरण के अंकन को ग्राहयता एवं विस्तारशीलता प्रदान करने के लिये किया जाता है। इनका प्रयोग नवीन विषयों एवं नवीन विचारों को सहसंबंधित विषयों एवं विचारों के साथ सहायक अनुक्रम में व्यवस्थित करने के लिये किया जाता है ।

3. विधियों के प्रयोग से लाभ :

विभिन्न विधियों का प्रयोग करने से निम्नलिखित लाभ है:

1. विधियो के प्रयोग से परिगणन (Enumeration) नहीं होता और अनुसूची को छोटा किया जा सकता है । इससे मितव्ययिता के नियम (Law of Parsimony) की पूर्ति होती है ।
2. ये विधियाँ वर्गाकार को स्वायत्तता प्रदान करती हैं और उसे नये विषय या विचार के लिये नवीन एकल संख्या बनाने में सहायता करती हैं । इस कारण वर्गकार को वर्गीकरण पद्धति बनाने वाले से किसी भी प्रकार के आदेशों की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती हैं ।
3. इनके द्वारा कुछ सिद्धान्तों, नियमों व सूत्रों की, जैसे सुसंगत क्रम (Consistent Sequence) सहायक अनुक्रम (Helpful sequence) अनुसूचित स्मरणशीलता (Scheduled Mnemonics) की पूर्ति होती है ।
4. इन विधियों द्वारा विशेषरूप से विश्लेषण संश्लेषमूलक पद्धति में समान एकल विचार (Isolate Idea) और एकल संख्या (Isolate Number) प्राप्त होती है । द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति इसका मुख्य उदाहरण है ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

1. वर्गीकरण करते समय नवीन विषयों / विचारों को वर्तमान कम में उचित स्थान देना आवश्यक है ।
2. वर्गीकरण करते समय नवीन विषयों / विचारों को किसी भी क्रम में रखा जा सकता है ।
3. मिश्रित अंकन के द्वारा नवीन विषयों को वर्तमान कम में उपयुक्त स्थान दिया जा सकता है ।

4. मिश्रित अंकन के द्‌वारा नवीन विषयों को वर्तमान कम में उपयुक्त स्थान देना कठिन है ।
5. विधियों का प्रयोग अंकन में विस्तारशीलता प्रदान करने के लिये किया जाता है ।
6. अंकन में विस्तारशीलता लाने के लिये विधियों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है ।
7. विधियों के प्रयोग से अनुसूचियों को छोटा बनाया जा सकता है ।
8. विधियों के प्रयोग से अनुसूचियों का अधिक विस्तार होता है ।

4. द्‌विबिन्दु एवं दशमलव वर्गीकरण पद्धतियों में प्रयुक्त विधियाँ :

यद्‌यपि डॉ. रंगनाथन ने अनेक विधियों का उल्लेख किया है । किन्तु प्रस्तुत पाठ्‌यक्रम के अनुसार इस पाठ में केवल चार विधियो का ही वर्णन किया जा रहा है । जैसे;

1. विषय विधि (Subject Device), (2) काल कम (Chronological Device),
2. भौगोलिक विधि (Geographical Device) एवं (4) वर्णक्रम विधि, (Alphabetical Device).

4.1 विषय विधि (Subject Device)

विषय विधि वर्गांक बनाने की ऐसी विधि है जिसके अनुसार किसी भी मुख्य वर्ग के किसी भी पक्ष या पंक्ति में किसी भी एकल संख्या के साथ की वर्ग संख्या को जोड़ा जा सकता है। इस विधि क अनुसार विषय विषेशताओं के आधार पर किसी भी पक्ष या पंक्ति में एकलों की रचना की जाती है । अर्थात एकलों या उप एकलों के निर्माण, विभाजन अथवा व्यक्ति की करण के लिए किसी अन्य विषय की उपयुक्त वर्ग संख्या का प्रयोग किया जाता है, द्‌विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में जहां - जहां इस विधि का प्रयोग होता है उसकी जानकारी उसकी अनुसूचियों Schedules व नियमों में दे दी गई है । इस विधि से जो एकल संख्या बनती है उसे विषय विधि संख्या (S.D.N) कहते हैं । जो वर्ग संख्या दूसरे विषय से लाकर जोड़ी जाती है उसे छोटे कोष्ठक में रखा जाता है | द्‌विबिन्दु वर्गीकरण में प्राय : सभी मुख्य वर्गों में इस विधि का प्रयोग किया जाता है । इस विधि के कुछ उदाहरण तो अनुसूचियों में दिये गये हैं, जैसे R4 Ethics में और V इतिहास के (E) पक्षFunctions (कार्य) के अन्तर्गत । इसके अतिरिक्त मुख्य वर्ग M Useful Arts के भी कई उप वर्गों में इसका सह धर्मी प्रयोग किया गया है । इस प्रयोग में गोल कोष्ठक का उपयोग नहीं किया गया है । जैसे;

ND521 - Boat - rowing यहां D521 का अर्थ नाव (Boat) है ।

इसके अतिरिक्त, अन्य सभी स्थानों पर विषय विधि से लायी गयी वर्ग संख्या को कोष्ठकों में ही रखा जाता है, जैसे :

VI (P111)	अंग्रेजी बोलने वाले देशों का इतिहास (यहां) P111 मुख्य वर्ग P से English Language की वर्ग संख्या को लिया गया है ।
V: 3(T)	State and Education यहां T मुख्य वर्ग(T) Education से लिया गया है
X8(F182)	लोहा उद्‌योग (यहां) F182 मुख्य वर्ग (F) से लोहे की वर्ग संख्या को लिया गया है	

T: 3(B) Teaching of Mathematics

यहाँ (B)Mathematics को लाकर जोड़ा गया है ।

विशेष रूप से आवश्यकता पड़ने पर विषय विधि का प्रयोग (E) पक्ष की अनुसूची का विस्तार करने के लिये भी किया जाता है । अर्थात् जब हम किसी विषय की अथवा उसके किसी पक्ष की समस्याओं को किसी दूसरे विषय का प्रयोग करके अध्ययन करते है तो ऐसी स्थिति में विषय विधि का ऊर्जा के रूप में उपयोग किया जाता है :

E: (C) Chemical Physics

(यहाँ (E) Chemistry और (C) Physics है)

F:(G91) Industrial Microbiology है|

(यहाँ Industry के लिए (F) Technology मुख्य वर्ग लिया गया है तथा (G91) Microbiology है)

H:(8) Geochemistry (यहाँ (H) Geology व(E) Chemistry है)

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में भी विषय विधि का प्रयोग किया गया है । यह दो प्रकार से किया गया है । (1) किसी पूर्ण वर्ग संख्या को किसी निर्दिष्ट आधार वर्ग संख्या के साथ जोड़ दिया गया है और (2) किसी वर्ग संख्या के कुछ भाग को किसी निर्दिष्ट आधार वर्ग संख्या (Base Number) के साथ जोड़ा गया है ।

ऐसा करने के लिये दशमलव वर्गीकरण की अनेक वर्ग संख्याओं के नीचे आवश्यक " योजक निर्देश " दिये गये है । इन " योजक निर्देशों " के अनुसार 001 से 999 तक की पूर्ण वर्ग संख्यायें निर्दिष्ट आधार वर्ग संख्या के साथ जोड़ दी जाती है, जैसे :

उदाहरण :1 025. 4635 = Classification of Public Administration यहाँ पर 0.25.46 Classification of Specific Disciplines and Subjects (विशिष्ट विषयों का) है और 350 = Public Adminstration है ।

जिनका शून्य दशमलव भिन्न के नियम के अनुसार हटा दिया गया है।

उदाहरण :2 016. 382 = Bibliographies on Foreign Trade

विदेश व्यापार ग्रन्थ सूची

1 यहाँ पर 016 = ग्रंथ सूची है और 382 =Foreign Trade (विदेश व्यापार)

(2) इसी प्रकार निर्दिष्ट आधार वर्ग संख्या के साथ योजक निर्देशों के अनुसार किसी वर्ग संख्या का कुछ भाग जोड़ दिया जाता है, जैसे:

उदाहरण :1 636.2142 = Milk of Cattle 1 यहाँ 636.21 निर्दिष्ट आधार वर्ग संख्या है । योजक निर्देश के अनुसार 636. 0881 से 636. 0889 तक के क्रमश : दुग्ध (Milk) की वर्ग संख्या 636. 8842 से सामान्य संख्या 636. 088 हटाकर केवल 42 जोड़ दिया गया है।

उदाहरण :2 331. 421 Wages of Woman यहाँ 331.4 निर्दिष्ट आधार वर्ग संख्या के साथ " योजक निर्देश " के अनुसार 331. 1 से 331. 2 तक के कम की वर्ग संख्या 33121 से सामान्य वर्ग संख्या 331 हटाकर केवल 21 जोड़ दिया गया है ।

4.2 कालक्रम विधि (Chronological Device)

कालक्रम विधि द्वारा किसी विषय के किसी भी पक्ष या पंक्ति में नवीन एकलों की रचना की जाती है या पहले से मौजूद एकलों के अर्थ को तीक्ष्ण (गहन) बनाया जाता है । इस युक्ति में कालक्रमिक विशेषताओं के आधार पर, किसी वस्तु या सत्व के जन्म, उद्भव व आरम्भ के काल या उसके प्रथम आविष्कार, उसकी प्रथम खोज व उसके अनुसंधान के वर्ष से सम्बन्धित समय की संख्या काम में लाई जाती है । द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति मैं ये एकल संख्या ईसवी केलेण्डर के अनुसार शताब्दी दशक, वर्ष, मास व तारीख के अनुरूप कालक्रमिक एकल संख्या प्रयोग में लाई जाती है, और इस पद्धति में कालक्रम एकलों के लिए एक कालक्रम सारणी अलग से दी गई है ।

द्विबिन्द वर्गीकरण पद्धति में जहाँ - जहाँ कालक्रम विधि का प्रयोग किया गया है उन सब का उल्लेख अनुसूचियों तथा नियमों में किया गया है । इसके अतिरिक्त जहाँ - जहाँ भी आवश्यक हो यह युक्ति काम में लाई जा सकती है । द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के छटे संस्करण मे कालक्रम विधि का प्रयोग

1. साहित्य की अनुसूची में लेखकों की वर्ग संख्या निर्धारित करने 'के लिये
2. भाषा सारणी में कृत्रिम भाषाओं को एकल संख्या बनाने के लिये
3. धर्म की अनुसूची में धर्मो की वर्ग संख्या बनाने के लिये किया जाता है
4. कुछ मुख्य वर्गो में, जैसे (Mathematics, Physics, Medicine, Psychology Education तथा Economics में इन विषयों की पद्धतियों (Systems) की वर्ग संख्याओं बनाने के लिये ।
5. Mathematics में Equations , Functions Series आदि के लिये
6. Fine Arts (ललित कलायें) में स्टाइल (Styles) के लिये
7. तथा सामान्य एकलों के उपसूत्रों में, इस विधि का प्रयोग किया गया है ।

कालक्रम एकल संख्या के प्रथम या प्रथम दो या प्रथम तीन अंकों को आवश्यकतानुसार काम में लाया जाता है और इन्हें नियन्त्रक वर्ग संख्या (Host Class Number) के साथ बिना किसी योजक चिन्ह के जोड़ दिया जाता है ।

इस विधि को निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है।

0111, 2J64	William Shakespare (1564 जन्म सन् यहाँ -J64 संख्या सन् 1564 को व्यक्त करती है(
P99M87	Esperanto Language (इसका आविष्कार वर्ष 1887 में किया गया । यहाँ 87 संख्या सन् 1887 को व्यक्त करती है ।(
Q29M8	Arya Samaj (इस धर्म का आरम्भ उन्नीसवीं शताब्दी के नवें दशक में हु आ।

	यहाँ M8 उन्नसवीं शताब्दी के नवें दशक को व्यक्त करते है ।(
B6M3	Elliptic Geometry (ज्यामिति की इस पद्धति का प्रतिपादन उन्नीसवीं शताब्दी में चौथे दशक में हुआ है(
CN	Relativity (इस पद्धति का आविष्कार बीसवीं शताब्दी में हुआ। यहाँ !N बीसवीं शताब्दी(
LL	Homoeopathy (18 वीं शताब्दी में प्रवर्तित)
SM	Experimental Psychology (19 वीं शताब्दी में प्रविर्तित)
SNI	Behaviouristic Psychology (सन् 1913 में प्रवर्तित)
SN14	Individualistic Psychology (सन् 1914 में प्रवर्तित)
TN1	Montessori School :(20 वीं शताब्दी के दूसरे दशक में प्रवर्तित)
XM	Montessori School(19 वीं शताब्दी में प्रवर्तित)
XM2	Socialism (19 वीं -शताब्दी के तीसरे दशक में प्रवर्तित)
B36M	Fourier’s Series(19 वीं शताब्दी में प्रवर्तित)
NA44, C	Buddhist Architecture (ईसा पूर्व 999 से 1 तक की अवधि में सूत्रपात)
N56, M	Statesman’s Year Book (19 वीं शताब्दी में प्रारंभ)

वर्गीकरण की विशिष्ट पद्धतियों की वर्ग संख्या भी कालक्रम विधि द्‌वारा निर्धारित की जा सकती हैं जैसे;

2:51M	Dewey Decimal Classification
2:51M9	Expansive Classification
2:51M96	Universal Decimal Classification
2:51N3	Colon Classification
2:51N34	Bibliographic Classification

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि :

(1) यदि कोई घटना, आविष्कार पद्धति या: सत्ता पूरी शताब्दी में अपने प्रकार की एक ही हो तो वहाँ काल पक्ष के केवल एक अंक (शताब्दी अंक) का प्रयोग ही उसे व्यक्त करने के लिये पर्याप्त होता है ;

(2) यदि किसी शताब्दी में एक ही प्रकार की घटना, पद्धति, संस्था, का प्रादुर्भाव एक से अधिक संख्या में हो तो, उन सभी की अभिव्यक्ति के लिये काल पक्ष के प्रथम दो अंकों - शताब्दी एवं दशक का प्रयोग किया जाता है _

(3) यदि शताब्दी के किसी एक दशक में एक ही प्रकार की घटना, पद्धति, संस्था आदि का प्रादुर्भाव एक से अधिक संख्या में हो तो उनको व्यक्त करने के लिये काल पक्ष के तीन अंकों - शताब्दी, दशक वर्ष का प्रयोग किया जाता है ।

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में इस विधि के प्रयोग की सुविधा प्रदान नहीं की गई है ।

4.3 भौगोलिक विधि (Geographical Device)

किसी भी पक्ष या वर्ग पंक्ति में एकल संख्याओं का निर्माण भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर किया जा सकता है । इसे भौगोलिक विधि कहते है । इस विधि के अनुसार उपयुक्त महाद्वीप (Continent) देश (Country), राज्य(State) ।मण्डल (District) या शहर (City) आदि के अनुकूल प्रतीक संख्या का प्रयोग किया जाता है । इस विधि का प्रयोग दोनों वर्गीकरण पद्धतियों में किया गया है । द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में इसका प्रयोग बड़े वैज्ञानिक ढंग से किया गया है । डॉ. रंगनाथन द्वारा लिखित द्विबिन्दु वर्गीकरण संस्करण 6 में भौगोलिक भागों की अनुसूची में अलग से पृष्ठ संख्या 2. 8 से 2. 17 तक दी गई है ।

इस विधि के नियमों के अनुसार या तो भौगोलिक एकल संख्या का प्रयोग स्वतन्त्र रूप से किया जाता है या उसे किसी नियन्त्रक एकल संख्या (Host Isolate Number) के साथ बिना किसी योजक चिन्ह लगाए सीधा जोड़ दिया जाता है । यह भौगोलिक एकल उस भौगोलिक क्षेत्र को सूचित करता है जहाँ सम्बन्धित वस्तु, विषय या तत्व या सत्ता आदि का जन्म हुआ है या जहाँ उसका प्रचलन या व्यापकता है । इस विधि का प्रयोग (1) इतिहास, विधि -शास्त्र व समाज शास्त्र में व्यक्तित्व, (2) ललित कला में स्टाइल, (3) धर्म शास्त्र में कुछ धर्मों व सम्प्रदायों, (4) भाषा शास्त्र में क्षेत्रीय उप - भाषाओं (Dialects) व बोलियों, (5) मुख्य वर्ग दर्शनशास्त्र के अन्तर्गत कुछ दार्शनिक पद्धतियों को व्यक्त करने के लिये कुछ पूर्ववर्ती सामान्य एकलों के (P) पक्ष को भी भौगोलिक विधि से व्यक्त किया जाता है । इस विधि के प्रयोग को निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है.

1. V44 = भारत का इतिहास (यहाँ एकल संख्या 44 का प्रयोग इतिहास की अनुसूची के निर्देश के अनुसार (P) पक्ष के किया गया है और यह भारत के विभिन्न क्षेत्रो के लोगों की द्योतक है)
2. Z56 = British Law (यहाँ एकल संख्या 56 ग्रेट ब्रिटेन की द्योतक है, और यह Z (कानून) के (P) पक्ष को व्यक्त करती है)
3. Y76 = African Social Group (यहाँ 6 अफ्रीका का द्योतक है, इसे नियन्त्रक एकल संख्या Y7 के साथ
    i. जोड़ा गया है)
4. NA 44, C = Buddhist Architecture (यहाँ 44 = भारत अपनी वास्तुकला के स्टाइल का द्योतक है)
5. Q8451 = Zoroastrianism (यहाँ 5 Persia हैं, क्योंकि इस धर्म का जन्म Persia(ईरान) में हुआ)

6. P467 =Sumerian Language(यहाँ 467=Iraq है)
7. Am 44 = भारत में प्रकाशित विज्ञान - पत्रिका (यहाँ 44 = भारत है, जो m सामान्य एकल के (P) पक्ष को व्यक्त करता है)

दशमलव वर्गीकरण प्रणाली में भी भौगोलिक विधि का प्रयोग किया गया है और अनके स्थानों पर " क्षेत्र -योजक "(add Area) निर्देश दिये गये है । जैसे :

1. 079.52 = जापान में पत्रकारिता (यहाँ निर्देश है कि " आधार वर्ग संख्या 079 के साथ द्वितीय सारणी से 1 से 9 तक की एकल संख्या लेकर जोड़ दी जाये । इस प्रकार इस वर्ग संख्या में 52 जापान है ।
2. इसी प्रकार मुख्य वर्ग 900 के अन्तर्गत 940 तक के उप विभाग भी भौगोलिक विधि द्वारा ही प्रयोग में लाये गये हैं । जैसे 954 = भारत का इतिहास । (यहाँ 54 = भारत)
3. 336. 01254 = National Public Finance in India यहाँ आधार संख्या 336.012 के साथ निर्देश के अनुसार 54 (भारत) जोड़ दिया गया है ।
4. 341.026641 = Treaties of United Kingdom यहाँ भी निर्देश के अनुसार आधार संख्या ' 341. 0266 के

साथ सारणी 2 से 3 से 9 तक के क्रम में से क्षेत्र (41 United Kingdom) क्षेत्र संख्या जोड़ दी गई है ।

इस प्रकार दशमलव वर्गीकरण प्रणाली में भी भौगोलिक विधि का कहीं - कहीं उपयोग किया गया है ।

4.4 वर्णक्रम विधि. Alphabetical Device)

सामान्यत : यह विधि द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में वस्तुओं या सत्ताओं या संस्थाओं के वर्गांक बनाने के लिए ही प्रयोग में लाई जाती है । इस विधि का प्रयोग कम सें कम किया जाता है, अर्थात् बहु त अधिक आवश्यकता पड़ने पर ही इसका प्रयोग किया जाता है जबकि किमी अन्य विधि से वर्गांक बनाना कठिन हो जाता है । यह भी कह सकते है कि जब अन्य विशेषताओं के आधार पर किन्हीं वस्तुओं या सत्यों को सूचित किया करना कठिन हो जाये तो वर्णक्रम युक्ति का प्रयोग जाता है । इस विधि में किसी भी वस्तु या सत्ता के नाम के प्रथम या प्रथम दो या प्रथम तीन अक्षरों के नियन्त्रक वर्ग संख्या (Host Class Number) के साथ जोड़ दिया जाता है । यदि दो या दो से अधिक वस्तुओं के नामों का पहला अक्षर समान हो तो उनमें से एक वस्तु को उसके नाम के प्रथम अक्षर द्वारा तथा अन्य वस्तुओं को क्रमश : उनके नामों के प्रथम दो या प्रथम तीन अक्षरों द्वार व्यक्त किया जाता है । इन अक्षरों का भी अपने - अपने स्थान पर क्रमिक मूल्य होता है । इसके प्रयोग के लिये कोई पहले से तैयार की हुई अनुसूची की आवश्यकता नहीं है । इसका प्रयोग केवल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित नामों के लिये ही किया जाता है । इस विधि का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञाओं (Proper names) तकनीकी नाम के ब्रान्ड, व्यापारिक संस्थान आदि को इंगित करने के लिये किया जाना है

। साइकिलों या मोटरकारों के विभिन्न प्रकारों (Makes) कृषि की फसल के विशिष्ट प्रकारों के लिये इस विधि का प्रयोग करना उचित माना गया है । उदाहरणार्थ :

1. D5125 H = Hercules Cycle
   (यहाँ 5125 = साइकिल व H = Hercules है)
2. D5125 HE = Hero Cycle
   (यहाँ 5125 = साइकिल व HE = Hero है
3. J381 B = Basmati Rice (यहाँ 381 = चावल तथा B = Basmati है)
4. J381 P = Parmal Rice
5. J382 K = Kalyan Wheat

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में भी इस विधि का प्रयोग किया गया है । वस्तुओं या सत्वों को व्यक्तित्व प्रदान करने के लिये उनके नामों के प्रथम अक्षर प्रयोग में लाये जाते है । इसका प्रयोग वस्तुओं या सत्ताओं को स्थानीय महत्व प्रदान करने के लिये या किसी वर्ग संख्या को छोटी बनाने के लिये भी किया जाता है । उदाहरण, दशमलव वर्गीकरण के 19 वें संस्करण में 071-79 के नीचे दिये गये निर्देश के अनुसार, किसी क्षेत्र में प्रकाशित समाचार पत्रों का वर्गीकरण करने के लिये, आधार संख्या 07 के साथ भौगोलिक क्षेत्र के नाम का प्रथम अक्षर जोड़ा जा सकता है । जैसे 07N = News papers and Journalism in New Zealand (यहाँ N = New Zealand हैं)

324.24 - 29 के अन्तर्गत, 324.2 = Political Parties यहाँ यदि चाहें तो विशिष्ट राजनीतिक दलों को आनुवर्णिक कम में व्यवस्थित किया जा सकता है, जैसे:

324.241L = Labour Party of United Kingdom

(यहाँ वर्ण = L Labour Party के लिये है)

324.254J = Janta Party of India

(यहाँ वर्णJ = Janta Party के लिये है)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न - सही या गलत बताइये

(क) द्विबिन्दु वर्गीकरण में विषय विधि का प्रयोग सभी स्थानों पर गोलाकार कोष्ठक में किया जाता है ।

(ख) द्विबिन्दु वर्गीकरण में विषय विधि के प्रयोग के लिये सभी स्थानों पर गोलाकार कोष्ठक की आवश्यकता नहीं है

(ग) द्विबिन्दु वर्गीकरण में विषय विधि का प्रयोग किसी भी पक्ष में किया जा सकता है ।

(घ) द्विबिन्दु वर्गीकरण में विषय विधि का प्रयोग सभी पक्षों में नहीं किया जाता है ।

(ङ) दशमलव वर्गीकरण में विषय विधि का प्रयोग किसी भी वर्ग संख्या के साथ किया जा सकता है ।

(च) दशमलव वर्गीकरण में विषय विधि का प्रयोग निर्देशों के अनुसार ही किया जाता है ।

(छ) द्विबिन्द वर्गीकरण में कालक्रम विधि का प्रयोग समय पक्ष के योजक चिन्ह के साथ किया जाता है ।

(ज) द्विबिन्दु वर्गीकरण में कालक्रम विधि के प्रयोग के लिये योजक चिन्ह आवश्यक नहीं है ।

(झ) दशमलव वर्गीकरण में कालक्रम विधि का प्रयोग किया जाता है ।

(ञ) द्विबिन्दु वर्गीकरण में भौगोलिक विधि के प्रयोग में स्थान पक्ष के योजक का प्रयोग किया जाता है ।

(ट) द्विबिन्द वर्गीकरण में भौगोलिक विधि के प्रयोग में स्थान पक्ष का योजक चिन्ह नहीं लगाया जाता है ।

(ठ) द्विबिन्दु वर्गीकरण में भौगोलिक विधि के प्रयोग का प्रयोग सभी स्थानों पर किया जा सकता है ।

(ड) द्विबिन्दु वर्गीकरण में भौगोलिक विधि के प्रयोग केवल निर्देशों के अनुसार ही किया जाता हैं |

(ढ) दशमलव वर्गीकरण में भौगोलिक विधि का प्रयोग किसी भी स्थान पर किया जा सकता है ।

(ण) दशमलव वर्गीकरण में भौगोलिक विधि का प्रयोग उन्हीं स्थानों पर किया जाता है जहाँ निर्देश दिये हैं ।

(त) दशमलव वर्गीकरण में भौगोलिक वर्णक्रम विधि का प्रयोग सभी स्थानों पर किया जा सकता है ।

(थ) दशमलव वर्गीकरण में भौगोलिक वर्णक्रम विधि का प्रयोग किसी वर्ग संख्या को छोटा रूप देने के लिये किया जाता है।

(द) दशमलव वर्गीकरण में वर्णक्रम विधि का प्रयोग किसी सत्व या सत्ता को व्यक्त करने के लिये भी किया जाता है ।

5. अभ्यास के लिये प्रश्न

(क) किसी वर्गीकरण पद्धति में विधियों (युक्ति ओ) का प्रावधान करना क्यों आवश्यक है ।

(ख) विषय विधि एवं भौगोलिक विधि का उदाहरण सहित वर्णन कीजिये ।

(ग) वर्णक्रम विधि का वर्णन कीजिये।

(घ) दशमलव वर्गीकरण मे विषय विधि एवं भौगोलिक विधि का वर्णन कीजिये।

6. विस्तृत अध्ययन के लिये ग्रंथ सूची

(क) भार्गव जी.डी ग्रन्थालय वर्गीकरण, भोपाल, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1971

(ख) चम्पावत जी.एस. : द्विबिन्दु वर्गीकरण-प्रायोगिक अध्ययन. जयपुर, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स_ 1986.

(ग) Dewey Mevil: Dewey Decimal Classification. Ed. 19. N.Y ., Forest Press, 1979

(घ) Krishna Kumar: Theory of Classification. Rev. ed. 2. New Delhi, vikas Publishing House, 1981.

(ङ) Parkhi R.S.: Decimal Classification and Colon Classification in Perspective.

(च) Ranganathan S.R.: Colon Classification Ed. 6 (Reprinted). Bombay . Asia. 1963.

NOTES

कोर्स-IA : पुस्तकालय वर्गीकरण-सिद्धान्त

इकाई -7

प्रायोगिक वर्गीकरण के सोपान या चरण

(Steps in Practical Classification)

उद्देश्य

— प्रायोगिक वर्गीकरण में सोपान विधि की आवश्यकता एवं महत्व से परिचित होना

— सोपान विधि के विभिन्न सोपानों के बारे में समझना

— सोपानों के क्रियात्मक पक्ष की जानकारी देना।

संरचना / विषय वस्तु

1. विषय प्रवेश
2. सोपान विधि-आवश्यकता एवं महत्व
3. सोपान विधि का अर्थ एवं सोपानों का वर्णन
4. कुछ उदाहरण
5. अभ्यास के लिए प्रश्न
6. विस्तृत अध्ययन के लिए ग्रन्थ सूची

1. विषय प्रवेश

पुस्तकालय वर्गीकरण से हमारा तात्पर्य प्रलेखों के वर्गीकरण से है । प्रलेखों (Documents) मै वह सभी सामग्री शामिल की जाती है, जो हस्तलिखित हो, या छपी हुई हो या अन्य किसी रूप में हो जैसे पुस्तके, पत्रिकाऐं, माइको फिल्मस, चित्र ग्रामोफोन रिकॉर्ड्स इत्यादि । हमारा उद्देश्य इस सामग्री को सहायक कम में इस प्रकार व्यवस्थित करना है कि वह पाठकों को आवश्यकता पड़ने पर सरलता से कम से कम समय में उपलब्ध करवायी जा सके । पुस्तकालय का उपयोग करने वाले किसी भी प्रलेख (अध्ययन सामग्री) की मांग प्राय: उसके विशिष्ट विषय के अनुसार करते हैं । इसलिए पुस्तकालय में पुस्तकों को विषय के अनुसार वर्गीकरण करके व्यवस्थित किया जाता है । डॉ. रंगनाथन के अनुसार " पुस्तक के विशिष्ट विषय के नाम को अधिमान्य कृत्रिम भाषा में अनुवाद करना ही ग्रन्थालय वर्गीकरण है । " इस परिभाषा में विशिष्ट विषय पर बहुत महत्व दिया गया है, क्योंकि वर्गीकरण विषय का होता है । ऐसा करने से समान विषय की पुस्तके एक जगह एकत्रित हो जाती हैं । विशिष्ट विषय को जो वर्गांक (Class No) दिया जाता है वह कृत्रिम भाषा में होता है और इस वर्गांक के द्वारा ही पुस्तके फलकों पर व्यवस्थित की जाती हैं । पुस्तकों का प्रायोगिक वर्गीकरण किसी एक प्रामाणिक वर्गीकरण पद्धति के अनुसार किया जाना चाहिए ।

2. सोपान विधि - आवश्यकता एवं महत्व

पुस्तकों का वर्गीकरण करना एक अत्यन्त कठिन कार्य है । इसके लिए वर्गकार को वर्गीकरण पद्धति का अच्छा ज्ञान होने के साथ -साथ' कार्य करने का अनुभव भी होना आवश्यक है । वर्गीकरण के कार्य

को सरल बनाने एवं उसमें ' आने वाली समस्याओं को हल करने के लिए मेलविल ड्यूई एवं सेयर्स ने अनेक नियमों का निमार्ण किया है । परन्तु भारत में पुस्तकालय विज्ञान के जन्मदाता तथा द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के प्रणेता डॉ. एस. आर. रंगनाथन ने इस प्रकिया. को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया है, और वर्गीकरण के नियमों, उपनियमों, सत्रों, उप सूत्रों को बनाया है, जिनकी सहायता से सामान्य श्रेणी का वर्गकार भी आसानी से वर्गीकरण कर सकता है । इस कार्य को और अधिक आसान करने के लिए उसने सोपान पद्धति की रचना की है । सोपानों के बारे में: चर्चा करते हु ए डॉ. रंगनाथन ने लिखा है " वर्गीकरण करने वाले नये - नये लोगों को चाहिए कि वे क्रमिक रूप से ही अभ्यास करें । धीरे - धीरे एक - एक चरण बढ़ाकर ही वे अच्छा अभ्यास कर -सकते हैं । सामान्य रूप से ऐसे नौ चरण हैं । वर्गाकार हो हर चरण पर ठहरकर सोचना समझना चाहिए । ऐसा करने से वर्गीकरण के कार्य की गति तो अवश्य धीमी हो जायेगी किन्तु लाभ यह होगा कि वर्गकार वर्गीकरण करते समय अपने मस्तिष्क की कुशलता को परख लेगा । जब सावधानी के साथ बहु त सी चनी हुई पुस्तकों का वर्गीकरण हो चुकेगा तब ये चरण, ये अभि धारणायें ये सूत्र, ये नियम, तथा किसी चरण पर इनमें से किसी को भी ठीक - ठीक चुन लेना इत्यादि प्रक्रियायें एक स्वाभाविक कार्य बन जायेंगी । ज्यों ही इस स्वाभाविक कार्य को पक्की नींव पड़ेगी त्यों ही यह कार्य आसान बन जायेगा । किन्तु किस व्यक्ति को कुशलता प्राप्त करने में कितना समय लगेगा यह कहना मुश्किल है । यह व्यक्ति विशेष पर ही निर्भर करता है । कुछ के लिये कार्य इतना सरल बन सकता है, जितना कि बतख के लिए पानी में तैरना । किन्तु समझदारी इसी में है कि कार्य में बतख की भांति शीघ्रता न की जाय । "

3. सोपान विधि का अर्थ एवं सोपानों का वर्णन

किसी भी विशिष्ट विषय का प्राकृतिक भाषा से प्रतीकों की कृत्रिम भाषा में अनुवाद करना ही वर्गीकरण है । रंगनाथन के अनुसार इस अनुवाद के कार्य में नौ चरण शामिल हैं और ये चरण या सोपान पुस्तकालय वर्गीकरण के सिद्धान्तों पर पूर्णतया आधारित है । इन चरणों के आधर पर विषयों को वर्गीकृत करना अपने आप में एक कला है । यह एक ऐसी कसौटी है, जिससे वर्गांक की जाँच की जा सकती है । इस रीति में भूल की संभावना बिलकुल नहीं रहती है । इस रीति से किसी भी ग्रन्थ का वर्गीकरण करने में निम्नलिखित सोपानों से होकर गुजरना पड़ता है ।

0. अपरिष्कृत शीर्षक (Raw Title)
1. अभिव्यंजक शीर्षक (Expressive Title)
2. मूल शीर्षक या बीज -शीर्षक (Kernel Title)
3. विश्लेषित शीर्षक (Analysed Title)
4. रूपान्तरित शीर्षक (Transformed Title)
5. प्रामाणिक शब्दों में शीर्षक (Title in Standard Terms)
6. प्रतीक संख्या में शीर्षक (Title in Focal Numbers)
7. संश्लेषित प्रतीक संख्या में शीर्षक (Title in Synthesised Focal Numbers)
8. उलटा अनुवाद करके -शीर्षक का मिलान (Verification by Reverse Translation)

उपर्युक्त सोपानों की एक - एक करके व्याख्या दी जा रही है । प्रत्येक सोपान प्रायोगिक वर्गीकरण में महत्वपूर्ण है । किसी विषय का वर्गीकरण करने के लिये इन सोपानों का प्रयोग सूत्रों उपसूत्रों एवं नियमों के आधार पर किया जाता है।

सोपान 0 : अपरिष्कृत शीर्षक (Raw Title) - प्रत्येक ग्रंथ के मुख्य-पृष्ठ पर जो शीर्षक लिख (होता हैं । वह कच्चा शीर्षक कहलाता है क्योंकि कुछ ग्रन्थों के शीर्षकों से पुस्तक की वास्तविक विषय वस्तु की जानकारी नहीं मिलती । इस चरण में इस शीर्षक को ज्यों का त्यों लिख लिया . जाता है ।

सोपान 1 : अभिव्यंजक शीर्षक (Expressive Title) - अधिकतर पुस्तकों में प्राय: मुख्य-पृष्ठ से लिये गये -शीर्षक से ही पुस्तकों के विशिष्ट विषय का पता चल जाता है _ किन्तु कुछ .शीर्षक पुस्तक के विषय की परी जानकारी नहीं देते हैं । अर्थात्, कच्चा -शीर्षक कई बार विशिष्ट विषय का अभिव्यंजक नहीं होता । इस चरण में मुख्य - पृष्ठ से लिये गये शीर्षक की कमियों को पुरा किया जाता है । इस -शीर्षक में आवश्यकता के अनुसार पूरक पद जोड़ दिये जाते हैं । यदि कोई पद या शब्द स्पष्ट न हो तो उसका अर्थ स्पष्ट कर दिया जाता है । विषय के विभिन्न पक्षों को स्पष्ट किया जाता है ।
अर्थात् ऐसे पक्षों को स्पष्ट रूप से खोलकर रखना पड़ता है । इतिहास ।विषय की पुस्तकों के शीर्षकों में प्राय: कालपक्ष (Time) का उल्लेख नदीं होता है । यह प्राय : वर्गकार को ही ढूंढना पड़ता है । कुछ पुस्तकों के शीर्षकों में काल पक्ष का संकेत तो मिल जाता है किन्तु वह स्पष्ट नहीं होता है । जैसे, ब्रिटिश काल में भारत की आर्थिक दशा ।

इसके अतिरिक्त मुख्य - पृष्ठ से लिये गये शीर्षक में पुस्तक के विशिष्ट विषय से संबन्धित बाद के पहलू (Facet) का तो उल्लेख कर दिया जाता है, किन्तु उससे पहले आने वाले आधारभूत पहलू का संकेत नहीं मिलता है । उदाहरणार्थ, ' आयुर्वेद से उपचार ' - इस शीर्षक में रोग पद का उल्लेख नहीं है जोकि विषय का मुख्य पहल है _ क्योंकि वर्गीकरण की दृष्टि से रोग पहलू का उल्लेख किये बिना ' उपचार ' पहलू जो बाद में आने वाला पहलू है, नहीं दिखाया जा सकता है । अत : इसे इस प्रकार पूर्ण बनाया जाता है ' आयुर्वेद से रोगों का उपचार ' । कुछ पद होते हैं । उनकों भी खोलकर रखना पड़ता है । जैसे, ' श्वसन ' पद एक मिश्रित पद है । इसको इस प्रकार खोलकर रखा जा सकता है - ' श्वसन तन्त्र की प्रक्रिया ' । यदि मुख्य - पृष्ठ से लिया गया शीर्षक काल्पनिक (Fanciful) हो तो उसका स्पष्ट शीर्षक भी वर्गकार द्वारा दिया जाता है । इसी चरण में पुस्तक के विशिष्ट विषय से संबंधित मुख्य वर्ग (Main Class) का भी उल्लेख किया जाता है । उदाहरण, पुस्तक के मुख्य पृष्ठ से लिया गया -शीर्षक इस प्रकार है “Famine - in -Rajasthan.” पुस्तक की विषय वस्तु को देखने पर यह पता लगता है कि इस पुस्तक में राजस्थान के ग्रामीण वर्ग को 1987 में दी गई अकाल सहायता का वर्णन है तथा यह विषय समाज शास्त्र मुख्य वर्ग के अन्तर्गत आता है । अत : इस द्वितीय चरण में इस पुस्तक का अभिव्यंजक शीर्षक इस प्रकार लिखा जायेगा:

“Famine Relief to Rural People in Sociology in Rajasthan during 1987”

सोपान 2 : मूल शीर्षक या बीज शीर्षक (kernel Title) - इस चरण में पूर्ण शीर्षक में से ऐसे - शब्दों को हटा दिया जाता है जिनका प्रयोग केवल सहायक शब्दों के रूप में हु आ है तथा जो पुस्तक की विषय वस्तु की जानकारी नहीं देते । ऐसे अनावश्यक - शब्दों को इस चरण में हटा दिया जाता है । जैसे, “Text book of Physics” में Text book of तथा “Introduction of Library Science” में

“Introduction of “पद निरर्थक हैं । अत: इन्हें हटा देना चाहिये । इसी प्रकार a , an , the , to , during , of , on , from , आदि -शब्द निरर्थक हैं । इस प्रकार ये शब्द भी शीर्षक से हटा दिये जाते हैं, क्योंकि ये शब्द पुस्तक के विषय को व्यक्त नहीं करते । ऐसा करने से -शीर्षक में केवल सार शब्द ही रह जाते हैं । इसके बाद शीर्षक पुस्तक के विषय की रूप रेखा की भांति दिखाई देता है । इस चरण (सोपान) में पूर्वोक्त शीर्षक में से अनावश्यक पद या -शब्द हटाकर इस प्रकार लिखा जायेगा। "Famine, Relief, Rural People, Sociology, Rajasthan, 1987 "

सोपान 3 : विश्लेषित शीर्षक (Analysed Title) - इस सोपान या चरण में बचे हु ये बीज शब्दों की पहचान मूलभूत श्रेणियों (Fundamental Categories) की धारणा के आधार पर की जाती है, और इनके चिन्ह संबंधित पदों या शब्दों के साथ गोलाकार कोष्ठकों में लगा दिये जाते हैं । अर्थात् इस चरण में यह तय किया जाता है कि कौन सा सार पद या बीज पद किस पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है तथा इसी के साथ मूलभूत श्रेणियों के आवर्तनों एवं स्तरों का भी पता लगाया जाता है । इस प्रकार, जो -शब्द व्यक्तित्व पक्ष (Personality) को व्यक्त करता है उसके साथ (P), जो -शब्द ऊर्जा पक्ष (Energy) को व्यक्त करता है उसके साथ (E) एवं जो -शब्द देश व काल पक्ष को व्यक्त करते हैं उनके साथ क्रमश : (S) व (T) संकेत चिन्ह जोड़ दिये जाते हैं । मुख्य वर्ग को व्यक्त करने वाले पद के साथ (*BC*) संकेत चिन्ह लगा दिया जाता है । इस प्रकार प्रत्येक बीज पद का विश्लेषण किया जाता है । उपर्युक्त बीज शीर्षक का विश्लेषण इस प्रकार से किया जायेगा - Famine (E) (2P) , Relief (2E) (3P) , Rural People (P) Sociology (BC), Rajasthan (S),1987(T).

सोपान 4 : रूपान्तरित शीर्षक (Transformed Title) - इस चरण में विश्लेषित शीर्षक के सार पदों या बीज पदों को, मुख्य वर्ग को करने वाले पद के बाद, PMEST के कम में रख दिया जाता है । इन पदों से संबंधित पक्षों के निरूपण के चिन्हों को उनके साथ ही लगा रहने दि जाता है । यह कार्य रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित सत्रों, उपसूत्रों व नियमों के आधार पर किया जाता है । पूर्वोक्त विश्लेषित शीर्षक को इस प्रकार से व्यवस्थित किया जायेगा - Sociology (BC),
Rural People (P) , Famine (E) (2P) , Relief (2E) (3P) , Rajasthan (S) , 1987 (T).

सोपान 5 : प्रमाणिक शब्दों में शीर्षक (Title in Standard Terms) - अनक बार पुस्तकों के शीर्षकों में जिन शब्दों या पदों का उपयोग किया जाता है, उनके लिये वर्गीकरण पद्धति में किसी भिन्न पद या शब्द का प्रयोग किया जा सकता है । उदाहरणार्थ, यदि पुस्तक का शीर्षक ' Avian Diseases' हो - Aves का अर्थ है ' चिड़ियाँ तथा वर्गीकरण पद्धति. में चिड़ियों के लिये 'Birds' शब्द का प्रयोग किया गया हो, तो इस चरण में Aves के स्थान पर Birds शब्द लिख दिया जायेगा ।

इसी प्रकार यदि किसी पुस्तक का शीर्षक. 'Pediatrics' हो तथा वर्गीकरण पद्धति में इसके स्थान पर. Child Medicine' पद का प्रयोग किया गया हो तो, हम इस चरण में. 'Pediatrics' शब्द के स्थान पर Child Medicne पद लिख देंगे । उपर्युक्त, रूपान्तरित शीर्षक में Rural People पद है । किन्तु वर्गीकरण पद्धति में केवल Rural शब्द का प्रयोग किया गया है । इसी प्रकार Relief के स्थान पर ' Relief Work' पद का प्रयोग किया गया है । अत: प्रामाणिक शब्दों में इस -शीर्षक को इस प्रकार

लिखा जायेगा - "Sociology (BC) ,Rural (P). Famine (E) (2P), Relief work (2F) (3P), Rajasthan (S), 1987(T)

सोपान 6 : प्रतीक सखा में शीर्षक (Title in Focal Numbers) इस चरण के अन्तर्गत प्रत्येक बीज शब्द या प्रामाणिक शब्द के स्थान पर प्रतीक संख्या रखी जाती है और निरूपण चिन्ह वैसे ही लगे रहने दिये जाते हैं । ये प्रतीक संख्यायें किसी भी स्वीकृत वर्गीकरण पद्धति से ली जाती हैं । इस प्रकार प्राकृतिक भाषा के शब्दों का क्रम सूचक अंकों की कृत्रिम भाषा में अनुवाद किया जाता है । इस चरण में पूर्वोक्त शीर्षक को इस प्रकार लिखा जायेगा - " Y (BC), 31 (P),

4353 (E) (2P) ,67 (2E) (3P) , 4437 (S) , N87(T)"

नोट : ये प्रतीक संख्यायें द्विबिन्दु वर्गीकरण से ली गई हैं ।

सोपान 7 : संश्लेषित प्रतीक संख्या में शीर्षक (Title in Synthesised Focal Numbers) इस चरण में प्रत्येक प्रतीक के साथ लगे हुये संकेत चिन्ह को हटा दिया जाता है । और प्रत्येक पक्ष के प्रतीक चिन्ह के पहले उस पक्ष का संयोजक चिन्ह लगा दिया जाता है । ये संयोजक चिन्ह उस स्वीकृत वर्गीकरण पद्धति से लिये जाते हैं जिसके द्वारा सम्बन्धित शीर्षक का वर्गीकरण किया जाता है । सोपान 6 में दिये गये प्रतीक चिन्हों को इस प्रकार संश्लेषित किया जायेगा - Y3l: 4353: 67. 4437। 'N 87 यहाँ (E) का योजक चिन्ह कोलन (:), (S) का योजक चिन्ह (.) त था (T) का योजक चिन्ह (') लगाया गया है । नियमानुसार (P) का योजक चिन्ह नहीं लगाया गया

सोपान 8 : उलटा अनुवाद करके शीर्षक व मिलान (Verification by reverse Translation) उपर्युक्त विधि से 7 वें चरण में जो वर्गांक प्राप्त होता है उसे परखने के लिये और सा दी वर्गकार को वर्गांक बनाने का सही तरीका मालूम है या नहीं यह जानने के लिये इस चरण का प्रयोग किया जाता है । इसमें वर्ग संख्या के प्रत्येक अंक की व्याख्या (Digit by Digit Interpretation) की जाती है । ऐसा करने के लिये वर्ग संख्या को उसके पहलुओं में विश्लेषित किया जाता है, और प्रत्येक पक्ष का नाम दिया जाता है तथा एक के बाद एक अंक का अनुवाद किया जाता है । यदि वर्ग संख्या का अन्तिम अनुवाद पुस्तक के पूर्ण -शीर्षक के समान है तो यह सिद्ध हो जाता है कि जो वर्गांक बनाया गया है वह सही है ।

संश्लेषित प्रतीक संख्या में शीर्षक - Y31 : 4353:67.44376 ' N87 का अनुवाद निम्न प्रकार से किया जायेगा : -

Y= Sociology (समाज शास्त्र)

Y3 = Sociology by residence (निवास के अनुसार समाज शास्त्र)

Y31 = Rural Sociology (ग्रामीण समाज शास्त्र)

Y31:4 = Pathology of Rural (people)

Y31:43 = Destitution of Rural (people)

Y31:435 = Disaster of Rural (people)

Y31:4353 = Famine for Rural (people)

Y31:4353:6 = Treatment (Remedy Famine affected Rural (people)

Y31:4353:67 = Relief work for famine affected Rural people.

Y31:4353:67.44 = Relief work for famine affected Rural people in India

Y31:3453:67.4437 = Relief work for famine affected Rural people in Rajasthan.

वाई31:3453:67.4437'N87 = Relief work for famine affected Rural people in Rajasthan during 1987.

नोट यह अनुवाद पूर्ण -शीर्षक (अभिव्यंजक शीर्षक); अर्थात्

Famine Relief to Rural people in sociology in Rajasthan during 1987' के बराबर है ।

4. कुछ उदाहरण

0. अपरिष्कृत शीर्षक : Study of Anger in Children. इसमें मुख्य वर्ग Psychology का उल्लेख नहीं है ।

1. अभिव्यंजक शीर्षक : Study of Anger in Childern in Psychology यहाँ विषय के मुख्य वर्ग Psychology को जोड़ कर शीर्षक को पूरा किया गया है ।

2. मूल शीर्षक या बीच शीर्षक : Study Children Psychology 'अभिव्यंजक -शीर्षक में In,of, अनावश्यक हैं । अत: इन्हें मूल शीर्षक में छोड़ दिया गया है, क्योकि इसका विषय से कोई सम्बन्ध नहीं है । केवल बीज शब्द ही लिये गये हैं ।

3. विश्लेषित शीर्षक : Anger (E) (2p) , Children(1P1),Psychology (BC) उपर्युक्त बीज शब्द जिन पहलुओं को व्यक्त करते हैं उनके चिन्ह बीज शब्दों के बाद लगा दिये गये है । जैसे बीज शब्द Anger ऊर्जा तथा व्यक्तित्व पक्ष के द्वितीय आवर्तन को व्यक्त करता है इसके साथ (E) (2P) लगा दिया गया है, और इसी प्रकार बीज शब्द Children के साथ सामने (1P1) व्यक्तित्व पक्ष का चिन्ह लगा दिया गया है । Psychology आधार पहलू है इसलिये इसके बाद (BC) लगा दिया गया है । ऐसा करके शीर्षक को विभिन्न पक्षों मे खोल दिया गया है ।

4. रूपान्तरित शीर्षक : Psychology (BC) , Children (1P1) , Anger (E) (2P) इस चरण में बीज शब्दों को सहायक क्रम के नियमों की मदद से फिर से व्यवस्थित किया गया है, और मल वर्ग सर्वप्रथम लिखा गया है और उसके बाद अन्य बीज शब्द या सार पद PMEST के क्रम में लिख दिये गये हैं ।

5. प्रामाणिक शब्दों में शीर्षक : Psychology (BC) , Child (1P1) Anger (E) (2P) इसमें केवल Children के स्थान पर Child का प्रयोग किया गय है क्योकि वर्गीकरण पद्धति में Child पद का ही प्रयोग किया गया है । शेष शब्द सभी प्रामाणिक हैं ।

6. प्रतीक संख्या में शीर्षक : S (BC) 1 (P1) 524 (E) (2P) इस चरण के अन्तर्गत प्रत्येक प्रामाणिक शब्द के स्थान पर प्रतीक संख्या रख दी गई है और निरूपण चिन्ह वैसे ही लगे रहने दिये गये हैं ।

7. संश्लेषित प्रतीक संख्या में शीर्षक : S1: 524 इस चरण में 6 के प्रतीक चिन्हों के साथ जितने भी चिन्ह थे वे सब हटा दिये गये हैं और उनके स्थान पर प्रत्येक पक्ष के पहले उचित संयोजक चिन्ह लगा दिया गया है ।

8. उलटा अनुवाद करके शीर्षक का मिलान :

S = Psychology आधार पहलू है (मुख्य वर्ग)

S = Child Psychology , Child व्यक्तित्व पहलू है

S1:52 = Feelings of Child , Psychology

Emotions of Child, Psychology

S1:524 = Anger in Child Psychology

उदाहरण 2 :

Step

0. अपरिष्कृत शीर्षक : Organisation of Paper Industry in India
1. अभिव्यंजक शीर्षक : Organisation of Paper Industry India 'In Economics'
2. मूल -शीर्षक या बीज शीर्षक : Organisation Paper Industry India Economics
3. विश्लेषित शीर्षक: Organisation (E) Paper (SD) Industry (P) India (S) Economic (BC).
4. रूपान्तरित -शीर्षक: Economic (BC) Industry (1P) Paper (SD) Organisation (E)India(S)
5. प्रामाणिक शब्दों में शीर्षक: Economic (BC) Industry (P) Paper (SD) Management (E) India (S)
6. प्रतीक संख्या में शीर्षक: X (BC)8 (P) M13 (SD) 8 (E) 44(S)
7. संश्लेषित प्रतीक संख्या में शीर्षक: X8 (M13): 8 .44
8. उल्टा अनुवाद करके शीर्षक का मिलान:

X= Economics

X8 = Industry in Economics

X8(M13 Paper Industry in Economics

X8(M13):8 Management of Paper Industry in Economics

X8(M13):8.4 Management of Paper Industry in Asia

X8(M13):8.44 Management of Paper Industry in India

उदाहरण: 3 Storing of Cow's Milk in India

1. अपरिष्कृत शीर्षक: Storing of Cow's Milk in India
2. अभिव्यंजक शीर्षक: Storing of Cow's Milk in India 'In Animal Husbandry'
3. मूल शीर्षक बीज शीर्षक: Storing Cow Milk India Animal Hubandry
4. विश्लेषित शीर्षक: Storing (2E) (3P) , Cow (P) Milk (E) (2P), India (S) , Animal Husbandry (BC)
5. रूपान्तरित शीर्षक: Animal Husbandry (BC) , Cow (P),Produce (E) (2P), Storing (2E) (3P) , India (S)

6. प्रामाणिक शब्दों में शीर्षक : Animal Husbandry (BC) , Cow (P) Produce (E), Milk (2P) , Storing (2E) (3P) , India (S)
7. प्रतीक संख्या में शीर्षक :KX (BC) ,311(P) ,7(E) ,1 (2P) ,8(2E-3P),44 (S)
8. संश्लेषित प्रतीक संख्या में -शीर्षक : KX 311: 71:8.44
9. उल्टा अनुवाद करके शीर्षक का. मिलान :

KX=	Animal Husbandry
KX3 =	Food Animals in Animal Husbandry
KX31 =	Secretion Animal Husbandry
KX311 =	Cow in Animal Husbandry
KX311:7 =	Produce of Cow in Animal Husbandry
KX311:71 =	Milk of Cow in Animal Husbandry
KX311:71:8 =	Storing of Milk of Cow in Animal Husbandry
KX311:71:8.4 =	Storing of milk of Cow in Asia
KX311:71:8.44 =	Storing of Cow‘s Milk in India

5. अध्ययन के लिये प्रश्न

(क) प्रायोगिक वर्गीकरण में सोपान विधि की आवश्यकताओं एवं महत्व को स्पष्ट कीजिये ।

(ख) प्रायोगिक वर्गीकरण में सोपान विधि के विभिन्न सोपानों का उदाहरण सहित वर्णन कीजिये।

(ग) किसी एक शीर्षक का चयन करके उसका वर्गीकरण सोपान विधि के अनुसार कीजिये।

6. विस्तृत अध्ययन के लिये ग्रन्थ सूची

(क) भार्गव (जी डी) : ग्रन्थालय वर्गीकरण. भोपाल, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. 1971.

(ख) Ranganathan, (SR): Colon Classification. Ed. 6 (Reprinted 1963).

(ग) Ranganathan, (SR): Element of Library Classification. Ed. 3 Bombay, Asia Publishing House, 1962.

NOTES